सोशल मीडिया से जुड़ें

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 233, नई दिल्ली, शुक्रवार 31 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता.

03 फरीदाबाद से अयोध्या तक हरित संदेश की यात्रा – श्री हुकम सिंह जी का प्रेरक संकल्प

06 शोध-अनुसंधान में भी हैं आकर्षक कैरियर के नये विकल्प

08 अमर वृक्ष की छांव में भक्ति का अमृत सरोवर

कर्नाटक के बाद अब मुंबई महाराष्ट्र में भी बाइक टैक्सी पर प्रतिबद्ध की तैयारी मोटर व्हीकल एक्ट (मोटर वाहन नियम) का हो रहा है, उल्लंघन

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली भारत देश कि राजधानी जहां परिवहन विभाग ने सबसे पहले बाइक टैक्सी को मोटर वाहन नियम के उल्लंघन करने में सलग्न होना माना था और उस पर सख्त कार्रवाई भी शुरू की थीं और साथ ही उसे चलवाने वाली कंपनियों पर 1 लाख रुपए का जुर्माना तक घोषित किया था।

फ़िर ऐसा क्या हुआ की उनको चलवाने के लिए पालिसी घोषित कर दी और उन पर कार्यवाही बंद कर दी ?

आज दिल्ली की सड़को पर बाइक टैक्सी के नाम पर जो वाहन खुले आम सड़को पर दौड़ते नज़र आते है उनमें अधिकतर वाहन बिना पंजीकरण के है।

किसी भी व्यवसायिक गतिविधि में चलने वाले वाहन किसी भी नियम के अन्तर्गत पंजीकरण के बिना व्यवसायिक गतिविधि के लिए मान्य नहीं हैं तो दिल्ली में कैसे बिना पंजीकृत वाहनों से व्यवसायिक गतिविधि होने से परिवहन विभाग दिल्ली है चुप वो भी सबसे पहले सबसे सख्त कार्रवाई शुरू करने के बाद, सवाल तो बनता है ?

ऑस्ट्रेलिया को हराकर वर्ल्ड कप 2025 के फ़ाइनल में पहुँची भारतीय महिला टीम! जय हो भारतीय नारी शक्ति!

मेहनत, संघर्ष और नारी शक्ति का स्वर्णिम संगम। भारत की बेटियों ने इतिहास रच दिया! महिला क्रिकेट विश्वकप 2025 के सेमीफाइनल में भारत ने ऑस्ट्रेलिया को हराकर फाइनल में प्रवेश किया। यह जीत केवल खेल की नहीं, बल्कि नारी शक्ति, संघर्ष और आत्मविश्वास की प्रतीक है। स्मृति मंधाना, हरमनप्रीत कौर और दीप्ति शर्मा जैसी खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन ने दिखा दिया कि भारतीय महिलाएँ अब विश्व क्रिकेट की नई पहचान हैं। यह जीत हर उस बेटी के सपने का प्रमाण है जो सीमित साधनों में भी ऊँचा उड़ने का हौसला रखती है। अब कप दूर नहीं — जय हो भारतीय नारी शक्ति!

-डॉ. प्रियंका सौरभ

आज का दिन भारतीय खेल इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जाएगा। महिला क्रिकेट विश्वकप 2025 के सेमीफाइनल में भारत ने विश्वविजेता ऑस्ट्रेलिया को हराकर फाइनल में शानदार प्रवेश किया है। यह केवल एक जीत नहीं, बल्कि उस साहस, समर्पण और संघर्ष की कहानी है जिसने भारत की बेटियों को क्रिकेट की दुनिया में सबसे ऊँचे मुकाम पर पहुँचा दिया है।

कभी वह दौर था जब महिला क्रिकेट को केवल औपचारिकता समझा जाता था। मैदान पर मैच तो होते थे, पर दर्शक नहीं आते थे। खिलाड़ियों को सामान्य सुविधाएँ मिलती थीं और पहचान लगभग न के बराबर थी। लेकिन इन बेटियों ने हार नहीं मानी। उन्होंने खेलना जारी रखा — धूप, धूल और कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए। मिथाली राज, झूलन गोस्वामी, हरमनप्रीत कौर और स्मृति मंधाना जैसी खिलाड़ियों ने उस दौर में भारतीय महिला क्रिकेट की नींव को मजबूत किया, जब समर्थन और साधन बहुत सीमित थे। आज उन्हीं के संघर्ष का परिणाम है कि भारत की युवा टीम आत्मविश्वास और जोश के साथ विश्व की सबसे शक्तिशाली टीम ऑस्ट्रेलिया को परास्त कर रही है।

यह जीत केवल एक मैच की सफलता नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और संयम की प्रतीक है। ऑस्ट्रेलिया, जिसने कई बार विश्वकप अपने नाम किया, के सामने भारतीय टीम ने बेहतरीन बल्लेबाज़ी, सटीक गेंदबाज़ी और चुस्त फील्डिंग का अद्भुत प्रदर्शन किया। हर चौके, हर विकेट पर पूरा मैदान "भारत माता की जय" से गूंज उठा। दर्शकों की आँखों में खुशी के आँसू थे, क्योंकि यह सिर्फ़ खेल की जीत नहीं, बल्कि भारतीय नारी शक्ति की प्रतिध्वनि थी। कप्तान ने निर्णायक क्षणों में जो साहसिक निर्णय लिए, उन्होंने साबित कर दिया कि यह टीम मानसिक रूप से भी उतनी ही सशक्त है जितनी शारीरिक रूप से।

यह सफलता अचानक नहीं आई। यह वर्षों की मेहनत, असफलताओं से सीखे गए सबक और अटूट लगन का परिणाम है। भारतीय महिला क्रिकेट अब केवल भावनात्मक प्रेरणा नहीं, बल्कि पेशेवर उत्कृष्टता का उदाहरण बन चुका है। खेल के मैदान में अब महिलाएँ सिर्फ़ भाग नहीं ले रही हैं — वे इतिहास रच रही हैं। क्रिकेट, जिसे कभी केवल पुरुषों का खेल माना जाता था, अब भारतीय बेटियों के नाम से गूंज रहा है। स्मृति मंधाना की शानदार बल्लेबाज़ी, हरमनप्रीत कौर की कप्तानी, शेफाली वर्मा की तेज़ शुरुआत और दीप्ति शर्मा की ऑलराउंड क्षमता ने साबित कर दिया कि भारतीय महिला टीम किसी भी परिस्थिति में जीत दर्ज करने का दम रखती है।

यह जीत केवल मैदान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी है। गाँव-कस्बों से निकलकर, सीमित संसाधनों में पली-बढ़ी बेटियों ने यह दिखा दिया कि अगर संकल्प दृढ़ हो और

अवसर मिले, तो कोई सपना असंभव नहीं। यह सफलता उन माता-पिताओं के लिए भी प्रेरणा है जो बेटियों को खेल में आगे बढ़ाने से हिचकते हैं। अब वे निश्चिंत होकर कह सकते हैं — "हमारी बेटी भी खेल सकती है, जीत सकती है और देश का नाम रोशन कर सकती है।"

भारतीय महिला क्रिकेट को आज जो लोकप्रियता और समर्थन मिल रहा है, वह ऐतिहासिक है। स्टेडियम की भीड़, टीवी चैनलों की टीआरपी और सोशल मीडिया के ट्रेंड यह दर्शाते हैं कि अब महिला क्रिकेट केवल खेल नहीं, बल्कि भावना बन चुका है। दर्शकों और मीडिया के इस समर्थन ने खिलाड़ियों का आत्मविश्वास कई गुना बढ़ा दिया है। अब बेटियाँ न केवल खेल रही हैं, बल्कि देश की नई पहचान गढ़ रही हैं।

अब सबकी निगाहें फाइनल पर हैं। भारतीय टीम ने जिस लय, अनुशासन और जोश के साथ खेला है, वह विश्वकप को भारत की झोली में डालने के लिए पर्याप्त है। हर खिलाड़ी जानती है कि यह केवल मैच नहीं, बल्कि इतिहास रचने का अवसर है। अब यह केवल ट्रॉफी का सवाल नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के सपनों का सम्मान है। फाइनल भारतीय नारी शक्ति का उत्सव होगा — यह दुनिया को दिखाएगा कि भारत की महिलाएँ केवल परिवार और समाज में ही नहीं, बल्कि खेल के मैदान में भी नेतृत्व कर सकती हैं।

आज की यह जीत एक संदेश है — कि मेहनत, अनुशासन और आत्मविश्वास से कोई भी बाधा बड़ी नहीं होती। भारत की बेटियाँ आज मैदान में नहीं, बल्कि इतिहास के पन्नों पर खेल रही हैं। उनके हाथों में बल्ला है, आँखों में लक्ष्य है, और दिल में असीम देशप्रेम है। यही वो शक्ति है जो भारत को नए युग की ओर ले जा रही है। अब चाहे ऑस्ट्रेलिया हो, इंग्लैंड या कोई और टीम — भारतीय महिला क्रिकेट अब किसी से डरना नहीं जानती। यह वह पीढ़ी है जो सपनों को साकार करने के लिए पैदा हुई है।

अब कप दूर नहीं। यह जीत एक नई सुबह की शुरुआत है। यह उन अनगिनत छोटी-छोटी बेटियों की प्रेरणा है जो किसी कोने में बल्ला थामे अपने सपनों को आकार दे रही हैं। यह जीत हर उस माँ की मुस्कान है जिसने अपनी बेटी को उड़ान भरने की आज़ादी दी। यह जीत हर उस पिता का गर्व है जिसने समाज की सोच से ऊपर उठकर अपनी बेटी को मैदान तक पहुँचाया।

भारतीय महिला टीम की इस ऐतिहासिक विजय को शत-शत नमन। यह केवल खेल की जीत नहीं, बल्कि राष्ट्र के आत्मविश्वास की पुनर्स्थापना है। अब जब भारतीय तिरंगा फाइनल में लहराएगा, तो वह हर बेटी की मेहनत और हर माँ की प्रार्थना का परिणाम होगा।

जय हो भारतीय नारी शक्ति!
जय हो भारत की बेटियाँ!

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

Contact & Custom Order Booking
Let's create something divine together
Contact Details
Phone: +91-8076435376
WhatsApp Orders: +91-9717122095
Custom Design Orders
Minimum Order Quantity (MOQ): 10 Pieces per Design
Customization Options: Size, Finish, Material & Packaging
Delivery: PAN India & Export Available
Bulk Discounts for Dealers & Retailers.

Nova Lifestyles — Divine Wall Hanging Collection
Luxury Décor with a Touch of Divinity
Presented by Velvet Nova

Shiva Mahamrityunjaya
Premium Wall Hanging for Spiritual Elegance in Your Space
• Material: MDF • Finish: High Gloss • Ideal For: Home, Office, Temple Décor • Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."

Shiv 12 jyotirlinga Wall Hanging
Premium spiritual décor for your home and sacred spaces
• Material: MDF • Finish: Sparkling Matte Vineyl • Size: Custom Available • Ideal For: Home, Office, Temple Décor • Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
॥ श्री ॥ शिवाय नमस्तुभ्यं

Jai Shri Ram
Exquisite Wall Hanging for Spiritual Elegance in Your Space
• Material: MDF • Finish: Gloss • Ideal For: Home, Office, Temple Décor • Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
जय श्री राम

Shree Krishna Wall Hanging
Premium spiritual décor for your home and sacred spaces
• Material: MDF • Finish: Sparkling Matte Vineyl • Ideal For: Home, Office, Temple Décor • Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."

Radhe Shyam Wall Hanging
Premium spiritual décor for your home and sacred spaces
• Material: MDF • Finish: Gloss • Ideal For: Home, Office, Temple Décor • Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
हरे कृष्णा हरे कृष्णा कृष्णा कृष्णा हरे हरे हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

Lord Hanuman Wall Hanging
Discover our sacred décor embodying strength, faith, and devotion, perfect for enriching your spiritual space.
• Material: MDF • Finish: Sparkling Vineyl Matte • Ideal For: Home, Office, Temple Décor • Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
संकट कटै मिटै सब पीरा जो सुमिरई हनुमत बलबीरा

Goddess Durga Wall Hanging
Explore our luxurious Goddess Durga décor pieces that embody strength and spiritual elegance for your space.
• Material: MDF • Finish: High Gloss • Ideal For: Home, Office, Temple Décor • Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणी नमोस्तुते।।

Evil Eye Protection Décor
Embrace positivity and ward off negativity with our exquisite Evil Eye wall décor collection.
• Material: MDF • Finish: Sparkling Matte or High Gloss • Ideal For: Home, Office, Temple Décor • Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
EE12
THIS IS OUR HAPPY PLACE
THANKFUL GRATEFUL BLESSED

Collection Grid
Spiritual Designs for Every Space
Nova Lifestyles — A VELVET NOVA Brand dedicated to spiritual and luxury décor

Contact & Custom Order Booking
Let's create something divine together
Contact Details
Phone: +91-8076435376
WhatsApp Orders: +91-9717122095
Custom Design Orders
Minimum Order Quantity (MOQ): 10 Pieces per Design
Customization Options: Size, Finish, Material & Packaging
Delivery: PAN India & Export Available
Bulk Discounts for Dealers & Retailers.

परिवहन विशेष
www.newsparivahan.com

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

चेतावनी: भारत का चिकित्सा क्षेत्र जल्द ही ढहने की कगार पर है

एक भारतीय संसदीय समिति ने स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है। जी न्यूज में हाल ही में प्रकाशित एक शोध रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 44% मानव सर्जरी बोगस, फर्जी या अनावश्यक हैं। इसका मतलब है कि अस्पतालों में की जाने वाली लगभग आधी सर्जरी मरीजों या सरकार से पैसे निकालने के लिए की जाती है।

फर्जी सर्जरी के आंकड़े:

- 55% हृदय सर्जरी बोगस या फर्जी हैं।
- 48% हिस्टेरेक्टॉमी (गर्भाशय को हटाने की सर्जरी) बोगस या फर्जी हैं।
- 47% कैंसर सर्जरी बोगस या फर्जी हैं।
- 48% घुटने की प्रतिस्थापन सर्जरी बोगस या फर्जी हैं।
- 45% सीजेरियन सेक्शन (कृत्रिम प्रसव) बोगस या फर्जी हैं।

डॉक्टरों की कमाई: महाराष्ट्र के कई प्रसिद्ध अस्पतालों के सर्वेक्षण से पता चला है कि बड़े अस्पतालों में वरिष्ठ डॉक्टरों का मासिक वेतन 1 करोड़ रुपये तक है। यह इसलिए है क्योंकि डॉक्टर जो अधिक से अधिक मरीजों को अनावश्यक परीक्षण, उपचार, भर्ती और सर्जरी के लिए मजबूर करते हैं, उन्हें अधिक भुगतान किया जाता है।

मृत मरीजों का इलाज: द टाइम्स ऑफ इंडिया अखबार ने कई मामलों का अध्ययन करने के बाद एक रिपोर्ट प्रकाशित की है जिसमें मृत मरीजों को जीवित दिखाकर इलाज किया गया है। यह अत्यधिक घृणित रूप से अधिक पैसे निकालने का तरीका है।

बीमा घोटाला: भारत में लगभग 68% लोगों ने मेडिक्लेम बीमा लिया है, लेकिन जब जरूरत होती है, तो मरीजों के बीमा दावे को अस्वीकार कर दिया जाता है या आंशिक राशि दी जाती है। शेष खर्च मरीज के रिश्तेदारों को वहन करना पड़ता है।

अंग तस्करी: एक बहुत ही जघन्य व्यवसाय है जिसमें मानव अंगों की तस्करी की जाती है। द इंडियन एक्सप्रेस ने 2019 में इस संबंध में एक दिल दहला देने वाली घटना का खुलासा किया था।

अस्पताल रेफरल घोटाला: एक डॉक्टर या अन्य व्यक्ति मरीज को किसी बड़े प्रतिष्ठित अस्पताल में भर्ती होने के लिए कहता है, यह कहते हुए कि उसे गंभीर बीमारी है। कई अस्पतालों में रेफरल सदस्य होते हैं जो डॉक्टरों को रेफरल प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करते हैं।

निदान घोटाला: यह एक बहुत ही सरल और सीधा प्रकार का लूट है जिसमें करोड़ों रुपये की चोरी की जाती है। आयकर विभाग द्वारा बेंगलुरु में कुछ प्रसिद्ध पैथोलॉजी लैब पर छापे के दौरान 100 करोड़ रुपये से अधिक की नकदी और साढ़े तीन किलो सोना बरामद किया गया था।

फार्मा कंपनियों का घोटाला: हर साल 20 से 25 प्रमुख दवा कंपनियां डॉक्टरों पर 1000 करोड़ रुपये खर्च करती हैं। डोलो पिल्स बेचने वाली कंपनी ने कोरोना काल में 1000 करोड़ रुपये देने का उदाहरण सार्वजनिक किया है।

सरकारी योजनाओं का घोटाला: यह एक नया और अनोखा प्रकार का घोटाला है जो अब हजारों करोड़ रुपये का है। यदि कोई पूर्व सैनिक अस्पताल जाता है, तो उसे सर्दी या अन्य मामूली समस्या होने पर भी भर्ती कर लिया जाता है। उसके कार्ड पर सरकारी योजना के तहत उसे इलाज किया जाता है।

वायरल पोस्ट के हर बड़े दावे का सूत्र-वार (source-by-source) सत्यापन रिपोर्ट (हिंदी) दिया जा रहा है। मैंने कोशिश की है कि हर प्रमुख दावे के साथ विश्वसनीय समाचार/सरकारी/रिसर्च स्रोत दिखाऊँ और स्पष्ट रूप से लिखूँ कि यह दावा पूर्णतः सत्य/आंशिक सत्य/असत्य/अनपुष्ट है — और क्यों। हर खंड के अंत में संदर्भ (citation) रखा है ताकि आप खुद भी खोलकर पढ़ सकें।

>नोट: जहाँ मैंने कहा "आंशिक सत्य" — उसका मतलब है कि उस प्रकार के दुराचार/घटनाएँ रिपोर्ट हुई हैं, पर जिस सटीक % (उदा. 44%, 55% आदि) का वायरल पोस्ट दावा करता है, उसका आधार राष्ट्रीय, समेकित और हालिया सरकारी रिपोर्ट नहीं मिली — अक्सर वह छोटे-स्तर के सर्वे/एक स्रोत-रिपोर्ट या पुरानी मीडिया-रिपोर्ट पर आधारित होता है।

संक्षेप (Quick verdict — 1 लाइन)

कई गंभीर घोटाले/घटनाएँ (उदा. मृत व्यक्ति को लंबे समय तक life-support पर रखना, organ-rackets, बीमा धोखाधड़ी, ब्लैकलिस्टिंग) — दस्तावेजीकृत और मीडिया-रिपोर्टेड हैं।

परंतु वायरल पोस्ट में दिए गए सटीक प्रतिशत (44%, 55% आदि) — राष्ट्रीय स्तर पर सत्यापित आधिकारिक आँकड़े नहीं हैं; ये अक्सर किसी विशेष second-opinion सर्विस या समीक्षा पर आधारित छोटे/पुराने सर्वे के परिमाण होते हैं।

विस्तृत तथ्य-निर्धारण (Claim-by-claim verification — हिंदी)

1) दावा: "India में लगभग 44% मानव सर्जरी फर्जी/अनावश्यक"

पता चला स्रोत / तथ्य: यह 44% आँकड़ा 2015-2016 के दौर में दूसरी-राय (second-opinion) देने वाली कुछ सेवाओं/पब्लिकेशन्स के आधार पर न्यूज में आया था — उदाहरण: MediAngels ने बताया कि उनके पास जिन मरीजों के केस आए, उनमें ≈44% मामलों में दूसरी राय ने सर्जरी की जरूरत नहीं बताई। यह एक संस्था/सेवा के केस-सीरीज पर आधारित था, न कि किसी राष्ट्रीय सर्वे या सरकारी अध्ययन पर। इसलिए इसे राष्ट्रीय-स्तर का सार्वभौमिक प्रतिशत मानना गलत होगा।

निष्कर्ष: आंशिक सत्य (इसी तरह के प्रयुक्त डेटा स्रोत मौजूद हैं), पर वायरल पोस्ट का अर्थ (देशव्यापी 44%) — अनपुष्ट।

2) "55% हृदय सर्जरी / 48% हिस्टेरेक्टॉमी / 47% कैंसर सर्जरी आदि फर्जी" (वायरल सूची के अलग-अलग प्रतिशत)

पता चला स्रोत / तथ्य: FrontierWeekly और कुछ ब्लॉग/वायरल फ़ॉरवर्ड-कलेक्शन्स ने इसी तरह के अलग-अलग प्रतिशत उद्धृत किए हैं — लेकिन उनके स्रोत अक्सर संदर्भहीन, पुरानी रिपोर्टें, स्थानीय सर्वे/व्यवहारिक केस-सीरीज़ या opinion-pieces हैं। मैंने किसी आधिकारिक राष्ट्रीय स्वास्थ्य एजेंसी (MoHFW/NHA) या peer-reviewed, देशव्यापी अध्ययन से यह व्यापक प्रतिशत नहीं पाया।

निष्कर्ष: अनपुष्ट / संदर्भहीन — समान्य सत्यापन में आधिकारिक राष्ट्रीय आँकड़े नहीं मिले।

3) "कुछ हॉस्पिटलों में मृत रोगियों को जीवित दिखाकर ventilator पर रखा गया — उदाहरण: 14 साल के लड़के को एक माह तक"

पता चला स्रोत / तथ्य: मीडिया में कई घटनाएँ हैं जहाँ अस्पतालों पर आरोप लगे कि किसी मृत मरीज को ventilator पर रखा गया या मृत होने के बाद सहमति/धोखे के माध्यम से पैसे लिए गए — कई शहरों (Delhi, Bhopal, Ranchi, Moradabad, आदि) की स्थानीय/राष्ट्रीय रिपोर्टें मिलीं। उदाहरण-केस: Delhi के एक केस में डि.एस.सी.आर.सी ने एक टीम पर जुर्माना लगाया (2018), Ranchi/Bareilly/Bhopal में भी हालिया वर्षों में मामले रिपोर्ट हुए। पर हर कहानी अलग-अलग केस हैं — और 14-साल के लड़के का जो viral वर्णन था, उसे मैंने Times of India का केस (2018) जैसे मिलते-जुलते सत्यापित रेफरेंस से मिलाया; पर वायरल पोस्ट में बताया गया "एक महीना"-वाला वाकया हर बार वैसा विस्तृत रूप में नहीं मिलता (स्थानीय रिपोर्ट अलग-अलग समय बताते हैं)।

निष्कर्ष: घटनाएँ सत्यापित हैं (कई रिपोर्टेड केस) — पर वायरल में दिए गए कुछ विस्तार (जैसे "1 माह") हर केस पर सटीक मेल नहीं खाते।

4) "तीन हज़ार (≈3000) प्रतिष्ठित अस्पताल insurance कंपनियों ने ब्लैकलिस्ट किए"

पता चला स्रोत / तथ्य: बीमा कंपनियों द्वारा ब्लैकलिस्टिंग के मामले रिपोर्ट हुए हैं; कुछ स्थानीय/राज्य-स्तर के अस्पतालों पर कैशलेस सुविधा रोकने या ब्लैकलिस्ट करने की खबरें भी आईं (Bombay HC से जुड़ी खबरें दिखी)। पर '3000' जैसे निश्चित संख्या — मैंने किसी एक आधिकारिक IRDAI/संस्थागत नोटिस में उस विशिष्ट संख्या के रूप में सत्यापित नहीं पाया। (होटल-लिस्ट/टी.पी.ए. साइटों पर ब्लैकलिस्ट-लिस्ट भी उपलब्ध होती हैं; अलग-अलग TPA/insurer की lists अलग हैं)।

निष्कर्ष: आंशिक सत्य (ब्लैकलिस्टिंग होती है), पर '≈3000' का निर्णायक, हालिया आधिकारिक सबूत नहीं मिला।

5) "डॉक्टरों की सैलरी 1 करोड़ प्रति माह (Maharashtra) / बड़े अस्पतालों में बहुत ऊँची कमाई" और "दवाओं के बदले बड़े लाभ/यात्राएँ/कैश"

पता चला स्रोत / तथ्य: मीडिया रिपोर्ट्स और investigative pieces ने बताया है कि private-sector में बड़े अस्पतालों/सर्जन-सैलरी/कमीशन-रिलेटेड भुगतान बहुत ऊँचे हो सकते हैं; pharma-hospital-doctor incentives पर भी आरोप और RCAs मीडिया में मिले। पर "1 करोड़ प्रति माह" जैसा सामान्य कथन संपूर्णता में सिद्ध नहीं — कुछ exceptional cases/मिस-रिपोर्टिंग और वायरल amplification मौजूद हैं। COVID-काल में pharma/हॉस्पिटल practices पर बहु-चर्चा हुई और कुछ कंपनियों पर आरोप भी आए। उदाहरण देखें: कुछ मीडिया एनालिटिक्स और investigative reports।

निष्कर्ष: सत्यापित घटनाएँ (भुगतान/प्रोत्साहन/इनसेंटिव के आरोप) हैं; पर हर डॉक्टर या हर अस्पताल के लिए दी गई उच्चतम संख्या सार्वभौमिक नहीं।

6) "ऑर्गन-ट्रैफिकिंग का बड़ा रैकेट — Sangeeta Kashyap का केस (Kanpur→ Fortis Delhi)"

पता चला स्रोत / तथ्य: 2019-2024 में कई ऑर्गन-रैकेट, बेचैनी और गिरफ्तारी की रिपोर्टें आई हैं (Lucknow/Kanpur/Delhi आदि)। Hindustan Times, Indian Express व अन्य ने कई घटनाएँ कवर कीं — पर विशेष नाम (Sangeeta Kashyap) और Fortis-specific कहानी की अलग-थलग सटीक प्राथमिक रिपोर्ट मैं प्रमुख देशी अख़बारों के आर्काइव में उसी स्वरूप में नहीं खोज पाया (कई केसों की कहानियाँ मिलती हैं पर एक-to-one मेल की पुष्टि नहीं मिली)। फिर भी organ-racket घटनाएँ व गिरफ्तारी रिपोर्ट सत्यापित हैं।

निष्कर्ष: ऑर्गन-ट्रैफिकिंग की घटनाएँ और गिरफ़्तारियाँ सत्यापित हैं; पर वायरल पोस्ट में दिया एक-एक नाम + अस्पताल का संयोजन हर बार आधिकारिक रिपोर्ट से नहीं मिला/सुलभ नहीं मिला।

7) "Pharma कंपनियाँ डॉक्टरों को भारी रिश्वत/यात्रा/नकद देती हैं — उदाहरण USV Ltd" और "EMCURE Temikure के अस्पताली रेटिंग"

पता चला स्रोत / तथ्य: COVID-काल और उससे पहले भी pharma-promotion पर आरोप और रिसॉर्ट्स/बाह्य यात्राएँ देने की चर्चा रही है; कुछ कंपनियों पर local reports/controversies आई हैं। पर किसी एक-एक कंपनी द्वारा "हर डॉक्टर को X रुपए और विदेश यात्रा" जैसे blanket दावे की सीधी आधिकारिक पुष्टि (government order / court judgment) मुझे नहीं मिली — कुछ समाचार/वायरल पोस्ट इन बातों का हवाला देते हैं पर primary legal-record/penalization की लिंक कम दिखती है। EMCURE/Temikure जैसे दवा-MRP/हॉस्पिटल-मल्टीप्लायर के उदाहरणों पर India Today जैसे रिपोर्ट्स कुछ मामलों में मेडिकेशन-प्राइसींग का हवाला देते हैं — पर मैंने खास Temikure-1950 vs 18645 जैसा क्लियर-स्रोत अभी नहीं पाया। (ऐसी कीमत-मिश्रित रिपोर्ट्स स्थानीय जाँच/शो-प्रोग्राम्स में मिलीं)।

निष्कर्ष: भारी प्रोत्साहन/प्रमोशन के आरोप सामूहिक रूप से रिपोर्ट हुए हैं — पर वायरल पोस्ट के कुछ आर्थिक-इकाइयाँ/नंबर का स्वतंत्र, आधिकारिक स्रोत दुर्लभ है।

8) "Medical Council of India (MCI) या नियामक बद-इंतज़ाम/अन्याय"

पता चला स्रोत / तथ्य: Medical Council of India के पुराने तौर-तरीके और बाद में NMC आने के बाद भी रेगुलेटरी चुनौतियाँ, कॉलेज-अनुमोदन पर आलोचना और पेशेवर नियमन पर बहस जारी रही। NMC की Code of Medical Ethics में record-keeping और informed consent के नियम स्पष्ट हैं (medical records 3 वर्ष आदि)। ये नियम मौजूद हैं और उपयोगी शिकायत/निगरानी के आधार हैं।

निष्कर्ष: नियामक नियम मौजूद हैं पर लागू करने/सख्ती में कमी की शिकायतें भी रिपोर्ट हुई हैं — यह सत्य है।

स्रोतों का त्वरित सूची (मुख्य/सबसे भरोसेमंद जो मैंने इस्तेमाल किए) — (ये 5 सबसे load-bearing स्रोत हैं)

1. Times of India article — "44% advised unnecessary surgery / MediAngels / 2015" (original news coverage of MediAngels 2nd opinion data).
2. Times of India / Indian Express reports on hospitals keeping dead patients on ventilator / FIRs / probe cases (कई स्थानीय केस: Delhi 2018 fined case; Ranchi, Bhopal, Moradabad आदि).
3. Investigative reports on organ-rackets / police busts (Hindustan Times, Indian Express) — कई मामलों की खबरें।
4. Bombay HC / news on hospitals being blacklisted by insurers; TPA/insurer blacklisted lists — ब्लैकलिस्टिंग की रिपोर्टें और TPA-list।
5. National Medical Commission (NMC) — Code of Medical Ethics (record keeping, consent rules) और IRDAI — Bima Bharosa grievance process (official pages) — शिकायत/नियामक प्रक्रियाओं के लिए आधिकारिक स्रोत।

संक्षेप में — क्या सच है, क्या सावधानी रखें (ऑपरेशन/बीमा/अस्पताल व्यवहार पर)

1. सच: कई गंभीर धोखाधड़ी/गलत व्यवहार के मामले रिपोर्ट हुए और कुछ अस्पताल/डॉक्टरों के खिलाफ कानूनी/न्यायिक कार्रवाई भी हुई।

2. सावधानी: वायरल प्रतिशत आँकड़े (44%, 55% आदि) को बिना संदर्भ के सार्वभौमिक सत्य मानने से बचें — वे अक्सर छोटे-स्केल सर्वे/एक-स्रोत डेटा पर आधारित होते हैं।

3. कदम: जब भी सर्जरी सुझी जाए — दूसरी राय, लिखित सूचनाएँ, इन्फॉर्म्ड-कंसेंट, और बीमा दस्तावेज़ संभालें; शिकायत हेतु IRDAI/NMC/Consumer Forum के रास्ते मौजूद हैं।

भारत में मेलानोमा (त्वचा कैंसर): वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ और विकास

1. **प्रचलन और महामारी विज्ञान** (Prevalence and Epidemiology) मेलानोमा भारत में पश्चिमी देशों की तुलना में अपेक्षाकृत दुर्लभ है। GLOBOCAN २०२० के आंकड़ों के अनुसार, मेलिग्नेंट मेलानोमा भारत में सभी कैंसर मामलों का लगभग 0.३% है — जो लगभग ३,९१6 मामलों के बराबर है। भारत के Population-Based Cancer Registries (PBCR) (२०१२–२०14) के आँकड़ों से पता चला कि भारत के उत्तरी क्षेत्रों में मेलानोमा की दर सबसे अधिक है —पुरुषों में लगभग 1.6२ प्रति 1,00,000 और महिलाओं में 1.२1 प्रति 1,00,000।
JAMA Network Open के 4३ कैंसर रजिस्ट्रियों के आँकड़ों के अनुसार, त्वचा का मेलानोमा सभी कैंसर मामलों का केवल 0.२% हिस्सा था।

२. **भौगोलिक और जनसांख्यिकीय पैटर्न** (Geographical & Demographic Patterns) भारत में मेलानोमा की घटनाओं में क्षेत्रीय भिन्नता पाई गई है। उत्तरी भारत में पुरुषों और महिलाओं — दोनों में मेलानोमा के मामले अधिक देखे गए हैं। इसके विपरीत, गैर-मेलानोमा त्वचा कैंसर (जैसे Basal Cell Carcinoma और Squamous Cell Carcinoma) पूर्वी या पूर्वोत्तर क्षेत्रों में अधिक पाए जाते हैं। २016–२0२0 के बीच एक तृतीयक अस्पताल में किए गए अध्ययन में पाया गया कि २३0 त्वचा कैंसर मामलों में से केवल 1२ मामले मेलानोमा के थे। अधिकांश मामलों में Squamous Cell Carcinoma (SCC) या Basal Cell Carcinoma (BCC) पाया गया। अध्ययन में यह भी बताया गया कि भारत में मेलानोमा के मामले अक्सर सूरज के संपर्क में आने वाले हिस्सों में होते हैं, और इनमें पुरुषों की संख्या थोड़ी अधिक होती है।

३. **भारत में प्रकार और जैविक व्यवहार** (Types and Biological Behavior in India) भारत में बड़ी संख्या में मेलानोमा Acral (हाथ-पैर की उंगलियों या नाखूनों के नीचे) या Mucosal Sites (मुख, गुदा या अन्य आंतरिक श्लेष्मा झिल्लियों) से उत्पन्न होते हैं। पश्चिमी देशों में मेलानोमा प्रायः धूप से प्रभावित त्वचा पर देखा जाता है, लेकिन भारत में यह पैटर्न अलग है। ये प्रकार (Acral/Mucosal Melanoma) अधिक आक्रामक (Aggressive) माने जाते हैं और इनका प्रणाम (Prognosis) सामान्य मेलानोमा की तुलना में कमजोर होता है। एक तृतीयक कैंसर केंद्र की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में मेलानोमा "इतना दुर्लभ नहीं" है — विशेषकर म्यूकोसल (Mucosal) भागों जैसे मुखगुहा और गुदा क्षेत्र में इसके मामले बढ़ रहे हैं।

4. **निदान और उपचार की चुनौतियाँ** (Challenges in Diagnosis & Management)
4. (a) **कम जागरूकता)** — भारत में मेलानोमा के कम प्रचलन और गहरी त्वचा में अधिक मेलानिन (Melanin) होने के कारण, लोग और कई चिकित्सक इसे जल्दी पहचान नहीं पाते।
4. (b) **देर से निदान)** — अधिकतर मरीज तब आते हैं जब रोग उन्नत अवस्था में पहुँच चुका होता है, जिससे उपचार कठिन हो जाता है।
4. (c) **सीमित डेटा)** — भारत में मेलानोमा के दीर्घकालिक परिणामों पर बहुत कम शोध हुआ है। जबकि विश्वभर में इम्यूनोथेरेपी और टार्गेटेड थेरेपी के कारण उपचार के परिणामों में सुधार हुआ है, भारत में अभी भी ऐसे आंकड़े सीमित हैं।
4. (d) **संसाधनों की कमी)** — कई क्षेत्रों में उन्नत डायग्नोस्टिक टेस्ट (जैसे BRAF mutation testing) और आधुनिक दवाएँ (जैसे checkpoint inhibitors) या तो महंगी हैं या उपलब्ध नहीं हैं।

5. **नवीनतम और उभरते विकास** (Recent / Emerging Developments)
5. (a) **इम्यूनोथेरेपी और टार्गेटेड थेरेपी)** — विश्व स्तर पर Anti-PD-1 दवाओं और BRAF inhibitors से मेलानोमा मरीजों की जीवन दर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। भारत में इनका उपयोग अभी सीमित है, और देश में अधिक क्लीनिकल ट्रायल्स की आवश्यकता है।
5. (b) **उन्नत पहचान तकनीक)** — अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और डीप लर्निंग तकनीकें मेलानोमा की पहचान में मदद कर रही हैं। नई एल्गोरिद्म (जैसे "CIFF-Net") त्वचा की कई छवियों का विश्लेषण कर सटीक निदान करने में सक्षम हैं।
5. (c) **फीचर एक्सट्रैक्शन सिस्टम्स)** — नए सॉफ्टवेयर "एक्सटेंडेड फीचर वेक्टर" तकनीक का उपयोग करके त्वचा के घावों से मेलानोमा की पहचान अधिक संवेदनशीलता और सटीकता से कर रहे हैं।
5. (d) **भारत में गैर-आक्रामक शोध** (Non-invasive Detection) — हाल ही में पंजाबी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने मशीन लर्निंग और डर्मोस्कोपिक इमेजिंग पर आधारित तकनीक विकसित की है, जिससे बायोप्सी की आवश्यकता कम की जा सके।
5. (e) **रजिस्ट्री और निगरानी** (Registry & Surveillance) — ICMR / NCRP जैसी संस्थाएँ त्वचा कैंसर के मामलों का सटीक रिकॉर्ड रख रही हैं, जिससे जागरूकता और संसाधन वितरण में सुधार होगा।

6. जनस्वास्थ्य और आगे की दिशा (Public Health Implications & the Way Forward) भारत में मेलानोमा के मामले कम हैं, परंतु अनदेखे नहीं किए जा सकते। जन-जागरूकता बढ़ाना बहुत आवश्यक है — खासकर डॉक्टरों, त्वचा विशेषज्ञों और आम जनता के बीच।
7. त्वचा की स्वयं-जाँच (Skin Self-Examination) की आदत डालनी चाहिए — विशेष रूप से नाखूनों के नीचे, हथेलियों, तलवों और म्यूकोसल क्षेत्रों में किसी भी असामान्य तिल या धब्बे को ध्यान से देखना चाहिए।
8. स्क्रीनिंग और रेफरल प्रोटोकॉल तैयार करना जरूरी है ताकि संदिग्ध मामलों को समय पर विशेषज्ञ के पास भेजा जा सके।
9. शोध और क्लीनिकल ट्रायल्स बढ़ाए जाने चाहिए, ताकि भारतीय जनसंख्या के लिए उपयुक्त दवाएँ और उपचार पद्धतियाँ विकसित की जा सकें।
10. नीति और सहयोग — सरकार और स्वास्थ्य संस्थानों को मेलानोमा जैसे "दुर्लभ" कैंसरों को भी राष्ट्रीय कैंसर नियंत्रण योजनाओं में प्राथमिकता देनी चाहिए।

भारत में मेलानोमा अपेक्षाकृत दुर्लभ है, परंतु इसका प्रभाव शून्य नहीं है, इसका पैटर्न पश्चिमी देशों से अलग है — भारत में Acral और Mucosal प्रकार अधिक देखने को मिलते हैं, जो अधिक आक्रामक माने जाते हैं।

प्रमुख चुनौतियाँ — कम जागरूकता, देर से निदान, सीमित आँकड़े और आधुनिक उपचारों की कमी। सकारात्मक पहलू यह है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकें और गैर-आक्रामक जांच विधियाँ तेजी से विकसित हो रही हैं, जिससे भविष्य में मेलानोमा का शीघ्र और सटीक निदान संभव हो सकेगा।

आगे की दिशा यही है कि जन-जागरूकता, शीघ्र पहचान, बेहतर डेटा और आधुनिक उपचार तक पहुंच को प्राथमिकता दी जाए, ताकि मेलानोमा से होने वाली मृत्यु और पीड़ा को कम किया जा सके।

त्वचा कैंसर के बहुत आम प्रकार — केराटिनोसाइट कार्सिनोमा — पर एक विस्तृत समीक्षा (रिव्यू) है

1. **केराटिनोसाइट कार्सिनोमा** (Keratinocyte Carcinoma) क्या है? यह एक प्रकार का त्वचा कैंसर है, जो केराटिनोसाइट नामक कोशिकाओं से उत्पन्न होता है। इसमें मुख्यतः दो प्रकार होते हैं: Basal Cell Carcinoma (BCC) और cutaneous Squamous Cell Carcinoma (cSCC)। ये बहुत ही आम प्रकार के स्किन कैंसर हैं, खासकर उत्तरी अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया आदि में। लेख में बताया गया है कि अमेरिका में सालाना अनुमानित 5.4 लाख Keratinocyte Carcinoma के मामले होते हैं।

२. **मुख्य जोखिम-कारक** (Risk Factors): यूवी (UV) किरणों का एक्सपोज़र सबसे बड़ा जोखिम है — धूप, सनलैंपिंग आदि। अन्य कारकों में शामिल हैं — उम्र बढ़ना, पुरुष लिंग, बार-बार सूरज की खुराक, त्वचा की प्रकार (जिनकी त्वचा आसानी से जलती है), immunosuppression (जैसे अंग प्रत्यारोपण के बाद), और पहले की त्वचा चोटें / प्रीकैंसरोज़ घाव।

३. **किस स्थान पर अधिक होता है जकड़ाव** (common location): ये ट्यूमर अक्सर सर और गर्दन के क्षेत्र में बनते हैं, क्योंकि ये हिस्से सूरज की किरणों के बहुत संपर्क में रहते हैं।

4. **इलाज और प्रबंधन** (Treatment): छोटे और कम जोखिम वाले ट्यूमर में ऑफिस-सर्जरी (डर्मेटोलॉजिस्ट द्वारा कार्यालय में काट-छांटना) या curettage + electrodessication जैसे सरल तरीके अपनाए जाते हैं। अधिक जटिल या पुनरावृत्ति (recurrence) वाले केसों में Mohs सर्जरी का उपयोग होता है — यह बहुत सटीक तकनीक है जहाँ हर कदम पर माइक्रोस्कोप से सीमाएँ देखी जाती हैं ताकि ट्यूमर को पूरी तरह हटाया जा सके। सर्जरी के बाद भी, दोहराव (recurrence) का खतरा है: बासल सेल कार्सिनोमा में लगभग ३% और cSCC में लगभग 5% पुनरावृत्ति हो सकती है।

5. **रोकथाम** (Prevention): सबसे प्रभावी रोकथाम सनस्क्रीन (सनब्लॉक) का नियमित उपयोग है। लेख में उल्लेख है कि एक रैंडम क्लीनिकल ट्रायल में दैनिक सनस्क्रीन लगाने वाले लोगों में cSCC का जोखिम कम हुआ था। साथ ही, उन मरीजों को साल में कम से कम एक बार त्वचा की जाँच (skin examination) की सलाह दी जाती है, क्योंकि वे नए केराटिनोसाइट कार्सिनोमा विकसित करने के उच्च जोखिम में होते हैं।

6. **महत्व और संदेश:** यह समीक्षा इस बात पर जोर देती है कि केराटिनोसाइट कार्सिनोमा बहुत सामान्य है, लेकिन अधिकांश मामलों में समय पर पहचान और इलाज से पूरी तरह नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अलावा, सावधानी (sun protection) और नियमित त्वचा जाँच जीवन-रक्षक सिद्ध हो सकती है।

इस *JAMA (Journal of the American Medical Association) में प्रकाशित समीक्षा लेख से यह स्पष्ट होता है कि केराटिनोसाइट कार्सिनोमा न सिर्फ बहुत सामान्य है, बल्कि इसका उपचार और रोकथाम दोनों ही संभव हैं।

1. हमें सूरज की हानिकारक किरणों से बचाव करना चाहिए — सनस्क्रीन, टोपी, छाया आदि का उपयोग जरूरी है।
२. यदि किसी को त्वचा पर असामान्य नोड्यूल, गांठ, या घाव दिखे जो ठीक नहीं हो रहा है, तो त्वचा विशेषज्ञ (डर्मेटोलॉजिस्ट) से सलाह लेनी चाहिए।

प्याज पर क्यों पड़ जाते हैं काले धब्बे; खाने से पहले जरूर जान लें, वरना सेहत को हो सकता है नुकसान

खाने का स्वाद बढ़ाने के लिए लगभग हर रसोई में प्याज का इस्तेमाल किया जाता है। ऐसे में आपने कई बार देखा होगा कि कुछ प्याज के छिलकों पर काले धब्बे (Onion With Black Spots) लग जाते हैं। कई बार ये धब्बे प्याज की अंदर की परतों तक भी पहुंच जाता है। ऐसे में अक्सर यह सवाल सामने आता है कि क्या यह प्याज खराब हो गया है या इसे खाना सुरक्षित (Onion With Black Spots Safe to Eat?) है। अगर आप भी इस सवाल में उलझे हैं, तो आइए जानें प्याज पर काले धब्बे क्यों लग जाते हैं और क्या इसे खाना सुरक्षित है?

प्याज पर काले धब्बे क्यों लग जाते हैं? प्याज में अक्सर एस्परगिलस नाइजर नाम के फंगस लग जाता है, जो काले धब्बे बनाता है। यह आमतौर पर तब होता है जब प्याज को ज्यादा ह्युमिडिटी या खराब वेंटिलेशन वाले वातावरण में रखा जाता है या वह खराब होना शुरू होता है। ऐसा अक्सर प्याज के ट्रांसपोर्टेशन में या स्टोरेज के दौरान होता है। ये फंगस प्याज की सतह पर काले पाउडरी धब्बे बनाने लगते हैं। कभी-कभी कटे-फटे प्याज या चोट लगे प्याज पर समय के साथ काले धब्बे पड़ सकते हैं, जो नेचुरल ऑक्सीडेशन के कारण होते हैं।

क्या काले धब्बे वाले प्याज खाने सुरक्षित हैं? हालांकि, अगर कम मात्रा में खाया जाए, तो यह प्याज नुकसान नहीं पहुंचाता। लेकिन इसकी ज्यादा मात्रा या लंबे समय तक ऐसा प्याज खाने से सेहत को नुकसान पहुंच सकता है। दरअसल, यह प्याज एक तरह का टॉक्सिन रिलीज करता है, जो लिवर और किडनी को नुकसान पहुंचा सकता है। यह टॉक्सिन पकाने से भी खत्म नहीं होता है। इसलिए अगर ये धब्बे प्याज के छिलके पर हैं और अंदर की परत तक नहीं पहुंचे हैं, तो छिलके को हटाकर इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। लेकिन अगर प्याज अंदर तक काला हो चुका है, तो इसे फेंक देना ही बेहतर है।

प्याज को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के उपाय सूखी और ठंडी जगह पर रखें- प्याज को हमेशा सूखी, ठंडी और हवादार जगह पर रखें।

प्लास्टिक की थैलियों से बचें- प्याज को प्लास्टिक की थैलियों में न रखें, इससे नमी जमा हो सकती है।

आलू से अलग रखें- प्याज और आलू को एक साथ न रखें, क्योंकि दोनों से निकलने वाली गैसें एक-दूसरे को जल्दी खराब कर सकती हैं।

कटे प्याज को एयरटाइट कंटेनर में रखें- कटे हुए प्याज को एयरटाइट कंटेनर में बंद करके फ्रिज में रखें और जल्दी इस्तेमाल कर लें।

"अर्जुनसार की छाल — हृदय का प्रहरी, शक्ति का आधार"

आयुर्वेद में अर्जुनसार की छाल (Terminalia arjuna) को "हृदय-रक्षक" औषधि कहा गया है। यह वृक्ष नदी किनारों पर पाया जाता है, और इसकी छाल में छिपी होती है अपार शक्ति जो शरीर और मन – दोनों को संतुलित करती है।

मुख्य लाभ (Main Benefits)

1. हृदय (Heart) को मजबूत बनाती है अर्जुनसार की छाल दिल की धड़कनों को संतुलित रखती है, रक्तचाप को नियंत्रित करती है और हृदय की मांसपेशियों को मजबूत बनाती है। यह नेचुरल हार्ट टॉनिक के रूप में जानी जाती है।

२. कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स घटाए नियमित सेवन से रक्त में जमे फैट को कम करती है और धमनियों को साफ रखती है।
३. तनाव और थकान दूर करे इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट मन को शांत करते हैं, जिससे नींद अच्छी आती है और तनाव कम होता है।
4. रक्तसंचार सुधारे शरीर के हर अंग तक ऑक्सीजन और पोषक तत्व पहुँचाने में मदद करती है।
5. घाव भरने और त्वचा रोगों में उपयोगी अर्जुन की छाल का लेप या काढ़ा त्वचा संक्रमण, सूजन और जलन में राहत देता है।

उपयोग (Use Method)

1. काढ़ा (Decoction) 1 चम्मच अर्जुनसार की छाल का चूर्ण २ कप पानी में उबालें जब तक आधा रह जाए, दिन में 1–२ बार पिएं
२. चूर्ण रूप में सुबह-शाम 1–२ ग्राम शहद या गर्म पानी के साथ सेवन करें।
३. दूध के साथ दिल की कमजोरी या तनाव में अर्जुन दूध (Arjun Milk) बहुत उपयोगी है।

आयुर्वेदिक रहस्य चरक संहिता और सुश्रुत संहिता दोनों में अर्जुन की छाल का उल्लेख रक्तस्तंभक, बल्य और हृदय बलवर्धक औषधि के रूप में मिलता है।

निष्कर्ष (Conclusion) यदि आप अपने हृदय को प्राकृतिक कवच देना चाहते हैं, तो अर्जुनसार की छाल से बेहतर साथी कोई नहीं। यह सिर्फ एक पेड़ नहीं — हृदय का आयुर्वेदिक रक्षक है।

कमजोरी, कब्ज या एनीमिया? उबले चावल हैं रामबाण इलाज, जानिए इनके 5 हेल्थ बेनिफिट्स

1. पाचन को बनाए बेहतर उबले हुए चावल का सबसे बड़ा फायदा है कि यह आसानी से पच जाते हैं. इनमें मौजूद फाइबर आंत की सफाई करता है और अच्छे बैक्टीरिया को बढ़ाता है. यह कब्ज जैसी समस्या से बचाव करता है और पेट को हल्का रखता है. जिन लोगों का पाचन कमजोर है, उनके लिए उबले चावल बहुत बढ़िया विकल्प हैं.
२. वजन बढ़ाने में मददगार कम वजन वाले लोगों के लिए उबले चावल किसी वरदान से कम नहीं. इनमें कार्बोहाइड्रेट की मात्रा ज़्यादा होती है, जो शरीर को एनर्जी और पोषण देने के साथ वजन बढ़ाने में मदद करता है, अगर इन्हें दाल या सब्जी के साथ खाया जाए तो शरीर को बैलेंस डाइट भी मिलती है.
३. तुरंत ऊर्जा प्रदान करते हैं चावल जल्दी पचकर शरीर को तुरंत ऊर्जा देते हैं. यही वजह है कि इसे एनर्जी का बेहतरीन स्रोत माना जाता है. चाहे थकान हो या वर्कआउट के बाद कमजोरी लगे, उबले चावल खाने से शरीर फिर से एक्टिव और ऊर्जावान महसूस करता है.
4. खून की कमी से बचाते हैं उबले चावल में आयरन और कॉपर जैसे मिनरल्स पाए जाते हैं, ये खून में लाल रक्त कोशिकाओं को बढ़ाने और ऑक्सीजन सप्लाई को बेहतर बनाने में मदद करते है. नियमित रूप से उबले चावल खाने से एनीमिया जैसी समस्या से बचाव किया जा सकता है.
5. इम्यूनिटी को मजबूत बनाते हैं ब्राउन और रेड राइस में एंटीऑक्सीडेंट भरपूर होते हैं, ये शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करते हैं और सर्दी-खांसी, वायरल या मौसमी बुखार जैसी परेशानियों से बचाते हैं. बच्चों और बुजुर्गों के लिए उबले चावल खासतौर पर फायदेमंद साबित होते हैं.

शिक्षा का डिजिटलीकरण नहीं, मानवीकरण: सीबीएसई का नया मॉडल

सीबीएसई ने 2025-2026 सत्र से बोर्ड परीक्षाओं में एआई-सहायक डिजिटल मूल्यांकन प्रणाली लागू करने का क्रांतिकारी निर्णय लिया है। इस प्रणाली में एक छात्र की मामूली इकाई-त्रुटि अब शून्य अंक नहीं, बल्कि आंशिक अंक दिलाएगी। उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र विज्ञान के प्रश्न में "मानक वायुमंडलीय दबाव पर पानी का क्वथनांक 100 डिग्री सेल्सियस" लिखता है लेकिन तापमान को फ़ारेनहाइट में बदल देता है, तो एआई तुरंत अवधारणा की सत्यता पहचान लेगा। वह शिक्षक को "सही समझ, छोटी गलती" का सुझाव देगा और अंतिम फैसला शिक्षक का रहेगा। यह तकनीक मानवीय व्याय को मज़बूत करती है, उसे प्रतिस्थापित नहीं करती। यही वह ऐतिहासिक कदम है जो शिक्षा के लोकतंत्रीकरण को साकार करेगा। लाखों भारतीय छात्रों की मेहनत को अब सही मूल्य मिलेगा, जहाँ समझ की जीत होगी और औपचारिकता की हार नहीं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को रटंत से मुक्त कर समझ, कौशल और नवाचार पर आधारित बनाने का सपना दिखाया था। सीबीएसई ने इसे ठोस रोडमैप में बदल दिया है। नई प्रणाली का मूल मंत्र है—स्कैन, एआई विश्लेषण, मानव अनुमोदन। उत्तर-पुस्तिकाएँ अब कागज़ के बोझ से मुक्त होकर क्लाउड के सुरक्षित सर्वर पर एन्क्रिप्टेड रूप में संग्रहीत होंगी। प्रत्येक पृष्ठ उच्च-रिज़ॉल्यूशन में स्कैन होगा और अधिकृत मूल्यांकनकर्ता कहीं से भी—घर, स्कूल या डिजिटल केंद्र से—इसे एक्सेस कर सकेंगे। एआई तीन स्तरों पर काम करेगा। पहला स्तर हैंडराइटिंग की पहचान और डिजिटाइज़ेशन है, जिसमें टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट भी सटीक पढ़ी जाएगी। दूसरा स्तर उत्तर-कुंजी से स्वचालित तुलना और स्कोरिंग सुझाव है, जहाँ समान अवधारणा को पहचानकर आंशिक अंक का प्रस्ताव रखा जाएगा। तीसरा स्तर असंगतियों का फ्लैग है, जैसे इकाई त्रुटि, वैकल्पिक शब्दावली या रचनात्मक दृष्टिकोण को चिह्नित करना। लेकिन संवेदनशीलता, रचनात्मकता और संदर्भ जैसे मानवीय तत्वों का अंतिम अधिकार शिक्षक के पास रहेगा। तकनीक सहायक है, मालिक नहीं।

इस प्रणाली की सबसे बड़ी उपलब्धि समय की बचत और निष्पक्षता की गारंटी होगी। वर्तमान में एक उत्तर-पुस्तिका के मूल्यांकन में औसतन 12 से 15 मिनट लगते हैं। डिजिटल प्लस एआई मॉडल में यह समय 4 से 6 मिनट तक सिमट जाएगा। परिणामस्वरूप, दसवीं और बारहवीं के परिणाम 45 दिनों के अंदर घोषित हो सकेंगे, जबकि वर्तमान में यह 60 से 75 दिन लेता है। यह तेज़ी केवल सुविधा नहीं, बल्कि कॉलेज प्रवेश प्रक्रिया को सुचारु बनाएगी। साथ ही, प्रत्येक मूल्यांकन का डिजिटल लॉग रहेगा। इसमें दर्ज होगा कि कौन से शिक्षक ने कब कितने अंक दिए, एआई ने क्या सुझाव दिया और किन बिंदुओं पर असहमति थी। यह पारदर्शिता भ्रष्टाचार की जड़ें काटेगी। पुनर्मूल्यांकन की मांग आने पर पूरी प्रक्रिया 48 घंटे में दोहराई जा सकेगी, बिना कागज़ी दस्तावेज़ों के इंतज़ार के। इससे छात्रों का विश्वास बढ़ेगा, क्योंकि अब हर अंक का हिसाब स्पष्ट होगा।

सीबीएसई ने दो बार बोर्ड परीक्षा की व्यवस्था को भी इसी पारिस्थितिकी तंत्र में जोड़ा है। छात्र फरवरी और मई में परीक्षा दे सकेंगे और बेहतर स्कोर गिना जाएगा। यह नीति मानसिक स्वास्थ्य की वैज्ञानिक समझ पर आधारित है। अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन की 2024 रिपोर्ट के अनुसार, एकल उच्च-दांव परीक्षा से 68 प्रतिशत छात्रों में चिंता बढ़ती है। दो अवसर इस दबाव को 40 प्रतिशत तक कम कर सकते हैं। "एक मौका, सब खत्म" की मानसिकता अब टूटेगी। असफलता सीखने का अवसर बनेगी। यह व्यवस्था विशेष रूप से उन छात्रों के लिए वरदान है जो पारिवारिक दबाव, स्वास्थ्य समस्या या अप्रत्याशित परिस्थितियों का सामना करते हैं। फरवरी में असफल छात्र मई में सुधार कर सकता है, बिना एक साल गँवाए। इससे आत्मविश्वास बढ़ेगा और शिक्षा का दबाव कम होगा।

शैक्षिक सामग्री में भी क्रांति हो रही है। कक्षा छठी से कोडिंग, एआई, रोबोटिक्स और डेटा साइंस पाठ्यक्रम का हिस्सा होंगे। एनसीईआरटी ने 2025 के लिए नई पाठ्यपुस्तकें जारी की हैं, जिनमें 40 प्रतिशत सामग्री प्रोजेक्ट-आधारित है। उदाहरण के लिए, गणित में "पाइथागोरस प्रमेय" याद करने की बजाय छात्र जीपीएस ऐप बनाकर त्रिभुज की दूरी मापेंगे। विज्ञान में "प्रकाश का अपवर्तन" को समझने के लिए वे लेज़र और मोबाइल ऐप से वर्चुअल प्रयोग करेंगे। यह परियोजना-आधारित शिक्षा मॉडल 21वीं सदी के चार स्तंभों—सहयोग, आलोचनात्मक चिंतन, संचार और रचनात्मकता—को बढ़ावा देगा। छात्र अब किताबी कीड़ा नहीं, बल्कि समस्या-समाधानकर्ता बनेंगे। वे वास्तविक दुनिया की चुनौतियों से जुड़ेंगे और नवाचार की भाषा सीखेंगे। मूल्यांकन में कौशल-आधारित प्रश्नों का वज़न 50 प्रतिशत से अधिक होगा। एमसीक्यू अब केवल तथ्य नहीं, बल्कि परिदृश्य-आधारित होंगे। लिखित उत्तरों में भी निर्देश होंगे—"विश्लेषण करो", "समाधान सुझाओ", "वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करो"। इससे रटंत विद्या की जगह समझ और अनुप्रयोग लेगा। छात्र सोचने, तर्क करने और रचनात्मक समाधान देने में सक्षम होंगे।

ग्रामीण भारत के लिए यह क्रांति पूरी तरह समावेशी है। सीबीएसई ने हर जिले में कम से कम एक डिजिटल मूल्यांकन केंद्र स्थापित करने की योजना बनाई है, कुल 1000 केंद्र। ये केंद्र सौर ऊर्जा और ऑफ़लाइन मोड से लैस होंगे, ताकि बिजली या इंटरनेट की कमी बाधा न बने। शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल अकादमी शुरू हो रही है, जहाँ छह महीने का मुफ़्त प्रशिक्षण मिलेगा। पायलट प्रोजेक्ट दिल्ली, बेंगलुरु और गुवाहाटी में सफल रहा। इसमें 92 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि एआई ने उनका समय बचाया और 87 प्रतिशत छात्रों ने परीक्षा को "कम डरावना" पाया। इससे ग्रामीण छात्रों को भी शहरों के बराबर अवसर मिलेंगे।

चुनौतियाँ हैं, लेकिन समाधान भी मज़बूत है। डेटा गोपनीयता सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी सर्वर भारत में होंगे और जीडीपीआर-स्तरीय एन्क्रिप्शन का उपयोग होगा। डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए "डिजिटल इंडिया" के तहत पाँच लाख स्कूलों में हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड पहुंचाया जा रहा है। शिक्षक प्रशिक्षण के लिए एनआईओएस और डीआईटीई के साथ साझेदारी की गई है। सबसे महत्वपूर्ण, एआई पूर्वाग्रह से बचाव। एल्गोरिदम को विविध डेटासेट पर प्रशिक्षित किया जा रहा है, जिसमें क्षेत्रीय भाषाएँ और विभिन्न हैंडराइटिंग शैलियाँ शामिल हैं। इससे ग्रामीण छात्र की टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट भी सटीक पढ़ी जाएगी। वैश्विक संदर्भ में भारत अब शिक्षा प्रौद्योगिकी के अग्रणी देशों की श्रेणी में शामिल हो रहा है। एस्टोनिया में 2018 से ई-एग्ज़ाम सिस्टम है, जहाँ 98 प्रतिशत परीक्षाएँ डिजिटल हैं। सिंगापुर का "स्मार्ट नेशन" मॉडल एआई से व्यक्तिगत शिक्षण पथ बनाता है। सीबीएसई का मॉडल इनसे प्रेरित है, लेकिन भारतीय संदर्भ में अनुकूलित—क्षेत्रीय भाषाओं, विविध पाठ्यक्रम और बड़े पैमाने के लिए।

यह बदलाव केवल परीक्षा प्रणाली का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चरित्र का पुनर्निर्माण है। जब एक गाँव का बच्चा जानता है कि उसका उत्तर दिल्ली के शिक्षक द्वारा निष्पक्ष जांचा जाएगा, जब वह असफल होने पर भी दूसरा मौका पाएगा, जब वह कोड लिखकर रोबोट चला सकेगा—तब वह केवल नौकरी नहीं, बल्कि भविष्य का निर्माण करेगा। सीबीएसई का नया मॉडल यह संदेश देता है कि शिक्षा अब सज़ा नहीं, सशक्तिकरण है। यह वह भारत है जो 2047 के विकसित राष्ट्र का आधार बनेगा—जहाँ हर बच्चे की क्षमता को तकनीक निखारेगी और मानवीय स्पर्श उसे दिशा देगा। यह क्रांति नहीं, बल्कि विकास की स्वाभाविक गति है—और इसका समय अब आ गया है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आकाशवाणी में सरदार पटेल स्मृति व्याख्यान-2025

सरदार पटेल के आदर्शों से ही विकसित भारत का निर्माण संभव : डॉ. मनसुख मांडविया

डॉ.शंभू पंवार

नई दिल्ली। लौह पुरुष, राष्ट्रीय एकीकरण के शिल्पकार, भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में नई दिल्ली स्थित आकाशवाणी के रंग भवन सभागार में सरदार पटेल स्मृति व्याख्यान-2025" का भव्य आयोजन किया गया।

व्याख्यान के विषय "अखण्ड भारत से विकसित भारत की यात्रा" पर बोलते हुवे मुख्य वक्ता केंद्रीय श्रम एवं रोजगार, युवा मामले एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने अपने प्रेरक व्याख्यान में भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री सरदार पटेल के व्यक्तित्व, कृतित्व और राष्ट्र निर्माण में उनके अमूल्य योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने सरदार पटेल के त्याग, परिश्रम, दूरदर्शिता और प्रशासनिक कौशल को भारत की एकता और अखण्डता की आधारशिला बताया। डॉ. मांडविया ने कहा कि "सरदार पटेल ने 562 रियासतों का एकीकरण कर जिस भारत का सपना साकार किया, उसी विरासत से हमें विकसित भारत के निर्माण का संकल्प लेना चाहिए।" उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे अपने महापुरुषों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र विकास के पथ पर अग्रसर हों।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण तथा संसदीय कार्य राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन ने अपने संबोधन में कहा कि भारत आज तेज़ी से एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में बढ़ रहा है और इस यात्रा की आधारशिला सरदार पटेल जैसी महान विभूतियों ने रखी थी। उन्होंने रियासतों के एकीकरण में सरदार पटेल की दृढ़ता और राष्ट्रनिष्ठा के प्रेरक प्रसंगों को स्मरण किया। इस अवसर पर प्रसार भारती के अध्यक्ष श्री नवनीत सहगल ने आधुनिक भारत के निर्माण और सुदृढ़ीकरण में सरदार पटेल की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की भावना ही आज के भारत की पहचान है। कार्यक्रम का शुभारंभ केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया, एवं डॉ.एल. मुरुगन, प्रसार भारती के अध्यक्ष नवनीत कुमार सहगल,मुख्य कार्यकारी अधिकारी गौरव द्विवेदी ,आकाशवाणी के महानिदेशक राजीव कुमार जैन ने दीप प्रज्ज्वलन एवं सरदार पटेल के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पण से हुआ। कार्यक्रम के समापन पर धन्यवाद ज्ञापन करते हुए गौरव द्विवेदी ने कहा कि यह व्याख्यान "अखण्ड भारत से विकसित भारत" की दिशा में एक प्रेरक अध्याय सिद्ध होगा।

इस विशेष व्याख्यान का प्रसारण 31 अक्टूबर को रात्रि 9:30 बजे आकाशवाणी के सभी नेटवर्कों पर किया जाएगा।

डॉ. शंभू पंवार (वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर) अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक

आंवला नवमी आज

अक्षय नवमी यानी आंवला नवमी के शुभ अवसर पर मथुरा-वृन्दावन की परिक्रमा का खास महत्व माना जाता है। इस दिन श्रद्धालु अक्षय पुण्य अर्जित करने के लिए मथुरा-वृन्दावन की परिक्रमा करते हैं। धार्मिक मान्यताओं अनुसार आंवला नवमी की पूजा संपन्न करने पर भक्तों को अक्षय फल की प्राप्ति होती है। कहते हैं इस दिन किए गये शुभ कार्यों का पुण्य कई जन्मों तक प्राप्त होता है। इस दिन आंवले के पेड़ के नीचे भोजन पकाने और खाने का विशेष महत्व माना जाता है।

आंवला नवमी तिथि व मुहूर्त

अक्षय नवमी - 31 अक्टूबर 2025, शुक्रवार

अक्षय नवमी पूर्वाह्न समय - 06:36 AM से 10:03 AM

नवमी तिथि प्रारम्भ - 30 अक्टूबर 2025 को 10:06 AM बजे

नवमी तिथि समाप्त - 31 अक्टूबर 2025 को 10:03 AM बजे

आंवला नवमी का महत्व आंवला नवमी की पूजा विशेष रूप से उत्तर भारत में की जाती है। इस दिन आंवले के पेड़ के नीचे भोजन पकाया भी जाता है और खाया भी जाता है। महिलाएं इस पूजा को अपने बच्चों के खुशहाल जीवन के लिए करती हैं।

आंवला नवमी व्रत कथा आंवला नवमी की पौराणिक कथा अनुसार एक बार देवी लक्ष्मी पृथ्वी का भ्रमण करने आईं। रास्ते में उन्होंने अपने मन में भगवान विष्णु और शिव की एक साथ पूजा करने की कामना की। लक्ष्मी मां ने विचार किया कि विष्णु और शिव को एक साथ किस तरह से पूजा जा सकता है। तब उन्हें महसूस किया कि तुलसी और बेल की गुणवत्ता एक साथ आंवले के पेड़ में ही पाई जाती है। जहां तुलसी भगवान विष्णु की प्रिय है तो वहीं बेल पत्र भगवान शिव को प्रिय हैं। माता लक्ष्मी ने आंवले के पेड़ को भगवान विष्णु और शिव जी का प्रतीक मानकर उसकी विधि विधान पूजा की। पूजा से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु और शिव दोनों प्रकट हुए। लक्ष्मी माता ने आंवले के पेड़ के नीचे भोजन तैयार किया और भगवान विष्णु और भगवान शिव को परोसा। इसके बाद उन्होने उसी भोजन को प्रसाद रूप मे ग्रहण किया। कहते हैं जिस दिन यह घटना हुई थी उस दिन कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि थी। कहते हैं तब से ही परंपरा चली आ रही है।

आंवला नवमी पर दुर्लभ संयोग कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि पर वृद्धि और रवि योग समेत कई मंगलकारी संयोग बन रहे हैं। वृद्धि योग का संयोग सुबह 06 बजकर 17 मिनट लगभग से पूर्ण रात्रि तक है। साथ ही रवि योग दिन भर है। अक्षय नवमी पर शिववास योग का भी निर्माण हो रहा है। बता दें कि आंवला नवमी को अक्षय नवमी भी कहा जाता है।

सेवाभाव का अर्थ है किसी भी स्वार्थ या बदले की भावना के बिना दूसरों की निःस्वार्थ सेवा करना

यह एक ऐसी मानसिक स्थिति है, जिसमें व्यक्ति किसी लाभ की उम्मीद किए बिना दूसरों की मदद करता है, क्योंकि वह इसे अपना नैतिक कर्तव्य मानता है।

सेवाभाव के मुख्य पहलू: निःस्वार्थता: सेवा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह बिना किसी शर्त या बदले की उम्मीद के की जाती है।

मानवता: सेवाभाव मनुष्य को मानवता के प्रति प्रेम की भावना सिखाता है। यह व्यक्ति को संकीर्णता से ऊपर उठाकर सभी जीवों के प्रति करुणा का भाव जगाता है।

आध्यात्मिक विकास: कई धर्मों में, सेवा को एक आध्यात्मिक अभ्यास माना जाता है जो अहंकार को कम करता है और व्यक्ति को ईश्वर के करीब लाता है।

सकारात्मक प्रभाव: सेवाभाव समाज में सहयोग और एकता को बढ़ावा देता है। यह न केवल जिसे सेवा दी जा रही है, उसके लिए बल्कि सेवा करने वाले के लिए भी संतोष और आंतरिक शांति का स्रोत है।

सेवाभाव क्यों महत्वपूर्ण है?

सच्चा इंसान बनाता है: सेवाभाव मनुष्य को एक सच्चा और दयालु इंसान बनाता है। यह हमें जीवन के गहरे अर्थ का अनुभव कराता है।

आंतरिक आनंद का स्रोत: जब कोई व्यक्ति निस्वार्थ भाव से सेवा करता है, तो उसे एक खास तरह का आनंद और सुकून मिलता है, जो भौतिक सुख-सुविधाओं से नहीं मिल सकता।

नैतिक जिम्मेदारी: सेवाभाव हमें याद दिलाता है कि हम एक समाज का हिस्सा हैं और एक-दूसरे की मदद करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

सफलता की नींव: सेवाभाव को जीवन में कामयाबी की असल नींव भी माना गया है, क्योंकि यह व्यक्ति में सद्गुण और समर्पण को बढ़ावा देता है। संक्षेप में, सेवाभाव केवल दूसरों की मदद करने का कार्य नहीं है, बल्कि यह अपने अहंकार को त्यागकर मानवता के कल्याण के लिए खुद को समर्पित करने का एक तरीका है।

भारतीय नारी को सुरक्षा संरक्षण एवं शुद्ध सनातन संस्कार संबंधित

संपुर्ण देश दुनिया में मात्र भारतीय प्रत्येक नारी को ही महारानी कहां जाता है बल्कि अन्य देशों में शासक विशेष महिला को ही महारानी कहां जाता है जैसे ब्रिटिश आदि में शासक महिला को ही महारानी कहां जाता है एक बार श्रद्धेय विवेकानंद जी से विदेश में प्रशन किया गया था कि भारत में महिलाएं घुंघट और पुरुष प्रधान होने के कारण गुलाम की तरह जीवन व्यतीत करती है और पर पुरुषों से हाथ मिलाना भी पाप समझतीं है विदेशी ने आगे कहा हमारे यहां प्रत्येक महिला स्वतंत्रता से रहतीं हैं तब विवेकानंद जी ने कहा आपके देश में आपके देश की महारानी से प्रत्येक देशवासी पुरुष हाथ मिला सकता हैं क्या तब विदेशी व्यक्ति विशेष का जवाब था नहीं मिला सकते हैं तब विवेकानंद जी ने कहा भारतीय प्रत्येक नारी महारानी होती है और अपने पति को ही परमेश्वर मानती है और परपुरुष को छुना भी पाप समझतीं है क्योंकि विदेशी महिलाओं में सनातन शुद्ध संस्कारों जैसे संस्कार का अभाव है तभी वे अनेकानेक पर पुरुषों से अनैतिक संबंध बना लेती है जबकि भारतीय नारी अपने पातिव्रत धर्म में आध्यात्मिक उन्नति के साथ साथ आजीवन परम आनंद का अनुभव करती है एवं हमारे सनातन सत शास्त्रों में लिखा है कि पुत्री अपने पिताजी को भी दूर से प्रणाम करें पैर छुना निषेध हैं नारी मात्र अपने पति परमेश्वर के ही पैर छु सकतीं हैं अतः प्रति सनातनी नारी का कल्याण उसके पातिव्रत धर्म में ही निहित है लेकिन वर्तमान कलयुग में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण एवं माता-पिता के शुद्ध संस्कारों के अभाव के कारण वर्तमान भारतीय सनातनी नारियां भी वसुधैव कुटुंबकम सामुहिक सुसंगठित परिवार में समाज में ना रहकर उच्छृंखल स्वभाव के कारण जो घर की महारानी हुआ करती थी वह आजकल छोटी छोटी नोकरी लगकर पर पुरुषों के नेतृत्व में नोकरानी बन रही है जिस कारण उनका जीवन अत्यधिक दुखमय और कलह संघर्ष पुर्ण हो रहा है जिसके दोषी वर्तमान युवा पीढ़ी अधिकतर के माता-पिता व संरक्षक गण ही है क्योंकि वे स्वयं पाश्चात्य संस्कृति से ग्रस्त हैं और शराब मांस झुठ छल कपट बेईमानीअय्याशी रिश्वतखोरी को ही अपनी आन बान और शान समझते हैं जबकि उनके लड़के लड़कियां उन्हें देख देखकर संस्कार विहीन हो रहें हैं एक कवि ने घर परिवार समाज और राष्ट्र विशेष के मुखिया विशेष के लिए ठीक ही लिखा है कि न नायका नष्यंति, बहु नायका नष्यंति, अनुज नायका नष्यंति, स्त्री नायिका सर्व नष्यंति अतः मेरे बंधुओं अपने अपने घर परिवार के बालक बालिकाओं संरक्षक गणों व पारिवारिक मुखिया की स्वयं से स्वयं की जांच करें जैसे न नायका नष्यंति जिस घर परिवार समाज और राष्ट्र का कोई मुखिया नहीं होता है उस घर परिवार समाज और राष्ट्र का विनाश होगा, बहु नायका नष्यंति जिस घर परिवार समाज और राष्ट्र के सभी सदस्य नागरिक स्वयं को ही सर्वे सर्वा मुखिया माने तो उस घर परिवार समाज और राष्ट्र का विनाश होगा, अनुज नायका नष्यंति जिस घर परिवार समाज और राष्ट्र का मुखिया सबसे छोटा बन जाता है और अपने से बड़ों पर हुकुमत करता है उस घर परिवार समाज और राष्ट्र का विनाश ही होगा और स्त्री नायिका सर्व नष्यंति जिस घर परिवार समाज और राष्ट्र की मुखिया स्त्री बन जाती है उस घर परिवार समाज और राष्ट्र का जड़ामुल से संस्कारों का विनाश हो जाता है अतः प्रति घर परिवार समाज और राष्ट्र के नागरिकों का शुद्ध संस्कारित होना सनातन संस्कारों के अनुसार ही घर परिवार समाज और राष्ट्र का मुखिया होना चाहिए और एक कवि ने कहा है असंतुष्टा द्विज संतुष्टा महिभुज निर्लज्जा कुल वधु लज्जा गणिका सर्वनाश, जो ब्राह्मण असंतुष्ट होता है प्राप्त धन आदि से संतुष्ट नहीं होता है और जो राजा प्रजा के शासन से संतुष्ट होकर भोग और ऐश्वर्य में लग जाता है और घर की बहु बेटियां लाज शर्म छोड़कर उच्छृंखल हो जाती है और वेश्या लाज शर्म करती है इन सबका जो उपरोक्त कृत्य करने वाले हैं उन सबका समय काल के सर्वनाश हो जाता है अतः सनातन संस्कृति को मानने वाले अपने अपने घर परिवार और समाज की जांच करें और शुद्ध सनातन संस्कारों से सर्जित करें तभी घर परिवार समाज और राष्ट्र चंहु और खुशहाल सुदृढ़ शक्तिशाली और सुसंपन्न हो सकता हैं

पर्यावरण पाठशाला: फरीदाबाद से अयोध्या तक हरित संदेश की यात्रा — श्री हुकम सिंह जी का प्रेरक संकल्प

डॉ. अंकुर शरण

फरीदाबाद की पावन भूमि ने एक बार फिर यह साबित किया है कि सच्चे कर्मयोगी उम्र के नहीं, सोच के जवान होते हैं। सेवानिवृत्त पुलिस इंस्पेक्टर श्री हुकम सिंह जी ने एक ऐसा इतिहास रचने का संकल्प लिया है जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा। उन्होंने फरीदाबाद से अयोध्या तक साइकिल यात्रा की शुरुआत की है — जिसका उद्देश्य केवल श्रीराम दर्शन नहीं, बल्कि "हरित भारत, नशा मुक्त समाज और शांति पूर्ण जीवन" का संदेश देशभर में फैलाना है।

हरियाली और मानवता के संगम की यात्रा

डॉ. अंकुर शरण की पर्यावरण पाठशाला में बार-बार यह बात दोहराई जाती है कि प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता ही सच्चा राष्ट्रधर्म है। इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए श्री हुकम सिंह जी ने इस यात्रा को "हरित मिशन" का रूप दिया है।

वे कहते हैं —

"श्रीराम के दर्शन तो एक आस्था है, पर इस यात्रा का वास्तविक उद्देश्य हर व्यक्ति के मन में हरियाली और शांति की लौ जलाना है।"

साइकिल चलाना स्वयं में पर्यावरण के प्रति समर्पण का प्रतीक है। पेट्रोल-डीज़ल रहित यह यात्रा हमें याद दिलाती है कि छोटी-छोटी कोशिशें भी प्रदूषण मुक्त भारत की दिशा में बड़ा कदम बन सकती हैं।

नशा मुक्त भारत का संदेश

यात्रा के दौरान श्री हुकम सिंह जी और उनके साथी युवाओं को यह समझा रहे हैं कि नशा केवल शरीर नहीं, समाज की आत्मा को भी खोखला कर देता है। वे हर पड़ाव पर लोगों से कहते हैं —

"नशा छोड़िए, निश्छल जीवन अपनाइए। यही श्रीराम का सच्चा संदेश है।"

उनकी यह यात्रा एक प्रकार की चलती-फिरती पाठशाला बन गई है, जहाँ हर व्यक्ति सीख रहा है कि स्वस्थ जीवन ही सच्ची संपत्ति है।

अयोध्या — आस्था और प्रेरणा का संगम

यह यात्रा फरीदाबाद से प्रारंभ होकर आगरा, लखनऊ होते हुए अयोध्या तक पहुँचेगी। वहां श्री हुकम सिंह जी श्रीरामलला के दर्शन कर देश की शांति, सुख और समृद्धि की प्रार्थना करेंगे। उनका कहना है कि यह यात्रा धार्मिक होने के साथ-साथ सामाजिक चेतना की भी यात्रा है — जहाँ हर पैडल पर्यावरण के लिए प्रार्थना बन जाता है।

प्रेरणा के स्वरूप — श्री हुकम सिंह जी

पुलिस सेवा से सेवानिवृत्त होने के बाद भी श्री हुकम सिंह जी का जीवन अनुशासन, देशभक्ति और समाजसेवा की मिसाल है। जहाँ लोग रिटायरमेंट के बाद विश्राम चुनते हैं, वहाँ उन्होंने कर्म का मार्ग चुना — साइकिल पर सवार होकर प्रेरणा का प्रतीक बन गए।

उनका यह कदम युवाओं के लिए एक सजीव उदाहरण है कि "सेवा का कोई अंत नहीं, बस रूप बदलता है।"

वे बताते हैं कि पुलिस जीवन ने उन्हें अनुशासन और साहस सिखाया, अब वही ऊर्जा वे समाज और प्रकृति की सेवा में लगा रहे हैं। उनके इस अभियान में कई युवा जुड़ रहे हैं — जो उन्हें "हरित दूत" के रूप में देख रहे हैं।

एक संदेश

पर्यावरण पाठशाला के इस अध्याय में श्री हुकम सिंह जी की यात्रा हमें यह सिखाती है कि बदलाव का प्रारंभ स्वयं से होता है।

हर इंसान यदि एक संकल्प ले —

"मैं पर्यावरण के लिए कुछ करूंगा, नशे से दूर रहूंगा, और समाज में शांति फैलाऊंगा,"

तो भारत न केवल स्वच्छ बल्कि मानसिक रूप से भी स्वस्थ बन सकता है।

फरीदाबाद से अयोध्या तक यह यात्रा केवल किलोमीटरों की नहीं, बल्कि विचारों की दूरी को पाटने का प्रयास है — जहाँ भक्ति, सेवा और पर्यावरण एक साथ चलते हैं।

डॉ. अंकुर शरण
पर्यावरणविद्, लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञ एवं 'पर्यावरण पाठशाला' के संस्थापक
indiangreenbuddy@gmail.com

सरदार पटेल: मिट्टी को मातृभूमि में रूपांतरित करने वाला कर्मयोगी [वह लौह इच्छाशक्ति जिसने भारत को बाँध दिया एक सूत्र में]

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनका प्रभाव समय की सीमाओं को लांघ जाता है — जो केवल अपने युग के नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए दिशा-स्रोत बन जाते हैं। सरदार वल्लभभाई पटेल ऐसा ही एक नाम हैं। जब भारत गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, जब जाति, प्रांत और रियासतों की दीवारें राष्ट्र की आत्मा को टुकड़ों में बाँट रही थीं, तब एक लौ प्रज्वलित हुई — जो न तो किसी कुर्सी की आकांक्षा में थी, न किसी ताज की चाहत में। वह लौ थी "लौहपुरुष" सरदार पटेल की। 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में जन्मे वल्लभभाई पटेल ने अपने जीवन को इस मिट्टी की एकता, अखंडता और अस्मिता को समर्पित कर दिया।

उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की साधना के रूप में देखा। बचपन में वे गांव की छोटी-छोटी समस्याओं का हल इतनी सूझ-बूझ से निकालते थे कि लोग उन्हें 'सरदार' कहकर बुलाने लगे थे। शायद किसी के भीतर छिपे नेतृत्व का यह पहला संकेत था। युवावस्था में वकालत की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए और वहाँ से लौटकर अहमदाबाद में वकालत शुरू की। कहा जाता है कि वे इतने सटीक और दृढ़ तर्क प्रस्तुत करते थे कि न्यायाधीश भी उनकी दलीलों से प्रभावित हो जाते थे। लेकिन यह व्यक्ति केवल कानून की किताबों तक सीमित नहीं था; उसके भीतर देशभक्ति का ज्वार उमड़ रहा था।

महात्मा गांधी के आह्वान पर जब स्वतंत्रता आंदोलन ने स्वर पकड़ा, तो पटेल ने अपनी सारी सुख-सुविधाओं को त्याग दिया और किसानों, मजदूरों और आम जन के बीच उतर आए। 1918 में खेड़ा सत्याग्रह और 1928 में बारडोली सत्याग्रह उनके नेतृत्व कौशल की ऐसी मिसालें हैं जो इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज हैं। बारडोली के किसानों ने जब लगान बढ़ोतरी का विरोध किया और ब्रिटिश सरकार से टकराने का साहस दिखाया, तब पटेल उनके साथ खड़े रहे। सरकार को अंततः झुकना पड़ा और बारडोली के किसानों की जीत हुई। उसी संघर्ष के बाद उन्हें "सरदार" की उपाधि मिली — जो उनके व्यक्तित्व की सबसे सटीक परिभाषा है।

लेकिन उनके जीवन का सबसे कम चर्चित, किंतु सबसे निर्णायक अध्याय वह था जब भारत को स्वतंत्रता मिली और देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी — विभाजित भूगोल और विखंडित रियासतों को एक सूत्र में पिरोना। ब्रिटिश शासन से आज़ादी तो मिल गई थी, लेकिन 565 रियासतें स्वतंत्र भारत में मिलना नहीं चाहती थीं। यह कार्य इतना जटिल था कि कई विदेशी पर्यवेक्षक मानते थे कि भारत जल्द ही अनेक छोटे-छोटे देशों में बंट जाएगा। परंतु सरदार पटेल ने यह होने नहीं दिया। अपने अदम्य साहस, राजनयिक कौशल और दृढ़ इच्छाशक्ति से उन्होंने 562 रियासतों को भारतीय संघ में मिला लिया — वह भी बिना किसी बड़े युद्ध के। केवल हैदराबाद और जूनागढ़ में सैन्य कार्रवाई करनी पड़ी, परंतु वह भी पूरी निपुणता और संयम के साथ।

इतिहास के इस महत्त्वपूर्ण प्रसंग में एक आश्चर्यजनक तथ्य प्रायः अनदेखा रह जाता है—कि सरदार पटेल ने यह समग्र एकीकरण प्रक्रिया मात्र छह माह की अल्पावधि में पूर्ण कर ली थी। यदि उन्होंने यह कार्य टाल दिया होता या किसी राजनीतिक दबाव में आते, तो आज भारत की भौगोलिक आकृति बिल्कुल अलग होती। यह उनकी दूरदर्शिता का ही परिणाम था कि आज हम उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक एक भारत के रूप में खड़े हैं। उन्होंने उस समय कहा था — "यह भूमि केवल मिट्टी नहीं है, यह हमारी माता है। इसका एक-एक अंश हमारे अस्तित्व से जुड़ा है।"

राजनीतिक सूझ-बूझ के साथ-साथ उनके भीतर गहरी मानवीय संवेदना भी थी। वे जानते थे कि स्वतंत्रता केवल झंडा फहराने से नहीं आती; इसके लिए अनुशासन, संगठन और एकता की आवश्यकता है। इसी सोच ने उन्हें आधुनिक भारत का "स्थापक पुरुष" बना दिया।

आज़ादी के बाद उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा को संरक्षित रखने का निर्णय लिया, जिससे देश के प्रशासन की रीढ़ मजबूत बनी रही। यह निर्णय उस समय विवादित था, लेकिन इतिहास ने सिद्ध कर दिया कि यही भारत की स्थिरता का सबसे बड़ा आधार बना।

आज के भारत में, जब हम सरदार पटेल को याद करते हैं, तो अक्सर उनके योगदान को केवल 'एकता' शब्द में समेट देते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि उनकी दृष्टि में "एकता" केवल राजनीतिक अवधारणा नहीं थी, बल्कि सांस्कृतिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक चेतना थी। वे मानते थे कि विविधता में एकता ही भारत की आत्मा है। उन्होंने कभी किसी धर्म, जाति या क्षेत्र के आधार पर भेद नहीं किया; उनके लिए भारत एक जीवित परिवार था, जिसमें हर प्रांत, हर भाषा, हर व्यक्ति समान रूप से महत्वपूर्ण था।

2014 में जब भारत सरकार ने 31 अक्टूबर को "राष्ट्रीय एकता दिवस" घोषित किया, तो यह मात्र एक औपचारिक स्मृति-समारोह नहीं था, वरन् राष्ट्र की चेतना में एक गहन नैतिक पुनर्जागरण का संकल्पपूर्ण आह्वान था। इस पावन दिवस पर देशव्यापी "रन फॉर यूनिटी", "एकता प्रतिज्ञा" तथा "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" जैसे कार्यक्रम आयोजित होते हैं। यह दिवस हमें बारंबार स्मरण कराता है कि यदि उस लौहपुरुष ने अटल संकल्प और अदम्य इच्छाशक्ति न दिखाई होती, तो आज का भारत शायद असंख्य खंडों में विखंडित होता।

एक और दुर्लभ एवं प्रेरणादायक तथ्य यह है कि सरदार पटेल ने जीवन में कभी प्रधानमंत्री बनने की लालसा नहीं की। जब कांग्रेस की अधिकांश प्रांतीय समितियों ने उन्हें प्रधानमंत्री पद के लिए सर्वसम्मति से चुना था, तब भी उन्होंने महात्मा गांधी के एकमात्र सुझाव पर अपना नाम वापस ले लिया और पंडित नेहरू के नेतृत्व को पूर्ण हृदय से स्वीकार किया। यह अतुलनीय त्याग उस महामानव की उदारता और राष्ट्रप्रेम का जीवंत प्रमाण है, जो स्वयं से ऊपर केवल भारत को देखता था।

आज जब नर्मदा के तट पर सरदार पटेल की 182 मीटर ऊँची भव्य प्रतिमा—"स्टैच्यू ऑफ यूनिटी"—गगनचुंबी खड़ी है, तो वह मात्र एक स्थापत्य-कृति नहीं, अपितु भारत की अखंड आत्मा का जीवंत प्रतीक है। यह हमें सतत स्मरण कराती है कि सच्चा नेता वही है जो विखंडन में समन्वय रचे, भय के अंधकार में साहस की ज्योति जलाए, और वैचारिक मतभेदों पर एकता का सेतु बनाए।

सरदार पटेल का जीवन हमें यह अमर शिक्षा देता है कि राष्ट्र की सच्ची सेवा शब्दों की गूँज से नहीं, कर्म की ठोस धरती पर होती है। उन्होंने उद्घोष किया था—"हमारी एकता हमारी शक्ति है, और हमारी असहमति हमारी कमजोरी।" यह कथन आज भी 1947 जितना ही सटीक, प्रासंगिक और प्रेरणादायक है। 31 अक्टूबर मात्र एक कैलेंडर-तिथि नहीं, अपितु भारतीय एकता की जागृत चेतना का राष्ट्रीय उत्सव है। यह वह पावन अवसर है जब हम न केवल एक महापुरुष को श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं, वरन् उस अमर विचारधारा को नमन करते हैं जिसने खंडित भारत को अखंड राष्ट्र का स्वरूप प्रदान किया। जब तक इस पवित्र मातृभूमि पर प्राणी श्वास लेंगे, सरदार पटेल का नाम "भारत की एकता के शाश्वत संरक्षक" के रूप में इतिहास के सुनहरे पृष्ठों पर अमिट रहेगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

प्रत्येक मनुष्य को श्रवण करनी चाहिए श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा : स्वामी रामप्रपन्नाचार्य महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। राम नगर कॉलोनी स्थित आचार्य कुटी आश्रम (श्रीकृष्ण मंदिरम दिव्यादेश) में प्रमुख समाजसेवी स्व. रोशन सिंह राजपूत की पुण्य स्मृति में सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ प्रारंभ हुआ।जिसके अंतर्गत व्यासपीठ पर आसीन प्रख्यात संत श्रीमज्जगद्गुरु स्वामी रामप्रपन्नाचार्य महाराज ने अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा देश-विदेश से आए समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण के महात्म्य की कथा श्रवण कराई।

व्यासपीठ से श्रीमज्जगद्गुरु स्वामी रामप्रपन्नाचार्य महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत महापुराण एक ऐसा ग्रन्थ है,जिसके श्रवण से मनुष्य कामना रहित होकर प्रभु की निष्काम भक्ति को प्राप्त करता है।मनुष्य योनि के लिए इस ग्रन्थ का श्रवण, वाचन व अध्ययन तीनों की मंगलकारी व कल्याणकारी है।इसलिए प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में कम से कम एक बार श्रीमद्भागवत महापुराण की अमृतमयी कथा अवश्य श्रवण करनी चाहिए।

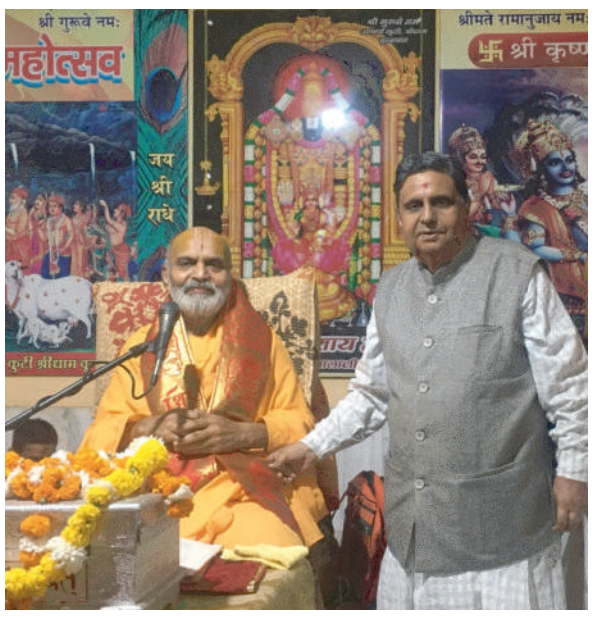

इस अवसर पर इस अवसर पर साहित्य संस्कृति मनीषी,₹यूपी रत्न ₹ डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट, श्रीमती रामेती बाई राजपूत (मडगुला वाली), श्रीमती शशि-भानुप्रताप सिंह (जबलपुर), श्रीमती सुनीता-अरविंद सिंह बघेल (उदयपुरा), श्रीमती कृष्णा-नेपाल सिंह राजपूत (नरसिंहपुर), अकांशा, गिरिराज सिंह, शुभम सिंह, सृष्टि, सत्यम सिंह, शुभ सिंह, ऋचा, भरत सिंह, रिया (मंजरी), कौशलेंद्र सिंह, सुरभि, हितेन्द्र सिंह (शनि), जिया, परि, राघव, हेतांश, हिमांशु, धर्मगुरु गोविन्द प्रकाश वाजपेई (कानपुर), डी. एस. राजपूत, रामाजी, डॉ. राधाकांत शर्मा, अर्जुन दास, जीतू पाण्डेय, सुदर्शनाचार्य, मुन्ना लाल कुलश्रेष्ठ आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

भारतीय वैश्य एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

कासगंज के गंजडुंडवारा नगर में अखिल भारतीय वैश्य एकता परिषद की बैठक आयोजित की गई। आज बुधवार की देर शाम लगभग 8 बजे सुदामापुरी रोड स्थित अमित प्रकाश महाजन के कैंप कार्यालय पर हुई इस बैठक में अखिल भारतीय वैश्य एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सुमंत कुमार गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए।

इस अवसर पर व्यापार मंडल के नगर अध्यक्ष अमित प्रकाश महाजन और सुरेश चद्र आर्य जी ने डॉ. सुमंत कुमार गुप्ता का माला, पटुका और धार्मिक पुस्तक गीता भेंट कर सम्मान किया।

बैठक के दौरान डॉ. सुमंत कुमार गुप्ता ने बताया कि हरिद्वार में 8 और 9 नवंबर को राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने सभी सदस्यों से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर वैश्य एकता का परिचय देने का आग्रह किया।

डॉ. सुमंत कुमार गुप्ता ने यह भी कहा कि अखिल भारतीय वैश्य एकता परिषद के रसरकार से चुनाव में 10 प्रतिशत।

माँ और प्रकृति

माँ हर सुबह निकलती है,
आसमान के रंग संग।
एक बोझा लकड़ी का सपना,
एक विश्वास — जीवन का ढंग।

पगडंडियाँ पहचानती हैं उसके पाँव,
झरनों की भाषा समझती है।
वो जंगल से माँगती नहीं कुछ,
बस सूखी टहनी चुनती है।

पहाड़ लाँघती है सहज भाव से,
मानो धरती उसकी सहेली हो।
थकान नहीं, करुणा चलती,
उसके कदमों की रेली हो।

मैं पूछता हूँ — "माँ, क्यों इतना श्रम?"
वो मुस्कुराती, कहती नम्र स्वर में —
"जंगल छानती हूँ,
सिर्फ़ सूखी लुकड़ियों के लिए।
कहीं काट न दूँ कोई ज़िंदा पेड़!"

उस क्षण लगा —
माँ ही तो धरती है,
जो जलती भी है,
पर जीवन बचाती भी है।

– डॉ. सत्यवान सौरभ

जब चाँद हासिल हो जाता है...

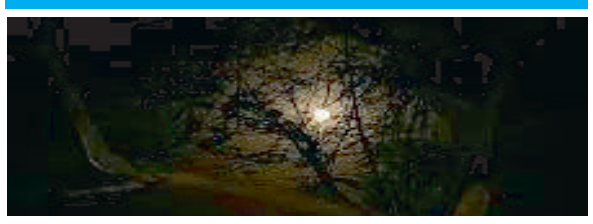

जब तक चाँद आसमान में था,
वह सपना था —
हर रात के सन्नाटे में
आशा की एक उजली बूँद-सा
टपकता था।

उसकी ओर देख
मन में एक मीठी अधूरी चाह
उठती थी —
कि बस एक बार उसे छू लूँ,
अपने हिस्से की रौशनी पा लूँ।

पर जब चाँद पास आया,
जब उसकी ठंडक हथेलियों पर
उतरी —
तो लगा, वह भी साधारण है,
थोड़ा रुखा, थोड़ा अधूरा।

अब उसकी चमक में वो मोह नहीं,
वो आकर्षण नहीं,
जिसकी खातिर रातें जागी थीं।
हर खूबसूरती, जब मिल जाती है,
तो अपनी जादूगरी खो देती है।

शायद इसलिए प्रेम दूर से सुंदर लगता है,
और हासिल होकर थक जाता है।
शायद इसलिए
चाँद को आकाश में रहना चाहिए —
और हमें उसकी ओर
सिर्फ़ देखना चाहिए।

– डॉ0 प्रियंका सौरभ

अवैध वसूली के आरोपी अधिवक्ता अखिलेश दुबे की जमानत हाई कोर्ट से खारिज

सुनील बाजपेई

कानपुर। फर्जी मुकदमे दर्ज कराकर लोगों से लाखों करोड़ों वसूलने की आरोपी अधिवक्ता अखिलेश दुबे की हाई कोर्ट से जमानतखारिज कर दी गई है। कोर्ट ने माना है कि में मोटी रकम हड़पने के इरादे से निर्दोष लोगों को झूठे मुकदमे में फंसाने का केंद्र बिंदु अखिलेश दुबे ही है।

हाई कोर्ट की न्यायाधीश संतोषराय द्वारा की गई टिप्पणी के मुताबिक सभी तथ्यों को जोड़ा जाए तो अखिलेश ही मुख्य आरोपी दिखता है। हाई कोर्ट ने यह माना कि जमानत मिलने पर अखिलेश अधिवक्ता पेशे का दुरुपयोग कर साक्ष्यों से छेड़छाड़ करने के साथ ही गवाहों को भी धमका सकता है।

इस बारे में बताते चलें कि भाजपा नेता रवि सतीजा ने बर्रा थाने में दुबे के खिलाफ रंगदारी वसूलने की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस ने छह अगस्त को अखिलेश को गिरफ्तार कर जेल भेजा था।

जानकारी के मुताबिक सेशन कोर्ट से जमानत अर्जी खारिज होने के बाद अखिलेश ने हाईकोर्ट में जमानत याचिका दाखिल की। सुनवाई के दौरान अखिलेश के अधिवक्ता ने झूठा फंसाए जाने का तर्क रखा। वहीं अभियोजन की ओर से तर्क रखा गया कि रंगदारी के संबंध में सुशील त्रिवेदी ने भी गवाही दी है। इसी के साथ अखिलेश दुबे के खिलाफतीन दर्जन से अधिक शिकायतें जांच की प्रक्रिया से गुजर रही है जिन पर भी मुकदमे दर्ज कराए जाने की संभावना बताई गई है।

पत्नियां सावधान रहें ?- हाईकोर्ट का फैसला - बुज़ुर्ग सास-ससुर के साथ दुर्व्यवहार ,झगड़ा-विवाद या उपेक्षा करना मानसिक क्रूरता माना जाएगा ,जो तलाक का आधार बन सकता है

हिन्दू मैरिज एक्ट,1955 की धारा 13(1)(ia) में अब बुज़ुर्ग सास-ससुर के साथ दुर्व्यवहार, झगड़ा-विवाद या उपेक्षा करना मानसिक क्रूरता माना जाएगा
पत्नी द्वारा पति के वृद्ध माता- पिता के प्रति संवेदनशीलता नहीं दिखाना,उनकी स्वास्थ्य-स्थिति की जानकारी में उदासीनता,
उत्तरदायित्व की अनदेखी, ये विवाह संबंधी क्रूरता के रूप में स्वीकार करना शानदार फैसला – **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत आदि अनादि क़ाल से संयुक्त परिवारों में बना-बसा रहा है, जबकि विदेशों में यह प्रथा बहुत कम देखने को मिलती है? इस प्रश्न का उत्तर सिर्फ सामाजिक-आर्थिक कारणों तक सीमित नहीं है,बल्कि इसमें ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा वैधानिक घटक सम्मिलित हैं।भारत में पारंपरिक रूप से कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था रही है, जहाँ जमीन-सम्पत्ति, श्रम, उपजी तथा आय परिवार-स्तर पर साझा होती थी।एक बड़े घर-परिवार (पिता-दादा-सास-ससुर-भाई-बहन- पति -पत्नी-बच्चे) से संसाधन-वितरण, काम-वितरण और सुरक्षा-नेटवर्क (जोड़-तोड़ व आर्थिक संकट में सहायता) अधिक सुगम होता था। इसके परिणामस्वरूप, 'संयुक्त परिवार' सामाजिक रूप से गढ़ा गया। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि इसके अतिरिक्त, हिन्दू परम्पराओं में पिता-दादा का पारिवारिक प्रधान होना वंश- परम्परा की निरंतरता, संपत्ति- विरासत का साझा स्वभाव, तथा वृद्धों- का परिवार में सम्मान व देखभाल का सामाजिक मान-दंड रहा है। इसके विपरीत अनेक पश्चिमी देशों में ऐसे में संयुक्त परिवार-प्रथा बहुत कम विकसित हुई। लेकिन यह प्रथा आज भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं है, आधुनिक जीवनशैली, आर्थिक-स्वतंत्रता, शहरीकरण, अलग रहने की प्रवृत्ति तथा सामाजिक अपेक्षाएँ बदल रही हैं। इसलिए, आज 'संयुक्त परिवार' का आधार कमजोर होते हुए दिख रहा है, और इस परिवर्तन-प्रक्रिया का प्रभाव विवाह-परिवार-वृद्ध देखभाल संबंधी कानूनो नियामक आयामों पर भी पड़ रहा है। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हाल ही में दिल्ली हाईकोर्ट ने एक फैसला दिया है क़ि, हिन्दू मैरिज एक्ट,1955 की धारा 13(1)(ia) में "ऐसा व्यवहार कि पति या पत्नी के मानसिक स्वास्थ्य स्वाभिमान या अस्तित्व पर ऐसा प्रभाव पड़ता हो कि विवाह चलना असंभव या अस्वीकार्य हो जाए" जैसे गुण- दोष हैं। इस प्रकार में, यदि पत्नी अपने सास-ससुर की देखभाल नहीं करती, उनके प्रति उपेक्षित व्यवहार करती है, उनकी स्वास्थ्य - स्थिति की जानकारी में उदासीनता, उत्तरदायित्व की अनदेखी ,विवाद उत्पन्न करती है, या अपमानजनक तथा निंदनीय भाषा-व्यवहार करती है,तो यह "मानसिक क्रूरता" के अंतर्गत आता है। यानें अब बुजुर्ग सास-ससुर के साथ दुर्व्यवहार, झगड़ा-विवाद या उपेक्षा करना मानसिक क्रूरता माना जाता है, जो तलाक का आधार बन सकता है। यह प्रत्यक्ष रूप से उन नीतियों-विधियों एवं क़ानूनों से जुड़ा है जो विवाह-संबंधों में "मानसिक क्रूरता" (मेन्टल क्रूएल्टी) को एक मान्य तलाक- कारण के रूप में स्वीकार करते हैं।

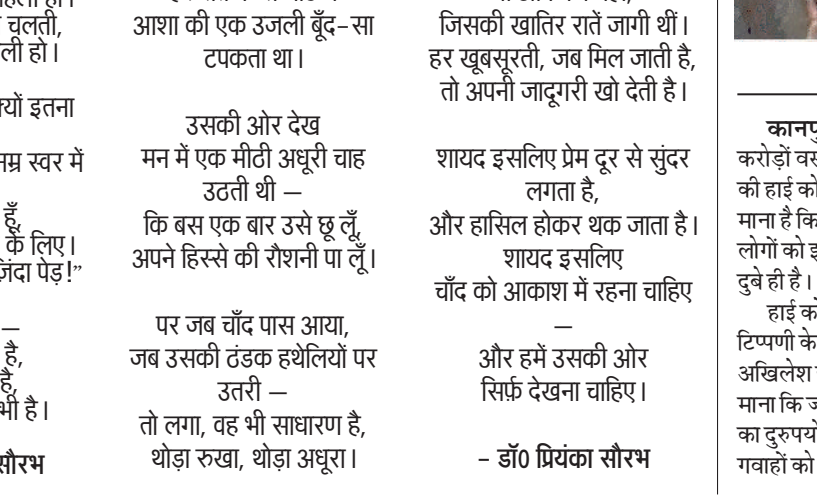

साथियों बात अगर हम दिल्ली हाई कोर्ट के केस नंबर एमएटी एपीपी 8/2022 पर दिनांक 19 सितंबर 2025 को माननीय दो जजों की बेंच ने 28 पुष्टों में दिए जजमेंट की करें तो दिल्ली हाई कोर्ट ने पारिवारिक अदालत के उस आदेश के खिलाफ पत्नी की अपील को खारिज कर दिया, जिसमें 'क्रूरता' के आधार पर पति नें तलाक दिया गया था। पति- पत्नी की शादी मार्च 1990 में हुई थी और 1997 में उनका एक बेटा हुआ। पति के आरोप हैं कि बीवी संयुक्त परिवार में रहने को तैयार नहीं थी। बिना अनुमति के अक्सर वैवाहिक घर छोड़ देती थी और 2008 से वैवाहिक संबंधों से दूर हो गई थी। यही नहीं,पति और उसके परिवार पर संपत्ति अपने नाम ट्रांसफर करने का दबाव डालती थी।जब पति ने 2009 में तलाक मांगा,तो पत्नी ने उनके खिलाफ कई आपराधिक मामले दर्ज करा दिए। पारिवारिक अदालत ने तलाक इस आधार पर दिया था कि पत्नी का लंबे समय तक साथ रहने से इनकार करना और बदले की भावना से झूठी शिकायतें (एफआईआर) दर्ज कराना मानसिक क्रूरता है। अपील में पत्नी का तर्क था कि निचली अदालत ने उन सबूतों पर भरोसा किया जो कागजात में नहीं थे और दहेज उत्पीड़न तथा दुर्व्यवहार के उसके आरोपों को नजरअंदाज किया।उसने दावा किया कि उसकी आपराधिक शिकायतें सच्ची थीं,बदले की भावना से नहीं की गई थीं। दिल्ली हाई कोर्ट को पत्नी के दावों में कोई दम नहीं लगा। कोर्ट ने फैसला सुनाया कि लंबे समय तक वैवाहिक संबंध से इनकार और सास ससुर और पति को बार-बार परेशान करने वाले काम हिंदू विवाह अधिनियम 1955 के तहत मानसिक क्रूरता हैं।यदि पत्नी पति तथा सास-ससुर के बीच झगड़ा कराती है, उनके- उनके प्रति ध्यान नहीं देती, उपेक्षा करती है,अपमानजनक या निंदनीय आरोप लगाती है, मार-पीट करती है या अपमान जनक भाषा का प्रयोग करती है,तो वह व्यवहार मानसिक क्रूरता माना जाएगा। कोर्ट ने कहा कि "संपूर्ण हिन्दू संयुक्त परिवारर में माता-पिता एक अभिन्न अंग होते हैं, तथा जीवनसाथी द्वारा उनके प्रति उदासीनता या बेरुखी दिखाना विवाह-विवाद के संदर्भ में 'क्रूरता' के दायरे को और बढ़ा देता है।

साथियों बात अगर हम इस महत्वपूर्ण जजमेंट क़े सामाजिक - वैधानिक विश्लेषण को समझने की करें तो,इस निर्णय का दोनों- आयामों में महत्त्व है। पहले सामाजिक पक्षः भारत में जहां संयुक्त-परिवार-प्रथा आम है, वहाँ वृद्धों की देखभाल और परिवार- सदस्यों द्वारा उनका सम्मान व उत्तरदायित्व निभाना अपेक्षित रहा है।यदि जीवनसाथी इस दायित्व को स्वीकार नहीं करता, तो एक सामाजिक- नैतिकअपेक्षा टल जाती है और पारिवारिक संतुलन बिगड़ता है। साथ ही, जब सास-ससुर जैसी वृद्ध- पदस्थ व्यक्तियों के प्रति उदासीनता हो,तो यह सिर्फ घरेलू अनुकूलता का प्रश्न नहीं बल्कि पारिवारिक संरचना पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए, कोर्ट ने यह स्पष्ट किया कि वृद्ध माता-पिता परिवार के "अभिन्न अंग" हैं, केवल सह-निवासी नहीं।इस तरह इस निर्णय ने एक तरह से यह संदेश दिया है कि विवाह सिर्फ पति-पत्नी का संबंध नहीं है, बल्कि उस संबंध में (विशेषकर हिन्दू-परिप्रेक्ष्य में) ससुराल-परिवार, माता-पिता, संयुक्त-परिवार-सदस्यों के प्रति जिम्मेदारियाँ भी सम्मिलित हैं। यदि जीवनसाथी उन जिम्मेदारियों को निभाने में नाकाम रहे,तो उस व्यवहार को कानूनी रूप से क्रूरता माना जा सकता है।

साथियों बात अगर हम इस जजमेंट को अन्तर्राष्ट्रीयदृष्टिकोण से देखें, तो विवाह-दोस्त-परिवार -संरचना-के संबंध में पश्चिमी देशों और भारत के बीच अंतर पाया जाता है।जैसे कि संयुक्त-परिवार-प्रथा पश्चिमी देशों में इतनी प्रचलित नहीं है,इसलिए वहाँ "सास-ससुर देखभाल या "संयुक्त-वृद्ध-पदस्थ सदस्य- सदस्यता" जैसी अपेक्षाएँ इतनी ज़ोर से सामाजिक रूप से नहीं पाई जातीं। परिणामस्वरूप, वहाँ विवाह-क्रूरता के मामलों में प्रमुखतः अपेक्षित-देखभाल -उपेक्षा- वृद्ध-सदस्यों-की उपेक्षा जैसे तर्क कम-मिलते हैं।भारत में इस तरह की सामाजिक- पारिवारिक संरचना रहने के कारण, उपरोक्त निर्णय में वृद्ध-ससुराल-देखभाल-उपेक्षा-का आयाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है।इस दृष्टि से,भारत-जैसी संरचनाओं वाले समाजों में इस तरह का कानूनी निर्णय विशेष प्रेरणा देता है,कि पारिवारिक जिम्मेदारियों को सिर्फ सामाजिक -मानदंड नहीं, बल्कि कानूनी-अनिवार्यता के रूप में देखा जा सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि, भारत में 'संयुक्त- परिवार' का गढ़ना उस सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का परिणाम है जहाँ वृद्ध-सदस्यों के कार्य, वस्तु व सम्मान-संबंधी पारिवारिक दायित्वों का सांस्कृतिक आधार रहाहै।आज जब आधुनिक जीवनशैली -शहरीकरण-स्वतंत्रता जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तो इन पारंपरिक संरचनाओं में तनाव उत्पन्न हो रहा है। ऐसे समय में दिल्ली हाई कोर्ट का ताज़ा निर्णय,जिसमें सास-ससुर के प्रति उपेक्षा-उदासीनता को 'मानसिक क्रूरता' मानकर तलाक-का आधार बताया जानासामाजिक -वैधानिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।यह निर्णय जीवन साथियों तथा परिवार- सदस्यों को स्पष्ट संदेश देता है कि वृद्ध-सदस्यों-के-प्रति व्यवहार -उपेक्षा-संवेदनहीनता सिर्फ नैतिक दृष्टि से नहीं,बल्कि कानूनी दृष्टि से भी विवाह संबंध को प्रभावित कर सकती है।

नर्मदा की लहरों से महाकाल की ज्योति तक: मध्यप्रदेश का महायात्रा गान

भारत की विशाल छाती में बसा मध्यप्रदेश वह जीवंत हृदय है, जहाँ प्राचीनता की गहराई और आधुनिकता की उड़ान एक साथ साँस लेती हैं, जहाँ हर कण में इतिहास की गरिमा और हर क्षण में भविष्य की उमंग समाहित है। यह भूमि केवल भूगोल की रेखाएँ नहीं, बल्कि भावनाओं की अनंत धारा है, जो राष्ट्र की आत्मा को पोषित करती है। मध्यप्रदेश स्थापना दिवस उस अमर यात्रा का उत्सव है, जिसमें संघर्ष की लौ से प्रगति की ज्योति जली, और परंपरा की जड़ों से विकास के पंख फूटे। यह वह पर्व है जो हमें याद दिलाता है कि यह प्रदेश भारत का केंद्र बिंदु नहीं, बल्कि उसकी धड़कन है—जीवंत, अटल और प्रेरणादायक।

इस पवित्र धरती की महिमा उसके प्राचीन अवशेषों में छिपी है, जहाँ भीमबेटका की गुफाएँ मानवता के प्रथम कलाकारों की उँगलियों से उकेरे गए चित्रों से सजी हैं, जो सहस्राब्दियों पुरानी सभ्यता की गवाही देती हैं। साँची का स्तूप बुद्ध की करुणा की शाश्वत भाषा बोलता है, खजुराहो के मंदिर प्रेम की उत्कृष्ट शिल्पकला से जीवन की उत्कटता को अमर बनाते हैं, जबकि उज्जैन का महाकालेश्वर मंदिर समय की सीमाओं को लाँघकर सनातन सत्य की झंकार पैदा करता है। यहाँ की नर्मदा नदी माँ की तरह बहती है, चंबल की घाटियाँ रहस्यों से भरी हैं, सतपुड़ा की हरियाली जीवन की सततता का प्रतीक है, और बुंदेलखंड की मिट्टी वीरता की कहानियाँ सुनाती है। मध्यप्रदेश की यह विविधता उसे एक जीवंत कैनवास बनाती है, जहाँ प्रकृति और संस्कृति का रंग इतनी सहजता से मिलते हैं कि पत्थर भी काव्य बन जाते हैं, और वन भी संगीत की लय में झूमते हैं।

यह प्रदेश अपनी मिट्टी की सुगंध से नहीं, बल्कि उसके निवासियों की संकल्प शक्ति से पहचाना जाता है। यहाँ का किसान खेतों में पसीने की बूँदों से अन्न की सोने जैसी फसल उगाता है, युवा उद्यमी स्टार्टअप की चिंगारियों से नवाचार की आग जलाते हैं, महिलाएँ लाड़ली लक्ष्मी और बेटी बचाओ जैसी योजनाओं से सशक्त होकर समाज की धुरी बनती हैं, और हर नागरिक राष्ट्रप्रेम की उस अग्नि से प्रज्वलित है जो स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज की आत्मनिर्भरता तक जल रही है। मध्यप्रदेश में श्रम को देवत्व प्राप्त है, जहाँ मेहनत की हर बूँद विकास की नदी में समा जाती है। यह वह भूमि है जहाँ ग्रामीण की सादगी और शहरी की चमक एक साथ चमकती हैं, जहाँ परंपरा आधुनिकता की गोद में खेलती है।

इतिहास की गहराइयों में डूबकर देखें तो मध्यप्रदेश शौर्य और बुद्धि का अनुपम संगम है। राजा भोज की विद्या ने परमार वंश को अमर बनाया, रानी दुर्गावती की तलवार ने गोंडवाना की स्वतंत्रता की रक्षा की, तात्या टोपे की क्रांति ने 1857 की ज्वाला को भड़काया, और चंद्रशेखर आजाद की बलिदानी आत्मा ने स्वाधीनता की मशाल जलाई। रानी अहिल्याबाई होल्कर की न्यायप्रियता ने मालवा को सुशासन का आदर्श दिया, जबकि पंडित रविशंकर शुक्ल की दूरदृष्टि ने आधुनिक मध्यप्रदेश की नींव रखी। यहाँ की माटी ने कवि कालिदास को जन्म दिया जिनकी रचनाएँ विश्व साहित्य की धरोहर हैं, और तानसेन की रागिनियाँ आज भी ग्वालियर की हवाओं में गूँजती हैं। मध्यप्रदेश केवल घटनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि प्रेरणा का स्रोत है—जहाँ हर युग की महानता नई पीढ़ी को ऊर्जा देती है।

आधुनिक युग में मध्यप्रदेश ने परंपरा को प्रगति की तेज रफ्तार रेल पर सवार कर, एक अनूठी मिसाल कायम की है। इंदौर का स्वच्छता अभियान पूरे राष्ट्र को साफ-सफाई का जीवंत पाठ पढ़ा रहा है, जबकि भोपाल की चमकती झीलें और घने वन पर्यावरण संरक्षण की अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक बनकर हरियाली की गाथा गा रहे हैं। ग्वालियर का संगीत महोत्सव सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रखता है, जबलपुर की रक्षा इकाइयाँ और शैक्षणिक केंद्र राष्ट्रीय सुरक्षा व ज्ञान की अडिग नींव मजबूत कर रहे हैं। उज्जैन का सिंहस्थ मेला अध्यात्म को वैश्विक मंच पर चमकाता है, तो सांची और खजुराहो जैसे धरोहर स्थल पर्यटन की धारा से अर्थव्यवस्था को नई उड़ान दे रहे हैं। प्रदेश की सड़कें अब चौड़े राजमार्गों में तब्दील हो चुकी हैं, रेल व हवाई संपर्क ने दूरियों को मिटाया है, और डिजिटल इंडिया की लहर गाँव-गाँव तक पहुँचकर हर हाथ को सशक्त बना रही है। यह विकसित मध्यप्रदेश की यात्रा ईंट-पत्थर की नहीं, बल्कि सपनों, संकल्पों और अटूट इच्छाशक्ति की है—जहाँ हर शहर अपनी अनुपम विशिष्टता से जगमगाता है, मगर समग्रता में एकता की सुंदर माला गूंथता है।

विकास की इस प्रखर धारा में मध्यप्रदेश अग्रणी बनकर उभरा है, जहाँ नर्मदा बचाओ आंदोलन से नर्मदा घाटी परियोजनाओं तक जल संरक्षण की अनुपम मिसालें स्थापित हुईं। बुंदेलखंड की प्यासी भूमि को सिंचाई योजनाओं ने हरा-भरा कर दिया, सतपुड़ा की खदानें ऊर्जा के अथाह स्रोत बनकर चमक रही हैं, और मालवा की उर्वर मिट्टी सोयाबीन-गेहूँ की वैश्विक राजधानी के रूप में फल-फूल रही है। उद्योगों की तेज हवा ने निवेश की बाढ़ ला दी—फार्मा हब इंदौर, ऑटोमोबाइल क्लस्टर पिथमपुर, आईटी पार्क भोपाल—ये सब आत्मनिर्भर भारत के मजबूत स्तंभ हैं। किसान सम्मान निधि ने खेतों को मजबूती दी, स्टार्टअप इंडिया से युवा उद्यमी आसमान छू रहे हैं, और पर्यटन नीति ने ओरछा, मांडू, पचमढ़ी जैसे रत्नों को वैश्विक चमक प्रदान की। शिक्षा के क्षेत्र में आईआईटी इंदौर, आईआईएम इंदौर, एम्स भोपाल जैसी संस्थाएँ नई पीढ़ी को विश्वस्तरीय क्षमताएँ सौंप रही हैं। यह प्रदेश सिद्ध करता है कि सच्चा विकास जीडीपी की ठंडी संख्याओं से परे, जीवन की गुणवत्ता का उत्थान है—जहाँ गरीबी की काली छाया तेजी से हट रही है, और समृद्धि की सुनहरी रोशनी हर कोने को रोशन कर रही है।

मध्यप्रदेश की आत्मा उसकी सांस्कृतिक धरोहर में बसती है, जहाँ त्योहार जीवन की लय हैं। दीपावली की दीपमालाएँ भोपाल की झीलों पर प्रतिबिंबित होती हैं, होली के रंग खजुराहो की मूर्तियों में जीवंत हो उठते हैं, तीज-त्योहार बुंदेली लोकगीतों से गूँजे जाते हैं। मालवा की मांडणा कला, गोंड की आदिवासी चित्रकला, बाघ प्रिंट की साड़ियाँ—ये सब विविधता की रंगीन तस्वीर हैं। यहाँ हिंदी, मालवी, बुंदेली, निमाड़ी जैसी बोलियाँ एकता की ध्वनि बनाती हैं, जहाँ आदिवासी संस्कृति और शहरी परिष्कार सहज रूप से मिलते हैं। मध्यप्रदेश विविधता में एकता का जीता-जागता प्रमाण है, जहाँ हर समुदाय अपनी पहचान बचाते हुए प्रदेश की अस्मिता को मजबूत करता है।

यह प्रदेश भविष्य का वादा है, जहाँ हर सुबह नई उम्मीद लेकर आती है। स्मार्ट सिटी परियोजनाएँ शहरों को भविष्योन्मुखी बना रही हैं, रिन्यूएबल एनर्जी से सौर ऊर्जा की क्रांति हो रही है, और डिजिटल गाँवों से ग्रामीण भारत जुड़ रहा है। मध्यप्रदेश की यह यात्रा बताती है कि संतुलन ही सच्ची प्रगति है—जहाँ पर्यावरण का सम्मान हो, संस्कृति का संरक्षण हो, और विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। नर्मदा की लहरें जैसे आशीर्वाद बरसाती हैं, महाकाल की ज्योति जैसे मार्गदर्शन देती है, वैसे ही यह प्रदेश भारत को केंद्र की सच्ची समझ देता है—भावनात्मक, आध्यात्मिक और प्रगतिशील।

स्थापना दिवस की इस पावन बेला में इस पवित्र धरती को कोटि-कोटि नमन, जो भारत को उसका जीवंत हृदय सौंपती है। यह प्रदेश नक्शे की सीमाओं से परे, करोड़ों दिलों में बसा है, जहाँ हर धड़कन राष्ट्रगौरव की गूँज है, हर साँस स्वाभिमान की सुगंध। मध्यप्रदेश उस आदर्श का प्रतीक है जहाँ अतीत की गौरवमयी गरिमा भविष्य की अडिग नींव बनती है, जहाँ हर नागरिक कर्मयोगी बनकर उत्कर्ष की राह पर चलता है, और हर सपना राष्ट्र की उड़ान से जुड़ा होता है। इस शुभ अवसर पर दृढ़ संकल्प लें कि मध्यप्रदेश प्रगति की विजय पताका हमेशा फहराए, संस्कृति की ज्योति अखंड जलाए, और भारत के मध्य में रहकर सबको एकता के सूत्र में पिरोए। यह धरती केवल प्रदेश नहीं, बल्कि भारत की अमर आत्मा का दर्पण है—अजर, अविचल और आसमां छूती उड़ान वाली। जय मध्यप्रदेश! जय भारत!

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

बिहार में एनडीए सरकार लौटने के आसार प्रबल, जदयू के हाथ में रहेगी सत्ता की कुंजी!

कमलेश पांडेय

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 का शोर दिन-प्रतिदिन तेज होता जा रहा है क्योंकि आगामी 6 और 11 नवंबर को वहां वोट डाले जाएंगे। इसलिए एनडीए, इंडिया गठबंधन और जनसुराज के नेताओं ने एक-दूसरे पर शाब्दिक गोले बरसा रहे हैं। एक दूसरे के अतीत और वर्तमान की बखिया उधेड़ी जा रही है। लिहाजा, एक सवाल सबकी जेहन को कुरेद रहा है कि क्या शब्दों के चुनावी मरहम से निर्धनता और अराजकता के बजबजाते घाव क्या भर पाएंगे। क्या नीतीश कुमार, तेजस्वी यादव और प्रशांत किशोर लोगों का विश्वास जीत पाएंगे।

सबसे बड़ा सवाल यही कि मतलबपरस्ती के बयार में दोनों प्रमुख गठबंधनों में शामिल दलों की पारस्परिक गांठ कभी नहीं खुलेगी। यह बात मैं इसलिए उठा रहा हूँ कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की चालों ने 2015 और 2020 के जनादेशों की जिस तरह से खिल्ली उड़ाई और अपना राजनीतिक स्वार्थ साधा, उससे क्या वे मतदाता फिर से उन पर या उनके सहयोगियों पर भरोसा कर पाएंगे। यही बात पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव पर भी लागू होती है। यदि एक बार फिर उन्होंने चाचा नीतीश कुमार को पटा लिया तो उस बिहार का क्या होगा जो जंगल राज की पुनरावृत्ति सपने में भी नहीं चाहता।

रही बात चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर की, तो उनकी पार्टी जनसुराज की तासीर तो इंडिया गठबंधन से ही मिलती जुलती है। इसलिए उन्हें भी वोट देने का मतलब होगा, परोक्ष रूप से राहुल गांधी-तेजस्वी यादव के हाथों को मज़बूत करना। यही वजह है कि बिहार के मतदाता असमंजस में हैं। उन्हें नागनाथ, सांपनाथ और बिच्छूनाथ में किसी पर भरोसा नहीं हो पा रहा है लेकिन जब चुनाव है तो किसी को चुनना ही है। इसलिए नरेंद्र मोदी, अमित शाह और योगी आदित्यनाथ के आह्वान पर वो ज्यादा गौर फरमा रहे हैं। उन्हें डर है कि ग्रेटर बंगलादेश का स्वप्न यदि साकार हुआ तो बिहार युद्ध भूमि में तब्दील हो सकता है।

खास बात यह है कि जहां राम मंदिर के विघ्नकर्ताओं, जानकी मंदिर के आलोचकों की बात योगी आदित्यनाथ छेड़ रहे हैं। गुंडों के खिलाफ यूपी वाला डंडा चलवाने के लिए एनडीए सरकार की वकालत कर रहे हैं। वहीं, सबको रोजगार देने, संविधान को बचाने, आरक्षण को विस्तृत बनाने और जंगलराज नहीं आने देने के आश्वासन तेजस्वी यादव दे रहे हैं। वहीं, प्रशांत किशोर दोनों सरकारों की करतूतें और बिहार के लोगों की मौलिक जरूरतों को पूरा करने के आश्वासन दे रहे हैं। इसलिए लोग यह समझ नहीं पा रहे हैं कि उनका असली हितचिंतक कौन है!

यही वजह है कि चुनाव परिणामों को लेकर लगभग सभी प्रमुख ओपिनियन पोल्स में एनडीए (बीजेपी–जद(यू) गठबंधन) को स्पष्ट बढ़त और पुनः एनडीए सरकार बनने की भविष्यवाणी की जा रही है। पिछले 20 वर्षों से घुमाफिरा कर यही सरकार सत्ता में है भी। उधर, महागठबंधन (राजद–कांग्रेस–वामपंथी) पीछे है, जबकि जन सुराज पार्टी और अन्य छोटे दलों को सीमित सीटें मिलने का अनुमान है। चुनाव प्रचार तेज होने के बावजूद स्थिति पुरानी ही बरकरार है।

जहां तक सीटों व वोट शेयर की संभावित तस्वीर का सवाल है तो एनडीए (बीजेपी–जद(यू) + सहयोगी) को 125–165 सीट और 45–49% वोट शेयर मिलने की अटकलें लगाई जा चुकी हैं जबकि इंडिया महागठबंधन (राजद–कांग्रेस–वामपंथी) को 63–110 सीट और 36–41% वोट शेयर की बातें बताई गई हैं। वहीं, जन सुराज (प्रशांत किशोर) को 4–10 सीट और 8–11 प्रतिशत वोट शेयर मिलने की संभावना जताई गई है। इन्हें युवाओं के बीच लोकप्रिय बताया गया है। रही बात अन्य छोटे दल यानी एआईएमआईएम आदि की) तो उन्हें 3–10 सीट मिलने की उम्मीद है।

खास बात यह है कि मुख्यमंत्री पद के दावेदार के तौर पर लोगों ने तेजस्वी यादव (राजद) को 36.5–38% समर्थन दिया है जिससे वो सबसे प्रबल चेहरे के रूप में सामने आए हैं। इससे उनके हौसले बुलंद हैं। वहीं मौजूदा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार (जदयू) को 35–42% लोगों ने समर्थन दिया है। वह एनडीए ओर से मुख्य दावेदार समझे जाते हैं। जबकि प्रशांत किशोर (जन सुराज) को लोगों ने मात्र 9–23% समर्थन दिया है। उन्हें सिर्फ युवा वर्ग में बढ़त मिली है जबकि बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट की बात करने वाले चिराग पासवान (एलजेपी आर) को लोगों ने महज 5–8% समर्थन दिया है।

इस प्रकार अब तक के प्रमुख संघर्ष, सूबाई रुझान व क्षेत्रीय फर्क को समझते हुए यह माना जा रहा है कि बीजेपी की स्थिति अब मजबूत हो चुकी है जबकि जदयू को अपनी पुरानी सीटों से नुकसान हो सकता है क्योंकि तेजस्वी यादव उनपर भारी पड़ रहे हैं। वहीं, तेजस्वी यादव और महागठबंधन की मजबूती कुछ क्षेत्रों में बनी हुई है पर राज्यस्तर पर एनडीए को मोटे तौर पर बढ़त मिलेगी, ऐसी अटकलें हैं। बताया जा रहा है कि जन सुराज की विशेष पकड़ युवाओं और शहरी वोटरों पर है जबकि बाकी छोटे दल क्षेत्रीय प्रभाव तक सीमित हैं। इस प्रकार यदि जनसुराज ने एनडीए को ज्यादा नुकसान पहुंचाया तो तेजस्वी यादव की किस्मत की लॉटरी लग सकती है।

सच कहूं तो इन सब कयासों और सर्वे के आधार पर बिहार में एनडीए (बीजेपी+जदयू+सहयोगी) स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार के सबसे मजबूत दावेदार हैं, जबकि राजद के नेतृत्व वाला इंडिया महागठबंधन मुख्य विपक्ष में रहेगा। वहीं जन सुराज की सीटें पहली बार उल्लेखनीय स्तर पर पहुंच सकती हैं क्योंकि वह अपना पहला चुनाव ही लड़ रहा है। स्पष्ट है कि बिहार में एनडीए सरकार लौटने के आसार प्रबल हैं और पूर्व की तरह ही जदयू के हाथ में सत्ता की कुंजी रहेगी।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

शिक्षक नौकरी छोड़ रहे हैं — एक कड़वा सच

– क्योंकि शिक्षक को शिक्षण कार्य नहीं करवा कर एक बहुद्देशीय कर्मचारी बना दिया गया है। जब शिक्षक को शिक्षण कार्य छोड़कर काग़ज़ों, रिपोर्टों और आयोजनों का भार दे दिया जाता है, तो शिक्षा अपनी आत्मा खो देती है। **- डॉ. प्रियंका सौरभ**

देश की शिक्षा व्यवस्था एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ सबसे बुनियादी स्तंभ — शिक्षक — स्वयं डगमगाने लगा है।

कभी यह पेशा समाज में सम्मान, स्थिरता और प्रेरणा का प्रतीक था, पर आज वही शिक्षक काग़ज़ी औपचारिकताओं, तकनीकी दबाव और प्रशासनिक आदेशों के बीच खो गया है।

वह थक चुका है, निराश है, और अनेक शिक्षक अब यह पेशा छोड़ रहे हैं। यह कोई व्यक्तिगत निर्णय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतावनी है — क्योंकि जब शिक्षक थक जाता है, तब शिक्षा मर जाती है।

आज भारतीय शिक्षा व्यवस्था एक ऐसे दौर से गुजर रही है, जहाँ शिक्षक सबसे असहाय और अवमूल्यित स्थिति में पहुँच चुका है। कभी यह पेशा सम्मान, आदर्श और आत्मसंतोष का प्रतीक हुआ करता था। शिक्षक वह व्यक्ति था जो समाज की दिशा तय करता था, बच्चों के भीतर मूल्य और विवेक का बीजारोपण करता था। पर अब स्थिति यह है कि शिक्षण सेवा धीरे-धीरे एक प्रशासनिक बोझ में तब्दील हो गई है। शिक्षक का समय अब बच्चों से अधिक कागज़ों, रिपोर्टों और ऑनलाइन पोर्टलों पर बीतने लगा है। हर दिन नई योजना, नया निर्देश, नया ऐप और नए फॉर्म की मांग। शिक्षण अब नौकरी बन गया है, और नौकरी इतनी जटिल कि उसमें पढ़ाने का समय ही नहीं बचा। जब हर कार्य का प्रमाण मांगने वाला सिस्टम बन जाता है, तो भरोसा और रचनात्मकता दोनों समाप्त हो जाते हैं। यही कारण है कि आज एक बड़ा वर्ग शिक्षक होने के बावजूद शिक्षण से कट गया है — और जो नई पीढ़ी है, वह अब इस पेशे को अपनाने में रुचि नहीं दिखा रही। वह देख रही है कि यह पेशा अब प्रेरणा नहीं, थकान और तनाव का प्रतीक बन चुका है।

तकनीक और प्रशासनिक निगरानी के नाम पर शिक्षा को जिस दिशा में धकेला जा रहा है, उसने शिक्षक को डेटा-कलेक्टर और इवेंट मैनेजर बना दिया है। हर महीने किसी न किसी दिवस का आयोजन — योग दिवस, मातृभाषा दिवस, साक्षरता दिवस — और हर आयोजन का फोटो, वीडियो, रिपोर्ट, लिंक... यह सब दिखावे की संस्कृति में बदल गया है। विद्यालय अब ज्ञान का केंद्र नहीं, बल्कि प्रदर्शन का मंच बन गए हैं। शिक्षक बच्चों को कम और कैमरे को ज़्यादा संबोधित करता दिखता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह बोझ और भी भारी है। दो या तीन शिक्षक सैकड़ों बच्चों के लिए जिम्मेदार हैं। मिड-डे मील, छात्रवृत्ति, यूनिफॉर्म, साइकिल वितरण, सर्वे, जनगणना — सब कुछ उसी के सिर पर। शिक्षा धीरे-धीरे प्रबंधन बन गई है, और शिक्षक एक सरकारी कर्मचारी जो सबका आदेश माने। इस स्थिति ने न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित किया है, बल्कि शिक्षक के भीतर की सृजनात्मकता और आत्मसम्मान को भी क्षीण कर दिया है।

इन परिस्थितियों का सबसे बड़ा प्रभाव शिक्षक की मानसिक स्थिति पर पड़ा है। निरंतर निगरानी, आंकड़ों की मांग, और हर कार्य का डिजिटल प्रमाण — इन सबने शिक्षा को मानवीयता से दूर कर दिया है। जो शिक्षक कभी अपने विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक रिश्ता रखते थे, वे अब एक यंत्रवत भूमिका निभाने को विवश हैं। उनके पास न समय है, न अवसर कि वे किसी बच्चे की समस्या को समझ सकें, उसे प्रेरित कर सकें या उसके साथ संवाद कर सकें। परिणामस्वरूप, शिक्षक भावनात्मक रूप से थक रहे हैं, और विद्यार्थी भी उनसे दूर होते जा रहे हैं। छात्र अब शिक्षक को मार्गदर्शक नहीं, सेवा प्रदाता मानने लगे हैं। यह दृष्टिकोण शिक्षा की आत्मा को भीतर से तोड़ रहा है। सम्मान और भरोसे का जो रिश्ता कभी शिक्षा की नींव था, वह अब संदेह और औपचारिकता के बोझ तले दब गया है।

यह स्थिति केवल शिक्षकों की नहीं, बल्कि समाज के भविष्य की चिंता है। यदि शिक्षा का केंद्र शिक्षक और विद्यार्थी नहीं रहेंगे, तो विद्यालय केवल भवन बनकर रह जाएंगे। योजनाएँ, पोर्टल, और नीतियाँ तभी सार्थक हैं जब वे मानवीय जुड़ाव को बढ़ाएँ, न कि खत्म करें। हमें इस प्रश्न पर गंभीरता से सोचना होगा — क्या हम अपने शिक्षकों पर भरोसा करते हैं? क्या हम उन्हें वह स्वतंत्रता और सम्मान दे रहे हैं जिसकी शिक्षा को सबसे ज़्यादा आवश्यकता है? जब शिक्षक को केवल आदेश पालन करने वाला कर्मचारी बना दिया जाता है, तो वह प्रेरक नहीं रह जाता। और जब प्रेरणा खत्म होती है, तो शिक्षा का अर्थ भी समाप्त हो जाता है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि शिक्षक ही वह केंद्र है जिसके इर्द-गिर्द पूरी शिक्षा व्यवस्था घूमती है। यदि वह निराश, उपेक्षित और थका हुआ है, तो आने वाली पीढ़ी भी वैसी ही बनेगी। अब समय है शिक्षक को दोबारा शिक्षा के केंद्र में लाने का — क्योंकि यदि शिक्षक चला गया, तो विद्यालय तो रह जाएगा, पर शिक्षा नहीं।

यह केवल शिक्षकों की समस्या नहीं, बल्कि समाज के भविष्य की चुनौती है। यदि शिक्षा से उसका आत्मीय तत्व — शिक्षक — कमजोर पड़ गया, तो आने वाली पीढ़ी का बौद्धिक और नैतिक विकास भी अधूरा रह जाएगा। नीतियाँ, योजनाएँ, ऐप और पोर्टल तभी उपयोगी हैं जब वे शिक्षक को सशक्त बनाएँ, न कि उसे बोझिल करें। हमें यह स्वीकार करना होगा कि शिक्षा का केंद्र शिक्षक और विद्यार्थी ही हैं — ना कि आंकड़े, फाइलें और फ़ोटो। शिक्षक को फिर से स्वतंत्रता, सम्मान और भरोसे का वातावरण देना होगा। वह केवल नौकरी नहीं कर रहा, वह भविष्य गढ़ रहा है। यदि उसे प्रेरणा और गरिमा नहीं मिली,

तो शिक्षा केवल भवनों और आंकड़ों में सीमित रह जाएगी।

हमें यह याद रखना चाहिए — जब शिक्षक चला जाएगा, विद्यालय तो रह जाएगा, पर शिक्षा नहीं।

राष्ट्रीय एकता के बेजोड़ शिल्पी थे सरदार पटेल : रमेश सर्राफ धमोरा

रमेश सर्राफ धमोरा

सरदार वल्लभभाई पटेल स्वतंत्रता सेनानी और राजनेता थे जो भारत के पहले उप-प्रधानमंत्री और गृह मंत्री बने। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्वतंत्र भारत में सभी रियासतों के एकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसके लिए उन्हें 'लौह पुरुष' भी कहा जाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारतीय नागरिक सेवाओं आईसीएस का भारतीयकरण कर इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवाएं आईएएस बनाया। अंग्रेजों की सेवा करने वालों में विश्वास भरकर उन्हें देशभक्ति की ओर मोड़ा।

स्वतंत्र भारत के पहले तीन वर्ष सरदार पटेल देश के प्रथम उप-प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, सूचना प्रसारण मंत्री रहे। पटेल ने भारतीय संघ में उन रियासतों का विलय किया जो स्वयं में सम्प्रभुता प्राप्त थीं। उनका अलग झंडा और अलग शासक था। सरदार पटेल ने आजादी के पूर्व ही देशी राज्यों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था। सरदार पटेल के प्रयास से 15 अगस्त 1947 तक हैदराबाद, कश्मीर और जूनागढ़ को छोडकर शेष भारतीय रियासतें भारत संघ में सम्मिलित हो चुकी थी।

महात्मा गांधी ने सरदार वल्लभभाई पटेल को सरदार की उपाधि दी थी। उन्हें भारत के बिस्मार्क के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि उन्होंने भारत को एकजुट करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को वैचारिक एवं क्रियात्मक रूप में एक नई दिशा देने के कारण सरदार पटेल ने राजनीतिक इतिहास में एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया। उनके कठोर व्यक्तित्व में संगठन कुशलता, राजनीति सत्ता तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति अटूट निष्ठा थी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम मे उनका महत्वपूर्ण योगदान था।

सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 में गुजरात के नाडियाड में लेवा पट्टीदार जाति के एक जमींदार परिवार में हुआ था। वे अपने पिता झवेरभाई पटेल एवं माता लाड़बाई की चौथी संतान थे। सरदार पटेल ने करमसद में प्राथमिक विद्यालय और पेटलाद स्थित उच्च विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी। लेकिन उन्होंने अधिकांश ज्ञान स्वाध्याय से ही अर्जित किया। 16 वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया। 22 साल की उम्र में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की और जिला अधिवक्ता की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। जिससे उन्हें वकालत करने की अनुमति मिली। सरदार पटेल के पांच भाई व एक बहन थी। 1908 में पटेल की पत्नी की मृत्यु हो गई। उस समय उनके एक पुत्र और एक पुत्री थी। इसके बाद उन्होंने विधुर जीवन व्यतीत किया। वकालत के पेशे में तरक्की करने के लिए कृतसंकल्प पटेल ने अध्ययन के लिए अगस्त 1910 में लंदन की यात्रा की।

सरदार पटेल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद के तीन बार उम्मीदवार बने मगर तीनो ही बार महात्मा गांधी ने हस्तक्षेप कर पण्डित जवाहरलाल नेहरू को कांग्रेस का अध्यक्ष बनवा दिया था। 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान पटेल को तीन महीने की जेल हुई। मार्च 1931 में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के करांची अधिवेशन की अध्यक्षता की। जनवरी 1932 में उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया गया। जुलाई 1934 में वह रिहा हुए और 1937 के चुनावों में उन्होंने कांग्रेस पार्टी के संगठन को व्यवस्थित किया।

अक्टूबर 1940 में कांग्रेस के अन्य नेताओं के साथ पटेल भी गिरफ्तार हुए और अगस्त 1941 में रिहा हुए। 1945-1946 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए सरदार पटेल प्रमुख उम्मीदवार थे। लेकिन महात्मा गांधी ने हस्तक्षेप करके जवाहरलाल नेहरू को अध्यक्ष बनवा दिया। कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में नेहरू को ब्रिटिश वाइसरॉय ने अंतरिम सरकार के गठन के लिए आमंत्रित किया। इस प्रकार यदि घटनाक्रम सामान्य रहता तो सरदार पटेल भारत के पहले प्रधानमंत्री होते।

गृहमंत्री बनने के बाद भारतीय रियासतों के विलय की जिम्मेदारी सरदार पटेल को ही सौंपी गई थी। उन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण किया। विश्व के इतिहास में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जिसने इतनी बड़ी संख्या में राज्यों का एकीकरण करने का साहस किया हो।देशी रियासतों का विलय स्वतंत्र भारत की पहली उपलब्धि थी और निर्विवाद रूप से पटेल का इसमें विशेष योगदान था। नीतिगत दृढ़ता के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उन्हें सरदार और लौह पुरुष की उपाधि दी थी। वल्लभ भाई पटेल ने आजाद भारत को एक विशाल राष्ट्र बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

जूनागढ़ के नवाब के विरुद्ध जब वहां की प्रजा ने विरोध कर दिया तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और इस प्रकार जूनागढ भी भारत में मिला लिया गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहां सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया। निःसंदेह सरदार पटेल द्वारा 562 रियासतों का एकीकरण विश्व इतिहास का एक आश्चर्य था। भारत की यह रक्तहीन क्रांति थी।

लक्षद्वीप समूह को भारत में मिलाने में भी पटेल की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। इस क्षेत्र के लोग देश की मुख्यधारा से कटे हुए थे और उन्हें भारत की आजादी की जानकारी 15 अगस्त 1947 के कई दिनों बाद मिली। हालांकि यह क्षेत्र पाकिस्तान के नजदीक नहीं था लेकिन पटेल को लगता था कि इस पर पाकिस्तान दावा कर सकता है। इसलिए ऐसी किसी भी स्थिति को टालने के लिए पटेल ने लक्षद्वीप में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए भारतीय नौसेना का एक जहाज भेजा। इसके कुछ घंटे बाद ही पाकिस्तानी नौसेना के जहाज लक्षद्वीप के पास मंडराते देखे गए। लेकिन वहां भारत का झंडा लहराते देख उन्हें वापस लौटना पड़ा।

जब चीन के प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई ने जवाहरलाल नेहरू को पत्र लिखा कि वे तिब्बत को चीन का अंग मान लें तो पटेल ने नेहरू से आग्रह किया कि वे तिब्बत पर चीन का प्रभुत्व कतई न स्वीकारें अन्यथा चीन भारत के लिए खतरनाक सिद्ध होगा। जवाहरलाल नेहरू नहीं माने बस इसी भूल के कारण हमें चीन से पिटना पड़ा और चीन ने हमारी सीमा की भूमि पर कब्जा कर लिया। सरदार पटेल के ऐतिहासिक कार्यों में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निमाण, गांधी स्मारक निधि की स्थापना, कमला नेहरू अस्पताल की रूपरेखा आदि कार्य शामिल हैं।

सरदार पटेल का निधन 15 दिसम्बर 1950 को मुम्बई में हुआ था। सरदार पटेल को उनकी मृत्यु के 41 साल बाद 1991 में मरणोपरांत भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न दिया गया जो उन्हे बहुत पहले मिलना चाहिये था। वर्ष 2014 में केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती (31 अक्टूबर) को देश भर में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाना शुरू कर उनको सम्मनित किया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कुछ वर्ष पूर्व गुजरात के नर्मदा जिले में सरदार पटेल के स्मारक का उद्घाटन किया था। इसका नाम एकता की मूर्ति (स्टैच्यू ऑफ यूनिटी) रखा गया है। यह मूर्ति स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी से दुगनी ऊंचाई 182 मीटर ऊंची बनाई गयी है। इस प्रतिमा को केवडिया के निकट साधुबेट नामक एक छोटे चट्टानी द्वीप में सरदार सरोवर बांध के सामने नर्मदा नदी के मध्य में स्थापित किया गया है। सरदार वल्लभ भाई पटेल की यह प्रतिमा दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है।

सरदार पटेल की इस प्रतिमा को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनका व्यक्तित्व कितना विशाल था। सरदार यानि नेतृत्व करने का गुण तो उनमें जन्मजात था ही। संघर्षो में तपकर उनका मनोबल लौहे की तरह दृढ़ हो गया था। अपनी इसी इच्छा शक्ति व दृढ़ मनोबल के दम पर उन्होने देश की आजादी के बाद एक भारत बनाने का ऐसा मुश्किल काम कर दिखाया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। भारत के राजनीतिक इतिहास में सरदार पटेल के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। देश की आजादी के संघर्ष में उन्होने जितना योगदान दिया उससे ज्यादा योगदान उन्होने स्वतंत्र भारत को एक करने में दिया। पटेल राष्ट्रीय एकता के बेजोड़ शिल्पी व नये भारत के निर्माता थे। देश के विकास में सरदार वल्लभभाई पटेल के महत्व को सैदव याद रखा जायेगा।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

विदेश में सुनहरे भविष्य के लिए बेहतर तैयारी

विजय गर्ग

आज के ग्लोबल युग में लाखों भारतीय युवाओं का सपना विदेश में कैरियर बनाना होता है। हालांकि हाल के सालों में अमेरिका सहित कई पश्चिमी देशों ने भारतीय युवाओं के लिए कई तरह की बाधाएं खड़ी कर दी हैं लेकिन जो प्रतिभाशाली हैं और जिनका लक्ष्य विदेश में कैरियर बनाने का है, वो आज भी इसे संभव बना सकते हैं, बशर्ते इसके लिए पहले से ही लक्ष्य स्पष्ट हो और इसकी पहले से व्यवस्थित शुरुआत कर दी जाए।

हमारे देश से हर साल हजारों विद्यार्थी व पेशेवर बेहतर शिक्षा, उच्च जीवन स्तर की चाह पूरी करने को विदेशों का रुख करते हैं। हालांकि कई विकसित देशों ने इसमें बाधाएं खड़ी कर दी हैं। इसके बावजूद विदेश में कैरियर बनाने के इच्छुक प्रतिभाशाली युवा यह सपना सच कर सकते हैं, बशर्ते उनका लक्ष्य स्पष्ट हो और पहले से ही व्यवस्थित तैयारी शुरू करें।

आज के ग्लोबल युग में लाखों भारतीय युवाओं का सपना विदेश में कैरियर बनाना होता है। हालांकि हाल के सालों में अमेरिका सहित कई पश्चिमी देशों ने भारतीय युवाओं के लिए कई तरह की बाधाएं खड़ी कर दी हैं लेकिन जो प्रतिभाशाली हैं और जिनका लक्ष्य विदेश में कैरियर बनाने का है, वो आज भी इसे संभव बना सकते हैं, बशर्ते इसके लिए पहले से ही लक्ष्य स्पष्ट हो और इसकी पहले से व्यवस्थित शुरुआत कर दी जाए। बेहतर शिक्षा, उच्च जीवन स्तर की चाह रखने वाले हजारों भारतीय विद्यार्थी और प्रोफेशनल हर साल विदेशों की राह पकड़ते हैं। जानिये इसकी व्यवस्थित और चरणबद्ध तैयारी कैसे करें-

लक्ष्य स्पष्ट हो

अगर विदेश में कैरियर बनाना है, तो बहुत पहले लक्ष्य स्पष्ट और सुनिश्चित कर लेना चाहिए। आपको 10+2 की पढ़ाई के दौरान ही स्पष्ट हो कि विदेश में किस क्षेत्र में कैरियर बनाना है। सीधे नौकरी या शोध कार्य के माध्यम से जाना चाहते हैं, यह तय कर लीजिए। बहरहाल जो छात्र टेक्नोलॉजी या साइंस में रुचि रखते हों, उन्हें जर्मनी, कनाडा और अमेरिका को अपनी प्राथमिकताओं में रखना चाहिए। जो छात्र कला, डिजाइन या संस्कृति से जुड़े क्षेत्रों में कैरियर बनाने की सोच रहे हों, उनके लिए फ्रांस, इटली और जापान अच्छे विकल्प हैं। मेडिकल और हेल्थ सेक्टर में अगर कैरियर बनाना है, तो इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और आयरलैंड का रुख करें। इसकी शुरुआत 11वीं कक्षा से कर देनी चाहिए। अगर आप नौकरीपेशा हैं, तो दो साल पहले से ही इसकी योजना बना लें ताकि भाषा, डिग्री और डॉक्यूमेंटेशन की जरूरतें पूरी कर सकें।

मजबूत नींव तैयार करें

विदेशों में कैरियर के लिए केवल डिग्री ही जरूरी नहीं होती, कौशल भी बड़ी पूंजी होती है। इसलिए हर देश में काम करने या पढ़ने के लिए न्यूनतम योग्यता तय

होती है। अगर अमेरिका में मास्टर्स या पीएचडी करना चाहते हैं, तो जीआरई या जीएमएटी की आवश्यकता पड़ती है। कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में आईईएलटीएस और टीओईएफएल स्कोर के आधार पर प्रवेश मिलता है। जबकि जर्मनी में इंजीनियरिंग या साइंस के छात्रों के लिए बी.1, बी.2 स्तर की जर्मन भाषा परीक्षा पास करनी जरूरी है। वहीं आजकल कंपनियां स्किल पर भरोसा करती हैं। इसलिए कोडिंग, डेटा एनालिटिक्स, डिजाइनिंग, डिजिटल मार्केटिंग, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट व भाषा ज्ञान जैसी क्षमताएं जरूरी हैं। लिंक्डइन लर्निंग, कोरसेरा जैसे प्लेटफॉर्म में ऑनलाइन सर्टिफिकेट कोर्स करके आप अपनी प्रोफाइल इंटरनेशनल कसौटियों के अनुकूल बना सकते हैं।

भाषा पर पकड़

अगर अंग्रेजी भाषी देशों मसलन अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और इंग्लैंड में कैरियर बनाने की तमन्ना है, तो अंग्रेजी पर अच्छा अधिकार जरूरी है। अगर जर्मनी, फ्रांस और जापान जैसे देशों में कैरियर बनाना चाहते हैं, तो यहां की स्थानीय भाषाओं में दक्षता हासिल करना जरूरी होता है। इसलिए हर दिन करीब डेढ़ से दो साल तक प्रतिदिन 45 मिनट से एक घंटे तक भाषा पर अच्छी पकड़ की तैयारी करें। सोशल मीडिया में विदेशी समाचार, ब्रॉडकास्ट और इंटरव्यू सुनना फायदेमंद होता है। तैयारी 10वीं और 11वीं करने के दौरान शुरू कर दें।

वीजा नियम की जानकारी

हर देश का अपना एक वीजा नियम होता है। जैसे कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में छात्र आसानी से यहां स्थायी निवास की सुविधा भी हासिल कर सकते हैं। जबकि अमेरिका और जापान जैसे देश स्थायी निवास की सुविधा को लेकर सख्त रवैया अपनाते हैं। अतः पहले ही तय कर लें कि आपका वास्तविक लक्ष्य विदेश में स्थायी रूप से बसना है या सिर्फ नौकरी तक ही सीमित है और फिर उसी आधार पर आगे की योजना पर काम करें।

डॉक्यूमेंट्स और फाइनेंस की तैयारी

बिना पूर्ण डॉक्यूमेंट और जरूरी फाइनेंस के आप अपना विदेश का सपना पूरा ही नहीं कर सकते। आपके पास वैध पासपोर्ट होना जरूरी है। सभी तरह के शैक्षिक प्रमाणपत्र भी होने चाहिए, बैंक स्टेटमेंट यानी फंड का प्रूफ होना चाहिए। यदि नौकरी के लिए जा रहे हैं तो अनुभव का प्रमाणपत्र व शुरुआती तीन महीनों का खर्च आपके पास होना चाहिए। इसके अलावा भाषा स्कोर, पुलिस क्लियरेंस व मेडिकल सर्टिफिकेट भी बहुत जरूरी है। विदेश में पढ़ाई के लिए सालाना 15 से 20 लाख रुपये आमतौर पर लागत आती है। आपके खातों में 30 से 50 लाख रुपये होने जरूरी है। एजुकेशन लोन या स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत विदेश जाने का लक्ष्य है, तो सारी डिटेल जानकारी बहुत जरूरी है।

मानसिक तैयारी

जिस देश में कैरियर बनाने के लिए जा रहे हों, पहले से वहां की जीवनशैली, समय प्रबंधन, सामाजिक नियम और कार्य संस्कृति के बारे में आपको सबकुछ पता होना चाहिए ताकि उस देश में पहुंचने के बाद आपको भाषायी समस्या और लाइफस्टाइल की चुनौतियों से दोचार न होना पड़े। अंत में ऑनलाइन इंटरव्यू के लिए कैमरा और संचार कौशल का अभ्यास भी कर लें और विदेश रवाना होने से पहले स्वास्थ्य बीमा, अपने रहने का ठिकाना और अंतर्राष्ट्रीय सिम कार्ड आदि की व्यवस्था भी कर लें।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

वैज्ञानिक आशा

विजय गर्ग

अस्थिर मानसून, लंबे समय तक सूखे और बढ़ते तापमान से चिह्नित युग में, बादलों के बीज के माध्यम से कृत्रिम बारिश की अवधारणा एक बार फिर भारत में सार्वजनिक व्याख्यान में प्रवेश कर गई है। जैसे-जैसे कई राज्य पानी की गंभीर कमी और कृषि उत्पादकता में गिरावट से जूझ रहे हैं, नीति निर्माताओं मौसम के पैटर्न को हेरफेर करने के लिए तकनीकी हस्तक्षेपों की खोज कर रहे हैं जो एक समय शुद्ध रूप से दिव्य माना जाता था। क्लाउड बीज, हालांकि नया नहीं है, अब जलवायु अनुकूलन रणनीतियों में एक गंभीर विकल्प बन गया है। क्लाउड बीज एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सिल्वर आयोडाइड, पोटेशियम आयोडाइड या सोडियम क्लोराइड जैसी पदार्थों को घनत्व और वर्षा को प्रोत्साहित करने के लिए बादलों में बिखरे जाते हैं। यह प्रक्रिया विमान, रॉकेट या ग्राउंड-आधारित जनरेटर का उपयोग करके की जा सकती है। अनुकूल वायुमंडलीय परिस्थितियों में किया जाता है, तो यह लक्षित क्षेत्रों में वर्षा को बढ़ा सकता है। चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूएई जैसे देशों ने सूखे को कम करने और जलाशयों को भरने के लिए इस तकनीक में भारी निवेश किया है। भारत ने महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और राजस्थान जैसे राज्यों में भी बादलों की खेती का प्रयोग किया है, जहां बारिश के घाटे से गंभीर सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पड़ा है। हालांकि, परिणाम मिश्रित हैं। जबकि कुछ क्षेत्रों में वर्षा की मामूली वृद्धि हुई है, लेकिन अन्य क्षेत्रों में असंगत वायुमंडलीय परिस्थितियों या पर्याप्त वैज्ञानिक निगरानी के अभाव के कारण परिणाम तुच्छ देखे गए हैं। समर्थकों का तर्क है कि बादल बुनाई प्राकृतिक वर्षा को पूरक बनाने के लिए एक रणनीतिक, लागत प्रभावी हस्तक्षेप प्रदान करती है, विशेष रूप से सूखे मौसम में। यह कृषि, जलविद्युत उत्पादन और भूजल रिचार्ज के लिए अमूल्य साबित हो सकता है, विशेष रूप से मानसून की बारिश पर निर्भर क्षेत्रों में। इसके अलावा, तकनीकी प्रगति और उपग्रह-आधारित मौसम पूर्वानुमान मॉडल के साथ अब क्लाउड बीजिंग को अधिक सटीकता और जवाबदेही के साथ निष्पादित किया जा सकता है। हालांकि आलोचकों ने इस तरह के कृत्रिम तरीकों पर अत्यधिक निर्भरता से सावधान किया है। क्लाउड बीज एक गारंटीकृत समाधान नहीं है, क्योंकि इसकी सफलता काफी हद तक नमी से भरे बादलों और अनुकूल मौसम संबंधी परिस्थितियों की उपलब्धता पर निर्भर करती है। इसके अलावा, इस प्रक्रिया में उपयोग किए जाने वाले रासायनिक एजेंटों के पर्यावरणीय और स्वास्थ्य प्रभावों पर प्रश्न बने हुए हैं। दीर्घकालिक पारिस्थितिक प्रभावों, जैसे वर्षा वितरण में परिवर्तन और संभावित मिट्टी या जल प्रदूषण के लिए गहन वैज्ञानिक मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। एक नैतिक और राजनीतिक आयाम भी है - बादलों को हेरफेर करने से पड़ोसी क्षेत्रों में वर्षा प्रभावित हो सकती है, जिससे अंतरराज्यीय विवादों और पारिस्थितिक असंतुलन के मुद्दे उठ सकते हैं। इसलिए, बड़े पैमाने पर क्लाउड सीडिंग परियोजनाओं को बढ़ाने से पहले सरकार को सख्त दिशानिर्देश, संचालन में पारदर्शिता और कठोर वैज्ञानिक सत्यापन स्थापित करना होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

ब्रिमैटो यानी एक ही पौधे पर बैंगन और टमाटर

विजय गर्ग

(भारतीय सब्ज़ी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार 'ब्रिमैटो' पौधा खेती की नई क्रांति साबित हो रहा है।)

वाराणसी स्थित भारतीय सब्ज़ी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार 'ब्रिमैटो' पौधा खेती की नई क्रांति साबित हो रहा है। यानी एक ही पौधे से बैंगन और टमाटर दोनों की पैदावार होती है जिससे जगह व लागत की बचत हो रही है। वहीं शहरी इलाकों में छत आदि पर गार्डनिंग के शौकीनों के लिए भी यह वरदान है।

क्या आपने कभी सोचा है कि एक ही पौधे से बैंगन और टमाटर दोनों मिल सकते हैं? यह बात भले ही किसी कहानी जैसी लगे, लेकिन वाराणसी स्थित भारतीय सब्ज़ी अनुसंधान संस्थान (आईआईवीआर) के वैज्ञानिकों ने इसे हकीकत में बदल दिया है। उन्होंने ऐसा पौधा तैयार किया है, जिसे नाम दिया गया है-'ब्रिमैटो'। यह पौधा न सिर्फ किसानों के लिए खेती की नई क्रांति साबित हो रहा है, बल्कि शहरी इलाकों में छत आदि पर गार्डनिंग के शौकीनों के लिए भी वरदान है।

दरअसल, ब्रिमैटो वैज्ञानिकों की डुअल ग्राफ्टिंग तकनीक का परिणाम है। इसमें बैंगन की मजबूत जड़ों पर टमाटर को चढ़ाया गया है। इससे बैंगन की जड़ें पानी ज्यादा सह लेती हैं, जबकि टमाटर पानी से जल्दी खराब हो जाता है। इस प्रयोग का नतीजा यह निकला कि बैंगन और टमाटर दोनों एक साथ मिलने लगे। साल 2017 में पहली बार बैंगन की देशी किस्म आईसी 111056 पर यह प्रयोग सफल हुआ और लगातार परीक्षणों के बाद आईआईवीआर ने हाल ही में आईसीएआर में इसे पंजीकृत कराया है। इसका किसानों को प्रशिक्षण और पौधे उपलब्ध कराने का काम शुरू हो गया है।

4.50 किलो टमाटर, 3 किलो बैंगन

ब्रिमैटो के फायदे जानकर कोई भी किसान इसे अपनाना चाहेगा। एक ही पौधे से औसतन चार से साढ़े चार किलो टमाटर और साढ़े तीन किलो बैंगन मिल जाते हैं। खास बात यह है कि सामान्य

पौधों की तुलना में पंद्रह से बीस दिन पहले ही फल मिलने लगते हैं। यदि बड़े पैमाने पर खेती की जाए तो एक हेक्टेयर में 37 टन से ज्यादा टमाटर और 35 टन के करीब बैंगन की पैदावार होती है। यानी लागत घटती है और आमदनी बढ़ जाती है। अनुमान है कि इससे किसानों को करीब छह लाख रुपये तक शुद्ध लाभ हो सकता है।

एक पौधे पर दो फसलें यानी आधी लागत

उत्तर प्रदेश सोनभद्र, देवरिया और आज़मगढ़ जैसे जिलों के किसान पहले ही इसे अपनाकर खुशहाल हो रहे हैं। सोनभद्र के किसान रामनिवास यादव बताते हैं कि अब अलग-अलग पौधे लगाने का झंझट खत्म हो गया है। एक ही पौधे से दोनों फसलें मिल जाती हैं और मेहनत आधी रह गई है। वहीं देवरिया की राधिका देवी कहती हैं कि उनके छोटे से बगीचे में अब बैंगन और टमाटर दोनों मिल रहे हैं और बाजार से सब्ज़ी खरीदने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

शहरी गार्डनिंग के अनुकूल

ब्रिमैटो की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह सिर्फ किसानों तक सीमित नहीं है बल्कि शहरी गार्डनिंग के लिए भी बेहद उपयोगी है। शहरों में जहां खेती की जगह कम होती जा रही है, वहां एक ही गमले में दो सब्ज़ियां मिल जाना किसी सपने जैसा है। बालकनी या छत पर इसे आसानी से लगाया जा सकता है। इससे रोज़ाना ताज़ी सब्ज़ियां मिलती हैं और पानी-खाद की बचत भी होती है।

घर पर ब्रिमैटो लगाने के लिए ज्यादा जटिल तकनीक की ज़रूरत नहीं है। धूप वाली जगह चुनें, हल्की और जलनिकासी वाली मिट्टी तैयार करें और उसमें गोबर की खाद या वर्मी कम्पोस्ट मिलाएं। पौधे को हफ्ते में दो-तीन बार पानी दें और समय-समय पर जैविक खाद डालें। यदि कीट लगें तो नीम का तेल या हल्का साबुन पानी छिड़कने से फायदा होगा।

आसान है ब्रिमैटो की खेती

खेती की तकनीक में भी ब्रिमैटो बेहद आसान है। बैंगन की मजबूत जड़ों के चलते यह लंबे समय तक उत्पादन देता है। हालांकि इसमें बैंगन और टमाटर दोनों तरह के कीट लग सकते हैं, इसलिए किसानों को सतर्क रहना पड़ता है। नियमित निगरानी और जैविक कीटनाशकों का प्रयोग इसकी सेहत बनाए रखता है।

दिलचस्प यह है कि ब्रिमैटो से पहले वैज्ञानिकों ने पोमैटो नाम का पौधा तैयार किया था, जिसमें आलू और टमाटर एक साथ मिलते थे। लेकिन उसकी पैदावार सीमित थी और वह ज्यादा लोकप्रिय नहीं हो पाया। इसके मुकाबले ब्रिमैटो ज्यादा व्यावहारिक साबित हो रहा है। सिर्फ उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि बिहार, झारखंड और मध्य प्रदेश के किसान और शहरी गार्डनर्स भी इसे अपना रहे हैं।

भविष्य की खेती का प्रतीक

आईआईवीआर के निदेशक डा.राजेश कुमार कहते हैं, "इस साल ही पच्चीस हजार से ज्यादा पौधे नर्सरी से बेचे हैं और अब किसानों की मांग लगातार बढ़ रही है। वैज्ञानिकों का मानना है कि खेती की जमीन घटने के इस दौर में ऐसे पौधे भविष्य में और भी अहम भूमिका निभाएंगे। सीमित जगह में दोहरी पैदावार देना ही आने वाले समय की असली चुनौती है और ब्रिमैटो उस दिशा में एक ठोस कदम है।"

ब्रिमैटो ने आधुनिक विज्ञान और परंपरागत खेती को अधिक लाभकारी, टिकाऊ और रोचक बना दिया है। यह शहरी और ग्रामीण किसानों दोनों के लिए भविष्य की खेती का प्रतीक है। इस पौधे के जरिए छोटे गार्डनर्स और किसान न सिर्फ आर्थिक रूप से सशक्त होंगे, बल्कि पर्यावरण अनुकूल और सीमित संसाधनों में खेती का अनुभव भी प्राप्त करेंगे। यही कारण है कि ब्रिमैटो को खेती की दुनिया में स्मार्ट और भविष्यवादी पौधा कहा जा रहा है।

भारतीय सब्ज़ी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने इससे पहले भी पोमैटो विकसित किया था, जिसमें टमाटर और आलू उगते थे। लेकिन पोमैटो की पैदावार और टिकाऊपन सीमित था। ब्रिमैटो अधिक टिकाऊ, व्यावहारिक और लोकप्रिय हो गया है। ब्रिमैटो सिर्फ एक पौधा नहीं बल्कि खेती की नई क्रांति का प्रतीक है। किसानों के लिए कम मेहनत और ज्यादा मुनाफे का रास्ता खोलता है। शहरी बाग़वानों को कम जगह में ताज़ी सब्ज़ियां उपलब्ध कराता है। एक ही पौधे से बैंगन और टमाटर का स्वाद-यानी स्वाद भी, सेहत भी और भविष्य की खेती का नया रास्ता भी।

किसानों को फायदा

यूपी के सोनभद्र, देवरिया और आज़मगढ़ के 180 से ज्यादा किसानों ने ब्रिमैटो को अपनाया। इसके एक पौधे से लगभग 4.5 किलो टमाटर और 3.5 किलो बैंगन निकल आते हैं। सामान्य पौधों से 15-20 दिन पहले फल देने लगता है। आईआईवीआर ने इस साल नर्सरी से 25,000 से ज्यादा पौधे बेच दिए हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार, ब्रिमैटो से एक हेक्टेयर में 37.3 टन टमाटर और 35.7 टन बैंगन पैदा हो सकते हैं जिससे किसान को करीब 6.4 लाख रुपये तक का शुद्ध लाभ हो सकता है।ब्रिमैटो का पौधा जगह बचाता है, ऐसे में यह शहरों में छत पर गार्डन के लिए बेहतरीन है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

पहली पाठशाला

विजय गर्ग

देश, समाज, परिवार - यह सब हमारे जीवन की आधारशिला हैं। हम पैदा होने के बाद पलने - बढ़ने से लेकर बड़े होने और अपना जीवन जीने तक जो भी हासिल करते हैं, जो भी हमें समाज और परिवार से मिलता है, वह सब आखिरकार हमारे व्यक्तित्व को गढ़ता है। सवाल है कि इन सबके बीच कौन ऐसा चेहरा होता है, जो हमारे जीवन के हर पल को सुख और सुकून से भर देने के लिए न केवल दुनिया के सामने खड़ा हो जाता है, बल्कि अपना भी सब कुछ त्याग देने को तैयार हो जाता है। हम चारों ओर अपनी नजर घुमाएं। क्या हमें अपनी मां के सामने कोई और दिखाई देता है? दरअसल, मां एक ऐसा शब्द है, जिसे सुनते ही हमारा हृदय करुणा और प्रेम के साक्षात दर्शन करता। मगर मां सिर्फ संबोधन नहीं है, बल्कि एक संपूर्ण संसार है। हमारे जीवन की आधारशिला है। गर्भ काल लेकर हमें जन्म देने तक से बहुत आगे। जब तक मां का जीवन है, मां अपने बच्चे के लिए एक सुरक्षित आंचल प्रदान करती है। मां और बच्चे का रिश्ता ही संसार में सबसे निश्छल और ममता से भरा होता है। वह न केवल बच्चे का पालन-पोषण करती है, बल्कि वह बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है। यों तो प्रत्येक मां अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा, नैतिकता और सुविचारों से पोषित करना चाहती है, लेकिन जमाने के साथ विचारों में भी परिवर्तन आया है। ऐसे में मां का मूल तो वही है, लेकिन पालन-पोषण के तरीके में अंतर पड़ गया है।

आज इंटरनेट, मोबाइल जैसे तकनीक युग और व्यस्ततम जीवनशैली होने के कारण कामकाजी मां अपने बच्चों को उतना समय नहीं दे पाती, जितना कि वह देना चाहती है या फिर उसे देना चाहिए। यह एक मजबूरी हो सकती है, लेकिन यह मजबूरी बच्चों को नैतिकतापूर्ण आचरण, अनुशासित जीवन और अध्ययन के लिए प्रेरित करने से कहीं भी आड़े नहीं सकती। अगर मां अपनी इच्छाशक्ति से ऐसा करने की ठान ले।

आधुनिक समय के इस उथल-पुथल से भरे दौर में मां को न केवल अपने-आप को जमाने की कदम ताल से कदम मिलाकर चलना होगा, बल्कि खुद को भी परिपक्व बनाना होगा, ताकि वह बच्चों को ठीक ढंग से आगे बढ़ा सके। इसके अलावा, बच्चों की आवश्यकता, मनोविज्ञान से भी परिवार को और उसके आसपास के सभी लोगों को परिचित होना होगा। बच्चों पर अनुशासन और नैतिकता के मापदंडों को थोपने की जगह उन्हें धीरे-धीरे अपनी और अन्य लोगों की जीवनशैली के द्वारा प्रेरित करना होगा। अगर बच्चा गलत रास्ते पर भी जा रहा हो, तो मां

उसे सही राह दिखा सकती है। कभी प्रेम से, तो कभी डांटकर, कभी समझाइश, तो कभी रूठकर। एक मां ही भावनात्मक स्तर तक पहुंच कर बच्चे का मार्गदर्शन कर सकती है। मां के शरीर से अलग होकर भी बच्चा मां से जुड़ा ही रहता है। संकट में वह मां के आंचल को सबसे ज्यादा सुरक्षित और विश्वसनीय मानता है। इधर मां के जीवन का प्रकाश बच्चा ही होता है। वह उस पर अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार रहती है। बच्चे के जीवन की थोड़ी-सी भी कठिनाई मां को बहुत बड़ी लगती है। बच्चे के जीवन को सहारा देना एक अलग बात है, लेकिन उस सहारे के नाम पर कभी भी उसे स्वावलंबी बनने से नहीं रोकना चाहिए। स्वावलंबन ही जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी है। अगर मां यह सीढ़ी खुद बनना चाहेगी और प्रेम वश उसे कुछ भी नहीं करने देगी तो बच्चा जीवन में कुछ भी नहीं सीख पाएगा। बच्चे को स्वावलंबी बनाना आमतौर पर सभी मां के जीवन का परम उद्देश्य होता है। जिस प्रकार बालपन में मां बच्चे का ध्यान रखती है, उसी प्रकार बच्चों को भी अपनी वृद्ध मां की देख-रेख खुले हृदय से करनी चाहिए। बच्चे मां द्वारा उनके प्रति किए गए कार्यों का कर्तव्य समझकर भूल जाते हैं। वे भूल जाते हैं कि मां ने रातों को जागकर अपने जीवन की प्रत्येक सफलता, जो उसे मिल सकती थी, उसका त्यागकर उन्हें जीवन दिया है, उनके रास्ते के कांटों को हटाया है। ऐसे में सभी बच्चों की जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वे अपनी मां का पूरा खयाल रखे, जिस मां ने उन्हें चलना सिखाया, उसके बुढ़ापे की लाठी बने।

यों मां का कर्ज कोई चुका नहीं सकता। वह अमूल्य है। मगर अपनी कोशिश के जरिए हमें अपने व्यवहार से मां के प्रति श्रद्धा प्रकट करनी चाहिए। समाज में जो मां का उच्च स्थान है, इसका कारण भी यही है कि मां ही ज्ञान, शिक्षा, पोषण और परिवार की धुरी है। मां अपने बच्चे का उचित लालन पालन कर उसे समाज का एक जिम्मेदार सदस्य बनाती है, जो आगे चलकर इसी समाज की उन्नति का रास्ता खोजता है। एक-एक व्यक्ति के योगदान से समाज उन्नत होता है और अगर कोई समाज इतना उन्नत हो जाए तो ऐसे ही समाज वाला राष्ट्र अपना चहुंमुखी विकास करता है। हमें बुनियादी तौर पर मनुष्य बनाने में हमारी माताओं का ही योगदान रहा है। मनुष्य रूप में जन्म लेना मनुष्य होना नहीं है बल्कि हमें मनुष्य होने के नाते कई गुणों को अपने व्यक्तित्व के अंदर समाहित करना पड़ता है। ऐसे में मां ही हमें अपने विचारों, संस्कारों और अनुशासन की सीख देकर मनुष्य बनाती है। मां सिर्फ संबोधन नहीं है, वह हमारी आधारशिला है, जीवन की पहली पाठशाला है और उसी की वजह से हमारा अस्तित्व है।

सेवानिवृत्तप्रिंसिपल मलोट पंजाब

शोध-अनुसंधान में भी हैं आकर्षक कैरियर के नये विकल्प

विजय गर्ग

पीसीएम यानी भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित विषयों के साथ साइंस की पढ़ाई विभिन्न क्षेत्रों में कैरियर बनाने की राहें खोलती है। हालांकि ज्यादातर मेडिकल स्टूडेंट का सपना होता है कि बारहवीं के बाद एमबीबीएस में एडमिशन हो जाए। वहीं इंजीनियरिंग वाले विद्यार्थी आईआईटी या किसी प्रतिष्ठित कॉलेज से बी.टेक. करना चाहते हैं। लेकिन इन कोर्सेज में कम सीटों की वजह से ये उम्मीद सभी की पूरी नहीं हो पाती है। ऐसे में निराश होने की जरूरत नहीं। साइंस में कई अत्याधुनिक क्षेत्र हैं जहां आप बारहवीं के बाद अपनी ही स्ट्रीम में बेहतर कैरियर बना सकते हैं।

परंपरागत रूप से साइंस स्ट्रीम के विद्यार्थी इंजीनियरिंग, मेडिकल, और कंप्यूटर साइंस जैसे क्षेत्रों में अपना भविष्य खोजते रहे हैं। बारहवीं पास करने के बाद अकसर साइंस के स्टूडेंट्स को लगता है कि इस फील्ड में कैरियर बनाने के लिए सीमित अवसर हैं जबकि आजकल साइंस में कई अत्याधुनिक क्षेत्र हैं जहां आप अपना कैरियर बना सकते हैं। आपने इन क्षेत्रों में महारत हासिल कर ली तो संबंधित बड़ी कंपनियों में जॉब मिलने की बहुत संभावनाएं हैं। जानिये इन आधुनिक विकल्पों के बारे में-

रोबोटिक्स

अगर आपकी रुचि मूल रूप से मशीनों में है तो आप इस फील्ड में जा सकते हैं। मैकेनिकल, इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रिकल इंजी. और कंप्यूटर साइंस की मिश्रित शाखा रोबोटिक्स अंतरिक्ष से लेकर चिकित्सा के क्षेत्र तक में प्रयोग किए जाने वाले रोबोट बनाती है। रोबोटिक्स में शिक्षा के लिए इन संस्थानों की मदद लेनी होगी- आईआईटी-बॉम्बे, दिल्ली, कानपुर, खड़गपुर, आईआईएससी, बिट्स।

एस्ट्रोनॉमी/ एयरोस्पेस इंजीनियरिंग

एयरोस्पेस के क्षेत्र में शिक्षा के अवसरों में खासा प्रसार हुआ है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो इस फील्ड का प्रमुख संस्थान है। आकाशीय पिंडों की उत्पत्ति और गति का विस्तृत अध्ययन करने वाली विशेष शाखा एस्ट्रोनॉमी व विमानों से जुड़ी इंजीनियरिंग का क्षेत्र एयरोस्पेस युवाओं को लुभाने में कामयाब है। इस क्षेत्र के प्रमुख संस्थान हैं- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेस टेक्नोलॉजी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स, आईआईएससी बेंगलोर, आईआईटी बॉम्बे।

नैनो टेक्नोलॉजी

आने वाले समय में इस क्षेत्र में कुशल प्रोफेशनल्स और शोधकर्ताओं की मांग बढ़नी तय है। किसी पदार्थ की आणविक संरचना में परिवर्तन करके उसे बेहतर प्रयोग के लिए तैयार करती है नैनोसाइंस। नैनो पार्टिकल्स और नैनोडिवाइसेज का इस्तेमाल आज चिकित्सा समेत विभिन्न क्षेत्रों में किया जाने लगा है। इसके लिए प्रमुख संस्थान हैं- आईआईटी-मद्रास, आईआईटी-दिल्ली, आईआईएससी बंगलौर, बीएचयू, कलकत्ता विवि।

अर्थक्वेक इंजीनियरिंग

दुनिया भर में आजकल भूकंप की घटनाएं बढ़ रही हैं। ऐसे में इस फील्ड में एक्सपर्ट लोगों की मांग बढ़ना स्वाभाविक है। अर्थक्वेक इंजीनियरिंग एक इंटरडिसीप्लीनरी फील्ड है, जिसके तहत भूकंप को ध्यान में रखते हुए इमारतों, पुलों आदि का निर्माण एवं अध्ययन किया जाता है। इसका उद्देश्य इन संरचनाओं को भूकंप से निपटने में सक्षम बनाना है। इसमें पारंगत होने के लिए मददगार प्रमुख संस्थान हैं- आईआईटी-रुड़की, जामिया मिलिया इस्लामिया दिल्ली, एनआईटी सिलचर।

साइंस राइटिंग

आजकल हेल्थ, लाइफस्टाइल और एनवायरनमेंट में नित नई रिसर्च और आविष्कार हो रहे हैं। इनका अध्ययन और जानकारी रखना और इन्हें आसान शैली में आम लोगों तक पहुंचाना भी बेहद जरूरी है। आप साइंस राइटिंग में एक्सपर्ट बनकर ऐसा कर सकते हैं। इस फील्ड में पारंगत होने के लिए आप इंडियन कम्यूनिकेशन सोसायटी, नेशनल काउंसिल ऑफ साइंस म्यूजियम्स आदि संस्थानों की मदद ले सकते हैं।

न्यूक्लियर साइंस

न्यूक्लियर साइंस एक वृहद् क्षेत्र है, जिसके अनुप्रयोग परमाणु ऊर्जा के अलावा न्यूक्लियर मेडिसिन, माइनिंग और एनवायरनमेंटल रिसर्च में भी कारगर होते हैं। इसमें जाना चाहते हैं तो इन्हें ज्वाइन करें- साहा इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फीजिक्स, सेंटर फॉर न्यूक्लियर मेडिसिन पंजाब विश्वविद्यालय, एम्स दिल्ली आदि।

बायोइंफॉर्मेटिक्स

बायोइंफॉर्मेटिक्स में जैविक जानकारी का प्रबंधन करने के लिए कंप्यूटर टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल होता है। विश्लेषित डाटा का प्रयोग जीन आधारित दवा की खोज एवं विकास में किया जाता है। इसके लिए उपयोगी संस्थान हैं- बनस्थली यूनिवर्सिटी, ज्योति विद्यापीठ वूमन यूनिवर्सिटी राजस्थान, एमएनआईटी म.प्र., कलकत्ता विश्वविद्यालय आदि।

फॉरेंसिक साइंस

किसी आपराधिक जांच के दौरान वैज्ञानिक साक्ष्य जुटाने और इनके विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकालने में मदद करने वाली शाखा का नाम है फॉरेंसिक साइंस। यह आपराधिक मामलों में विज्ञान के अनुप्रयोग की शाखा है। प्रमुख संस्थान हैं- एसजीटीबी खालसा कॉलेज डीयू, पंजाब विवि, सौराष्ट्र विवि गुजरात आदि।

एनवायरनमेंटल साइंस

इस स्ट्रीम में एनवायरनमेंट पर इंसानी गतिविधियों से होने वाले असर का अध्ययन किया जाता है। इसके तहत वन्यजीव प्रबंधन, इकोलॉजी, प्रदूषण नियंत्रण और डिसास्टर मैनेजमेंट जैसे विषय पढ़ाए जाते हैं। इन विषयों में एनजीओ और यूएनओ के प्रोजेक्ट्स तेजी से बढ़ रहे हैं। ऐसे में जॉब की अच्छी संभावनाएं हैं।

वॉटर साइंस

यह वॉटर सरफेस से जुड़ी साइंस स्ट्रीम है। इसमें वॉटर क्वॉलिटी मैनेजमेंट हाइड्रोजियोलॉजी, ड्रेनेज बेसिन मैनेजमेंट, हाइड्रोइंफॉर्मेटिक्स, हाइड्रोमिटियोरोलॉजी, जैसे विषयों की पढ़ाई करनी होती है। हिमस्खलन और बाढ़ जैसी आपदाओं को देखते हुए इस फील्ड में रिसर्चर्स की मांग बढ़ रही है।

माइक्रो बायोलॉजी

इस फील्ड के लिए बीएससी लाइफ साइंस या बीएससी माइक्रो-बायोलॉजी कोर्स कर सकते हैं। इसके बाद मास्टर डिग्री और पीएचडी भी का विकल्प है। इसके अलावा फिशरीज साइंस ,पैरामेडिकल, मरीन बायोलॉजी, बिहेवियरल साइंस, जैसे कई क्षेत्र हैं, जिनमें साइंस में रुचि रखने वाले स्टूडेंट्स कैरियर बना सकते हैं।

डेयरी साइंस

भारत में दूध की खपत को देखते हुए इस क्षेत्र में ट्रेंड प्रोफेशनल्स की डिमांड बढने लगी है। डेयरी साइंस के तहत मिल्क प्रोडक्शन, प्रोसेसिंग, पैकेजिंग, स्टोरेज और डिस्ट्रिब्यूशन की जानकारी दी जाती है। साइंस सब्जेक्ट से 12वीं के बाद स्टूडेंट ऑल इंडिया स्तर का एंट्रेंस एग्जाम पास करने के बाद डेयरी टेक्नोलॉजी के चार वर्षीय स्नातक कोर्स में एडमिशन ले सकते हैं। कुछ इंस्टीट्यूट दो वर्षीय डिप्लोमा कोर्स भी करवाती हैं।

फ़ूड टेक्नोलॉजी एंड साइंस

इस फील्ड में स्टूडेंट्स को एग्रो व डेयरी प्रोडक्ट्स के प्रिजर्वेशन एवं प्रोसेसिंग में ट्रेंड किया जाता हैं। इसके तहत प्लांट एंड क्रॉप फिजियोलॉजी,क्रॉप प्रोडक्शन के सिद्धांत,जेनेटिक्स,स्टैटिस्टिकल एनालिसिस, एक्सपेरिमेंटल डिजाइन,फ़ूड मार्केटिंग एंड प्रोडक्ट डेवलपमेंट, फ़ूड प्रोसेसिंग,फ़ूड इंजीनियरिंग,न्यूट्रिशनल क्वालिटी,फ़ूड क्वालिटी एश्योरेंस आदि उपयोगी चीजें सिखाई जाती हैं। इसके बाद चाय,कॉफी,जूस,मसाले, सॉस,डेयरी, आयल एंड फैट्स व आटा-मैदा आदि किसी की इंडस्ट्री में रोजगार पा सकता है।

न्यूट्रीशन एंड डाइटेटिक्स

विज्ञान की इस ब्रांच में फ़ूड की पोषण क्षमता और सेहत पर उसके प्रभाव की शिक्षा दी जाती है। विद्यार्थियों को सिखाया जाता है कि व्यक्ति की सेहत और पोषण संबंधी जरूरतों के मुताबिक़ कैसी डाइट की सलाह दी जाये। इसके तहत रोगों के इलाज और रोकथाम के लिए भी भोजन का महत्व बताया जाता है। यह कोर्स बायोलॉजी, केमिस्ट्री,पब्लिक हेल्थ,न्युट्रिशन एंड मेडिसिन के एकेडमिक बैकग्राउंड वालों के लिए विशेष उपयोगी है, इसमें ट्रेंड लोग अस्पतालों, क्लिनिक्स और स्पोर्ट्स सेंटर्स में डाइटिशियन के रूप में काम कर सकते हैं।

वह दृष्टि जिसने राष्ट्र का निर्माण किया (सरदार पटेल और एकीकृत भारत का निर्माण)

देव राव

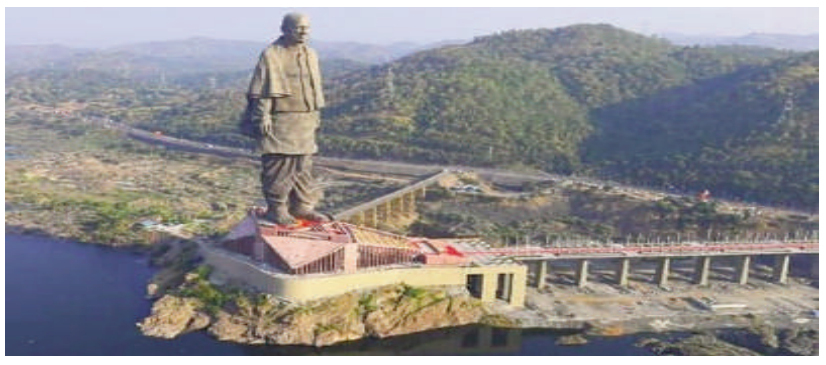

भारत की एकता के पीछे लौह इच्छाशक्ति

जब 1947 में भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की, तब तिरंगा देशभर में लहराया, लेकिन "एक भारत" का विचार अभी भी नाजुक था। उपमहाद्वीप कई हिस्सों में बँटा हुआ था—एक ओर ब्रिटिश भारत और दूसरी ओर 560 से अधिक रियासतें, जिनके अपने-अपने राजा, सेनाएँ और आकांक्षाएँ थीं। एक संयुक्त, लोकतांत्रिक गणराज्य का सपना उस समय सुनिश्चित नहीं था।

ऐसे ऐतिहासिक मोड़ पर सरदार वल्लभभाई पटेल, जो उस समय भारत के उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री थे, राष्ट्रीय एकता के शिल्पकार के रूप में उभरे। पटेल की अटूट दृढ़ता, कूटनीतिक कुशलता और दूरदृष्टि ने इन बिखरे हुए क्षेत्रों को एक राष्ट्र के सूत्र में पिरो दिया।

इतिहासकार राजमोहन गांधी कहते हैं—

"एकता की प्रेरणा जिसने पटेल के कार्य को मार्गदर्शन दिया, वही आधुनिक भारत की नींव है। आदर्शवाद से अधिक उनके यथार्थवाद ने देश को एकजुट रखा।"

एकीकरण का मिशन

दृढ़ विश्वास और राजनीतिक सूझबूझ से लैस पटेल और उनके सचिव वी.पी. मेनन ने रियासतों के शासकों को भारत में सम्मिलित होने के लिए राज़ी करने में अथक प्रयास किए। उन्होंने "एग्रीमेंट ऑफ एक्सेशन (Instrument of Accession)" को एक कानूनी उपकरण के रूप में उपयोग किया और रियासतों के राजाओं की जिम्मेदारी व नियति की भावना को संबोधित किया।

(एग्रीमेंट ऑफ एक्सेशन)

1949 के मध्य तक लगभग सभी रियासतें—कुछ जटिल मामलों जैसे हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर को छोड़कर—भारतीय संघ में शामिल हो गईं। पटेल ने स्वयं कहा था—

"अब हर भारतीय को भूल जाना चाहिए कि वह राजपूत है, सिख है या जाट; उसे केवल यह याद रखना चाहिए कि वह भारतीय है।"

यह केवल राजनीतिक वार्ता नहीं थी—यह स्वतंत्र भारत की पहली कूटनीतिक कवायद थी जिसने देश के मानचित्र, आत्मा और प्रशासनिक एकता को परिभाषित किया।

एकीकरण से राष्ट्र निर्माण तक

पटेल का प्रभाव केवल एकीकरण तक सीमित नहीं रहा। देश के पहले गृह मंत्री के रूप में उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) और भारतीय पुलिस सेवा (IPS) की स्थापना की। उनका मानना था कि ये संस्थाएँ कुशल प्रशासन के माध्यम से देश को एक सूत्र में बाँधेंगी।

उनकी इस दूरदृष्टि ने भारत को एक "इस्पाती ढाँचा" प्रदान किया जो सात दशकों से अधिक समय से कायम है।

पटेल ने कहा था—

"भारत की एकता बल प्रयोग से नहीं, बल्कि विश्वास से प्राप्त हुई है।"

यह कथन उनके राजनीतिक दर्शन का सबसे स्थायी सत्य है।

एकता दिवस का शाश्वत अर्थ

पटेल के अद्वितीय योगदान को मान्यता देते हुए, भारत सरकार ने 2014 में 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस (Rashtriya Ekta Diwas) घोषित किया। इस दिन देशभर में "रन फॉर यूनिटी", सामूहिक शपथ ग्रहण और भव्य एकता परेड आयोजित की जाती है—जो भारत की सामूहिक एकता की इच्छाशक्ति का प्रतीक है।

इस वर्ष जब भारत सरदार पटेल की 150वीं जयंती मना रहा है, तब उनकी प्रासंगिकता और भी गहरी प्रतीत होती है। राजनीतिक ध्रुवीकरण और सांस्कृतिक विविधता के इस युग में पटेल का उदाहरण हमें याद दिलाता है कि एकता कोई नारा नहीं, बल्कि एक सतत नागरिक जिम्मेदारी है।

विरासत का पुनर्जीवन

स्वतंत्रता के 78 वर्ष बाद भी भारत की आंतरिक एकता को निरंतर पोषण की आवश्यकता है।

क्षेत्रीय आकांक्षाएँ, सामाजिक विभाजन और भाषाई विविधताएँ अक्सर संघीय ढाँचे की मजबूती की परीक्षा लेती हैं। लेकिन पटेल की भावना हर सहमति और हर सामूहिक प्रयास में जीवित है जो एक बेहतर भारत के निर्माण की दिशा में उठाया जाता है।

उनका संदेश आज भी युगों से गूंज रहा है—

"एकता के बिना मानव शक्ति कोई शक्ति नहीं है, जब तक वह संगठित और समन्वित न हो।"

आँसू जब प्रार्थना बनते हैं — तब माँ बोलती है

संसार की समस्त सृष्टि में यदि कोई शक्ति ईश्वर से भी ऊपर है, तो वह है — माँ की ममता। वह ममता एक ऐसी दिव्य ज्योति है, जो अंधकारमय युगों में भी दिशा दिखाती है; एक ऐसा असीम सागर है, जिसकी तरंगें हर तूफ़ान को निस्तब्ध कर देती हैं। माँ का स्नेह केवल भाव नहीं — अस्तित्व का मूल मंत्र है; वह अदृश्य धागा, जो गर्भ में जीवन की रचना करता है और मृत्यु के पार भी आत्मा को बाँधे रखता है। जब ईश्वर सृष्टि की रचना करते हैं, तब माँ उसे अपने अंश से पोषित करती हैं। उनकी करुणा में समूचे ब्रह्मांड की शक्तियाँ समाहित हैं; उनका हृदय वह मंदिर है, जहाँ सृष्टि का हर जीव शरण पाता है। माँ वह आदिशक्ति हैं, जिनके आँचल में संसार अपनी पहली साँस लेता है, और जिनकी गोद में अंतिम विश्राम पाता है। देवता भी जिनके चरणों में नमन करते हैं — क्योंकि माँ का प्रेम ही वह परम सत्य है, जो ईश्वर की सृष्टि को पूर्णता प्रदान करता है।

जन्म के उस अलौकिक क्षण से, जब शिशु की पहली किलकारी माँ के हृदय को स्पर्श करती है, उसी पल माँ का स्नेह एक दैवी चमत्कार बन जाता है। वह नवजात केवल माँ का अंश नहीं — उसकी आत्मा का प्रतिबिंब होता है, जो नौ महीनों तक उसकी धड़कनों के संगीत में पला, उसके रक्त से पोषित हुआ। माँ अपनी रातों की नींद, अपने सुख, अपनी थकान — सब विस्मृत कर देती है; उसकी लोरी में संसार की सबसे मधुर धुन बसती है। बच्चे की एक मुस्कान उसके लिए अमृत का प्याला बन जाती है, और एक आँसू उसके हृदय में समुद्र सी वेदना जगा देता है। माँ की गोद इस धरती का प्रथम स्वर्ग है — जहाँ भय का अस्तित्व नहीं, केवल सुरक्षा की गरमाहट है; जहाँ दुःख नहीं, बस प्रेम की असीम छाया है। यह स्नेह न शब्दों में बँधता है, न समय में थमता — यह उतना ही अनंत है जितना हिमालय की अटल चोटियाँ, जो कभी झुकती नहीं।

माँ का प्रेम जीवन की प्रथम शिक्षा है, जो बच्चे को अस्तित्व का अर्थ सिखाती है। जन्म से लेकर बाल्यावस्था तक वह हर कदम पर साथ होती है — रेंगते शिशु को सहारा देती है, पहला शब्द सिखाती है, गिरने पर आँचल से आँसू पोंछती है। बच्चे की छोटी-सी सफलता पर उसका हृदय गर्व से भर उठता है, और असफलता में उसके आँसू प्रार्थना बन जाते हैं। फिर भी वह कभी श्रेय नहीं लेती; बस मुस्कुराकर कहती है — "तुम खुश रहो, यही मेरी पूजा है।" रातों को जागकर दवा पिलाना, परीक्षा की चिंता करना, दोस्तों के झगड़ों में मध्यस्थ बनना — यही माँ का नित्य धर्म है। वह चट्टान सी अडिग, दीपक सी उजली और सागर सी विशाल होती है। उसके स्नेह से बच्चा सीखता है धैर्य, त्याग और निःस्वार्थता — वे गुण जो जीवन को अर्थ देते हैं। माँ का प्रेम केवल भावना नहीं, यह परिवार की आधारशिला है — जो पिता की मेहनत को दिशा देता है, भाई-बहनों के संबंधों में ऊष्मा भरता है। उसके हाथों से बने भोजन में स्वाद नहीं, आशीर्वाद होता है; त्योहारों की व्यस्तता में उसकी मुस्कान ही घर का उत्सव बन जाती है। जहाँ माँ होती है, वहाँ केवल दीवारें नहीं होतीं — वहाँ घर जीवित होता है, वहाँ हर कोना प्रेम की धड़कन से गूंजता है।

बेटियों के प्रति माँ का स्नेह अमृत से भी अधिक मधुर और सागर से भी अधिक गहरा होता है। समाज भले कहे कि "बेटी पराया धन है", पर माँ के लिए वह उसकी आत्मा का प्रतिबिंब, उसकी अधूरी प्रार्थना का उत्तर और उसके अस्तित्व की निरंतरता होती है। बचपन से ही माँ बेटी को न केवल चलना सिखाती है, बल्कि उड़ना भी सिखाती है — किताबों की दुनिया में, खेल के मैदान में, और जीवन के हर सपने में उसका हाथ थामे रहती है। जब विदाई का क्षण आता है, तो माँ की आँखों से आँसू नहीं, बल्कि आशीर्वाद की गंगा बहती है — "हे प्रभु, मेरी बिटिया को सदा सुखी रखना, उसके आँचल में हमेशा मुस्कानें बुनती रहना।" ससुराल की दूरी भी इस प्रेम को कम नहीं कर पाती — फोन पर वही चिंता, त्योहारों पर वही स्नेहभरे उपहार, और हर बात में मायके की एक मधुर छाया। जब बेटी किसी दुःख में हो, तो माँ का एक वाक्य — "सब ठीक होगा, चिंता मत करो" — उसके लिए किसी दैवी वरदान से कम नहीं। यह बंधन केवल भावनाओं का नहीं, बल्कि पीढ़ियों को जोड़ने वाला अमर सूत्र है — वही सूत्र जो बेटी को आगे चलकर माँ बनने की प्रेरणा देता है।

और जब नाती-पोते आते हैं, तो माँ की ममता जैसे पुनर्जन्म लेती है। उम्र की सीमाएँ मिट जाती हैं — फिर लोरियाँ गाती है, पुराने दिनों की कहानियाँ दोहराती है। पोते की मुस्कान में वह अपना खोया हुआ बचपन देखती है, उनकी शरारतों में फिर जीवन का संगीत सुनती है। उसकी दुआएँ अब और विस्तृत हो जाती हैं — "मेरे बच्चों के बच्चे सदा हँसते रहें, सदा खिलखिलाते रहें।" यह प्रेम जीवन को दूसरा वसंत देता है, थकान को ऊर्जा में और अनुभव को आशीर्वाद में बदल देता है। माँ उस कल्पवृक्ष के समान है — जिसकी जड़ें ममता हैं, शाखाएँ संतानों की मेहनत, और फल उसका असीम आशीर्वाद। वह न केवल परिवार को जीवित रखती है, बल्कि उसे प्रेम का जीवंत वृक्ष बना देती है — जो हर युग में अपनी छाँव से जीवन को शीतल करता है।

बुढ़ापे में भी माँ का स्नेह पर्वत-सा अटल और दीपक-सा अविचल रहता है। काँपते कदमों से वह अब भी घर को सँभालती हैं, दर्द में डूबी होने पर भी पहला प्रश्न यही करती हैं — "सब ठीक तो है?" उनकी पीड़ा मौन रहती है, पर चिंता मुखर — यही माँ की सबसे सुंदर परिभाषा है। वह सिखाती हैं कि सच्चा प्रेम वह है जो स्वयं को भूलकर भी दूसरों की खुशी में मुस्कुराना जानता है। माँ केवल एक शब्द नहीं, वह सभ्यता की प्रथम रचयिता हैं — जिनसे करुणा का प्रवाह, क्षमा का सार और सहानुभूति का अर्थ जन्म लेते हैं। उनका शाश्वत मंत्र — "सर्वे भवन्तु सुखिनः" — सृष्टि के हृदय में पवित्रता भर देता है।

माँ व्यक्ति नहीं, वह भावना हैं — जो नदियों की तरह बहती हैं, सूर्य की तरह आलोक फैलाती हैं। उनका प्रेम हमारी ढाल है, उनकी दुआएँ हमारी अमूल्य पूँजी। जहाँ माँ नहीं होती, वहाँ संसार अधूरा है — जैसे दीप बिना ज्योति, जैसे मंदिर बिना प्रार्थना। आप वह दीपशिखा हैं जो हर अंधकार को आलोक में बदल देती हैं, वह प्रार्थना हैं जो हर संकट को शांत कर देती है, और वह ममता हैं जिसके स्पर्श से मानवता को अपना अर्थ मिलता है। माँ, आपका स्नेह समय की सीमाओं से परे, अनंत और अमिट है — और हमारी कृतज्ञता उतनी ही शाश्वत, जितनी आपकी करुणा।

कृति आरके जैन, बड़वानी (मप्र)

महागठबंधन बनाम एनडीए जंग : जंगल राज बनाम मंगल राज

डॉ घनश्याम बादल

6 एवं 11 नवंबर को दो चरणों में होने वाले मतदान के लिए बिहार की सियासत में कमर कस ली है। चुनाव प्रचार जोरों पर है और महागठबंधन हो या एनडीए अथवा जनसुराज पार्टी हो या फिर दूसरे छोटे-छोटे दल सब अपनी-अपनी डफली लेकर अपना-अपना राग अलापने में लगे हैं। जिस आम आदमी की पूरे पांच साल उपेक्षा की जाती है आज वही आदमी सबके आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। जाति,धर्म, क्षेत्र, भाषा, संप्रदाय, रिश्तेदारी, पैसा, शराब, लट्ठ या फिर जिस भी माध्यम से हो सके उसके वोट पाने के लिए सारे नेता लालायित हैं।

फिलहाल माहौल देखकर लगता है कि बिहार इस समय जय-जयकार और हा - हायकार के दौर में है।

एनडीए के 'संकल्प पत्र' और महागठबंधन के 'तेजस्वी प्रण' के छपते ही एक दूसरे के बारे में आरोप प्रत्यारोप, तू -तू, मैं - मैं और काट छांट का दौर जोर पकड़ चुका है।

इन विधानसभा चुनाव के संदर्भ में कहे तो अब बिहार राज्य की राजनीति के लिए एक निर्णायक मोड़ आ चुका है। इस बार का चुनाव महज़ सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि दो अलग-अलग राजनीतिक दर्शन और विकास दृष्टि के बीच टकराव का प्रतीक बन गया है। एक ओर महागठबंधन (राजद, कांग्रेस, वी आइ पी, वामदल) जनता को रोजगार, सामाजिक न्याय और राहत के वादों से जोड़ने की कोशिश कर रहा है, तो दूसरी ओर एनडीए (जदयू, भाजपा, हम,लोजपा,) विकास, सुशासन और स्थायित्व की राजनीति को फिर से सामने रख अपनी २० वर्ष की उपलब्धियां एवं सुशासन के नाम पर वोट मांग रहा है।

महागठबंधन:रोजगार,राहत और सपने

तेजस्वी यादव के नेतृत्व में महागठबंधन ने घोषणापत्र को "तेजस्वी प्रण" नाम दिया है। इसका केंद्र बिंदु रोजगार सृजन है, वादा है कि "हर परिवार में कम-से-कम एक सरकारी नौकरी" दी जाएगी और इसके लिए नई नौकरी गारंटी कानून लाया जाएगा, महिलाओं को "माई-बहिन-मान योजना" के तहत १,500 प्रतिमाह सहायता, २०० यूनिट मुफ्त बिजली और 500 में गैस सिलेंडर जैसी राहत योजनाएँ के सपने दिखाए जा रहे हैं। किसानों के लिए ऋण माफी और फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी का वादा भी है और शिक्षा व स्वास्थ्य को सरकारी ढाँचे के पुनरुद्धार के साथ जोड़ते हुए, महागठबंधन अपने घोषणापत्र को गरीब, पिछड़े और बेरोजगार वर्ग की आकांक्षाओं से सीधे जोड़ने का प्रयास कर रहा है। इतना ही नहीं पुरानी पेंशन योजना जीविका दीदी के वेतन बढ़ाने उनकी नौकरियों को स्थाई करने जैसे आकर्षक वायदे भी किए गए हैं। यहां महागठबंधन की राजनीतिक रणनीति स्पष्ट है वह युवाओं और महिलाओं को आकर्षित करके एक व्यापक सामाजिक गठजोड़ बनाना चाहता है। जातिगत समीकरणों के हिसाब से महा गठबंधन का निशान मुख्य रूप से यादव मुस्लिम एवं पिछड़े वर्ग पर है मुसलमान को अपनी ओर खींचने के लिए तेजस्वी और उनके साथ ही सरकार बनते ही वक्फ कानून को फाड़कर फेंक देने की बातें कर रहे हैं तो १० महीने में हर घर नौकरी का सपना भी बेच रहे हैं। चुनावी माहौल देखकर इस बार लग रहा है कि महागठबंधन पिछली भूलों से काफी सबक सीख कर मैदान में उतरा है और एंटी इनकंबेंसी फैक्टर का भीइस्तेमाल वह बखूबी कर रहा है। अपनी रणनीति को और स्पष्ट करने की दृष्टि से बिहार में महागठबंधन ने तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री के चेहरे के तौर पर भी पेश कर दिया है। अब देखने वाली बात यह है कि इन सब बातों का जनता पर क्या फर्क पड़ता है और महागठबंधन जन समर्थन को वोटो में कितना परिवर्तित करने में सफल होता है।

एनडीए : विकास और सुशासन

नीतीश कुमार और भाजपा गठबंधन की ओर से जारी घोषणापत्र "विकसित बिहार संकल्प पत्र" का मुख्य संदेश है "रोजगार के साथ विकास की निरंतरता"। एनडीए ने वादा किया है कि अगले पाँच वर्षों में 1 करोड़ युवाओं को रोजगार या स्वरोजगार के अवसर दिए जाएंगे। महिलाओं के लिए मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत 10,000 की सहायता राशि और सरकारी नौकरियों में ३५ % आरक्षण की घोषणा की गई है। एनडीए का घोषणापत्र इंफ्रास्ट्रक्चर, सड़क, बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा और उद्योग में निवेश को प्राथमिकता देता है। "सुशासन" को पुनः केंद्रीय नारा बनाते हुए, नीतीश कुमार यह संदेश देना चाहते हैं कि बिहार को विकास की स्थिरता चाहिए, प्रयोग नहीं।

महागठबंधन के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए वह लोगों को वह 'जंगलराज' की भी खूब याद दिला रहा है। वह लालू यादव के परिवार पर भ्रष्टाचार में डूबने एवं अपराधियों को संरक्षण देने का प्रचार करके खासतौर पर महिला एवं युवा वोटो को अपनी ओर रिझाने की कोशिश कर रहा है। तेज प्रताप यादव के अलग हो जाने के बाद दबे स्वर में यह भी कहा जा रहा है कि जो व्यक्ति अपने परिवार को एक नहीं रख पाया वह महागठबंधन को एक कैसे रख पाएगा। स्टार प्रचारक को के रूप में वहां खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्रियों सहित भाजपा के सारे बड़े स्टार प्रचारक बिहार में घूम रहे हैं। निश्चित ही बड़े नेताओं का एक प्रभामंडल होता है लेकिन १० साल तक सरकार को रखने के बाद इस प्रभामंडल के तेज से आम आदमी कितना प्रभावित होता है यह आने वाले चुनाव के परिणाम तय करेंगे।

तीसरा पक्ष जन सुराज पार्टी

पिछले दो चुनावों के मुकाबले बिहार में इस बार एक तीसरा पक्ष भी उभर कर सामने आया है और वह है प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी। हालांकि अभी इस दल का न तो संगठन अधिक बड़ा है और न ही उसके पास इतने समर्पित कार्यकर्ता दिखाई दे रहे हैं लेकिन जिस प्रकार से आंकड़े एवं प्रमाण देकर प्रशांत किशोर प्रचार कर रहे हैं उसका फर्क निश्चित रूप से इन दोनों बड़े गठबंधनों पर पड़ने वाला है। यदि सर्वेक्षणों की बात मानें तो प्रशांत किशोर की पार्टी को लगभग 10% वोट मिलने की संभावना जताई जा रही है इतने वोटो के बल पर भले ही वह ज्यादा सीट न जीत पाएं लेकिन दोनों ही गठबंधनों का समीकरण जरूर बिगाड़ सकते हैं। अब बिहार के लोग उन्हें कितना स्वीकार करते हैं और वोट या विधायकों से उनकी झोली कितनी भरती है यह भी 14 नवंबर को चुनाव परिणाम के बाद ही पता चलेगा।

वादों की तुलना

जहाँ महागठबंधन लोकलुभावन योजनाओं के सहारे जनसहानुभूति जुटा रहा है, वहीं एनडीए व्यवहारिक और नीतिगत दृष्टि से आर्थिक विकास की बात कर रहा है तो प्रशांत किशोर दोनों की ही पोल पट्टी खोल रहे हैं। महागठबंधन किसान ऋण को माफी और समर्थन मूल्य का आश्वासन देता है तो एनडीए किसानों को निवेश, तकनीक और मार्केट कनेक्टिविटी के माध्यम से मज़बूत करने की बात करता है।

जनता क्या चाहे

बिहार की जनता अब वादों की नहीं, कार्यान्वयन की राजनीति देखना चाहती है। २०२० से अब तक महँगाई, बेरोजगारी और पलायन जैसे मुद्दे तीखे बने हुए हैं।

महागठबंधन जहाँ इन्हें सत्ता परिवर्तन से हल करने की बात कर रहा है, वहीं एनडीए कह रहा है कि "विकास की प्रक्रिया में रुकावट नहीं आनी चाहिए"।

ग्रामीण इलाकों में नौकरी और बिजली-बिल राहत जैसे मुद्दे गूंज रहे हैं, जबकि शहरी मतदाता विकास की गति को प्राथमिकता दे रहे हैं। महिलाओं का झुकाव इस बार निर्णायक भूमिका निभा सकता है, क्योंकि दोनों गठबंधन उनके लिए अलग-अलग राहत और सशक्तिकरण योजनाएँ लेकर आए हैं।

महागठबंधन जहाँ "रोजगार और न्याय" के एजेंडे पर जनता को साथ लाना चाहता है, वहीं एनडीए "विकास और स्थिरता" की राजनीति से भरोसा बनाए रखना चाहता है फैसला अब मतदाताओं के हाथ है कि वे तय करें कि उन्हें राहत का रास्ता चाहिए या विकास की निरंतरता।

नुआपाड़ा उपचुनाव: घर से मतदान प्रक्रिया शुरू, वरिष्ठ मतदाता 2 तारीख तक घर से ही करेंगे मतदान

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

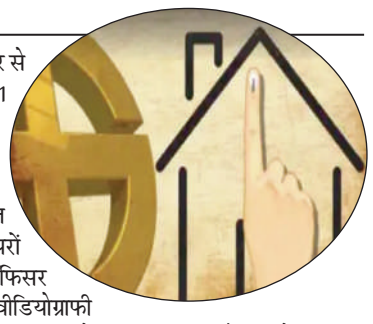

भूबनेश्वर : नुआपाड़ा विधानसभा उपचुनाव के लिए आज से घर से मतदान की प्रक्रिया शुरू हो गई है। घर पर वरिष्ठ मतदाता वोट देंगे। 251 वरिष्ठ मतदाता घर पर ही मतदान करेंगे। घर पर मतदान 2 तारीख तक जारी रहेगा। इसके लिए 15 मतदान दल नियुक्त किए गए हैं। प्रत्येक दल में 2 मतदान अधिकारी, एक माइक्रो इंस्पेक्टर, एक सुरक्षा अधिकारी और एक वीडियोग्राफर हैं। 85 वर्ष से अधिक आयु के और 40 प्रतिशत से अधिक विकलांगता वाले 251 दिव्यांग मतदाता इस प्रक्रिया में अपने घरों से डाक मतपत्रों के माध्यम से गुप्त रूप से मतदान करेंगे। रिटर्निंग ऑफिसर सुरमी सोरेन ने घोषणा की कि मतदान प्रक्रिया की पारदर्शिता के लिए वीडियोग्राफी की जाएगी। जिला कलेक्टर ने तैनात सभी अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि कोई भी पात्र मतदाता इस सुविधा से वंचित न रहे।

नवीन बाबू पहले नवीन आवास छोड़ें, विरोधी जितना मजबूत होगा उतना अच्छा: राजस्व मंत्री

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : नुआपाड़ा उपचुनाव को लेकर राज्य की राजनीति गरमा गई है। इस बीच, राजस्व मंत्री सुरेश पुजारी ने कहा है कि मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी जल्द ही प्रचार के लिए मैदान में उतरेंगे। पहले चरण के चुनाव की घोषणा हो चुकी है और दूसरे चरण में मुख्यमंत्री का जल्द ही नुआपाड़ा आने का कार्यक्रम है।मुख्यमंत्री का मैराथन अभियान अब अपने अंतिम चरण में है। दूसरी ओर, विपक्षी नेता ने राजस्व मंत्री नवीन पटनायक के नुआपाड़ा अभियान की आलोचना की है। उन्होंने कहा, नवीन बाबू को अपने आवास से बाहर आना चाहिए। विपक्ष जितना मज़बूत होगा, उतना ही अच्छा होगा। हमें नवीन बाबू को मैदान में लाने के जितने ज़्यादा मौके मिलेंगे, हमें काम करने की उतनी ही ज़्यादा प्रेरणा मिलेगी।

खंडगिरि पहाड़ियों पर स्थित राधाकुंड में तृतीय वार्षिक श्री राधा पद दर्शन उत्सव - 2025

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

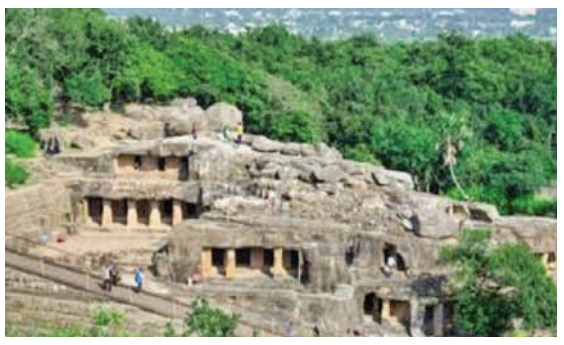

भुवनेश्वर: दिव्य आत्मा ------ विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 31.10.25 रिखी शुक्रवार को भक्तों द्वारा खंडगिरि पहाड़ियों पर स्थित राधाकुंड में प्रातः 9:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक तृतीय वार्षिक ₹श्री राधा पद दर्शन उत्सव₹ आयोजित किया जाएगा। पांडवों के वनवास के दौरान, योगेश्वर श्री कृष्ण पांडवों के साथ रहते थे। वनवास के दौरान, जब वे खंडगिरि पहाड़ियों के वनों में रह रहे थे, तो समाचार पाकर देवी श्री राधा श्री कृष्ण के दर्शन हेतु खंडगिरि पहुँचीं। उन्होंने खंडगिरि पहाड़ियों पर स्थित फव्वारा कुंड में स्नान किया था। उस पवित्र कुंड को बाद में भक्त राधाकुंड के रूप में पूजते हैं। उस राधाकुंड में श्री राधा के पदचिह्न आज भी भक्तों द्वारा अस्पष्ट रूप से पहचाने जाते हैं। इस पावन स्थली में श्री जगन्नाथ चेतना महासत्संग के संस्थापक - अध्यक्ष प्रसन्नजी के प्रयास से जगन्नाथ प्रेमियों एवं भक्तों के साथ-साथ आमजन भी आंवला मास की नवमी तिथि को राधा पाद दर्शन उत्सव मनाते हैं। अतः सभी भक्तों, साधु-संतों, महंतों, सेवकों, माताओं, बंधुओं से अनुरोध है कि वे धूप, दीप, पुष्प, फल, नैवेद्य एवं राधा जी के चरण धोने हेतु कलश/ढाल लेकर पधारें तथा इस पावन कार्यक्रम में सम्मिलित होकर कार्तिक मास में धर्म लाभ अर्जित करें।

भारतीय उद्योगपतियों के खिलाफ नफरत की साजिश क्यों

राजेश कुमार पासी

अमेरिका के प्रसिद्ध अखबार 'द वाशिंगटन पोस्ट' के एक लेख में एलआईसी पर आरोप लगाया गया है कि उसके निवेश से जुड़े फैसले बाहरी फैक्टर्स से प्रभावित होते हैं। वास्तव में बाहरी फैक्टर्स का उल्लेख करके केंद्र सरकार पर आरोप लगाया गया है कि वो एलआईसी पर दबाव डालकर निवेश करवा रही है। लेख में कहा गया है कि एलआईसी ने अडाणी ग्रुप में लगभग 33000 करोड़ रुपए निवेश किए हैं। एलआईसी ने इस लेख में लगाए गए आरोपों का खंडन करते हुए कहा है कि निवेश के फैसले एलआईसी बोर्ड से मंजूर पॉलिसी के अनुसार, पूरी जांच-पड़ताल के बाद स्वतंत्र रूप से लिए जाते हैं। कंपनी का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में बुनियादी बातों और विस्तृत जांच-पड़ताल के आधार पर विभिन्न कंपनियों में निवेश के फैसले लिए गए हैं। यही कारण है कि कंपनी का निवेश मूल्य 2014 से 10 गुना बढ़कर 1.56 लाख करोड़ रुपये से 15.6 लाख करोड़ रुपये हो गया है जो मजबूत फंड प्रबंधन को दर्शाता है।

कांग्रेस ने इस मुद्दे पर सरकार को घेरना शुरू

कर दिया है। सोशल मीडिया पर विपक्ष के समर्थक मोदी सरकार पर घोटाले का आरोप लगा रहे हैं। विपक्ष के कुछ नेताओं ने बयान दिया है कि मोदी सरकार एलआईसी का पैसा चोरी करके अडाणी को दे रही है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने आरोप लगाया है कि अडाणी समूह को फायदा पहुंचाने के लिए एलआईसी और उसके 30 करोड़ पॉलिसी धारकों की बचत का व्यवस्थित रुप से दुरुपयोग किया गया है। हिंडनबर्ग की रिपोर्ट आने पर भी विपक्ष ने जबरदस्त हंगामा किया था लेकिन आज वो रिपोर्ट देने वाली कंपनी बंद हो गई है। उसकी झूठी रिपोर्ट के कारण अडाणी समूह के शेयरों की कीमत लगभग आधी हो गई थी। बेशक बाद में अडाणी समूह को मामले में क्लीन चिट मिल गई लेकिन उसका नुकसान अभी तक पूरा नहीं हुआ है। उस झूठी रिपोर्ट के कारण लाखों भारतीय शेयरधारकों को लाखों करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था। सवाल यह है कि अमेरिकी अखबार ऐसी रिपोर्ट अपने देश की कंपनियों के बारे में क्यों नहीं जारी करते। कितने ही अमेरिकी बैंक डूब गए लेकिन किसी अखबार को पता नहीं चला कि वो बैंक डूबने वाले हैं। ऐसी रिपोर्ट जारी करने के पीछे भारतीय अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाने की मंशा दिखाई देती है।

राहुल गांधी मोदी सरकार पर पहले भी सरकारी कंपनियों को डुबाने का आरोप लगा चुके हैं। उन्होंने एचएएल को बर्बाद करने का आरोप लगाया था जबकि आज एचएएल पहले से कहीं ज्यादा बड़ी कंपनी बन चुकी है और उसके पास इतना काम है कि उसके लिए करना मुश्किल हो रहा है। एसबीआई के बारे में भी यही कहा गया था कि मोदी सरकार उसको बर्बाद कर रही है जबकि आज एसबीआई लगभग 60 हजार करोड़ रुपये सालाना की कमाई कर रहा है। एलआईसी लगभग 55 लाख करोड़ की संपत्ति का प्रबंधन करती है और उसकी कुल संपत्ति लगभग 53 लाख करोड़ रुपये हैं। कंपनी ने अपनी संपत्ति का एक प्रतिशत से भी कम हिस्सा अडाणी समूह में निवेश किया है जिस पर उसे जबरदस्त मुनाफा हो रहा है। सिर्फ हिंडनबर्ग की रिपोर्ट आने पर ही कंपनी को नुकसान हुआ था जो बाद में पूरा हो गया।

घाटशिला चुनाव पूर्व जेएमएम काफिले में शामिल हुए भाजपा के चार नेता, फैली सनसनी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर। घाटशिला उपचुनाव से पूर्व एक अजीबोगरीब स्थिति देखने को मिली है। कुछ रणछोड़ नेताओं ने अपना मोर्चा छोड़ शत्रु पक्ष से हथियार उठा लिया है वह भी अपने ही प्रतिनिधित्व कर रहे रणबांकुरे पर। कहते हैं युद्ध और प्यार में सबकुछ जायज होता है, पर आज राजनीति में भी सबकुछ जायज है।

भाजपा छोड़ झारखंड मुक्ति मोर्चा का सदस्यता ग्रहण करने वालों में पूर्वी सिंहभूम जिला परिषद के उपाध्यक्ष पंकज सिन्हा, भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष सह प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सौरभ चक्रवर्ती, जिला परिषद सदस्य खगेन महतो, घाटशिला भाजपा मंडल अध्यक्ष कौशिक सिन्हा, मुसाबनी के पूर्व मंडल अध्यक्ष तुषार पात्रों, भाजपा मीडिया प्रभारी सुरेश महाली तथा जमशेदपुर के सुप्रसिद्ध जंबू अखाड़ा अध्यक्ष बंटी सिंह सहित कई अन्य प्रमुख नेता शामिल रहे। इन सभी नेताओं ने झारखंड मुक्ति मोर्चा की सदस्यता मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के पास रांची जाकर से ग्रहण की।

यह कदम पूर्वी सिंहभूम की राजनीतिक दिशा में नया समीकरण पैदा करने वाला माना जा रहा है। इस अवसर पर झामुमो के केंद्रीय प्रवक्ता सह पूर्व विधायक कुणाल षड़ंगी एवं जिला परिषद अध्यक्षा बारी मुर्मू भी उपस्थित रहीं।

उधर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी के निर्देश पर प्रदेश महामंत्री मनोज कुमार सिंह ने एक पत्र जारी कर पूर्वी सिंहभूम जिला के चार पार्टी नेताओं को पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल होने के कारण पार्टी से बाहर करने की जानकारी दी है। घाटशिला उपचुनाव प्रचार में इन नेताओं का आचरण पार्टी उम्मीदवार के खिलाफ पाया गया है। बताया जाता है कि चुनाव पूर्व भाजपा नेताओं का जेएमएम खेमे में जाना मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन के लिये भी कम बडा बड़ा राजनीतिक झटका नहीं है।

गोपाष्टमी को समर्पित (कार्तिक शुक्ल अष्टमी) : गौचारण का मर्म सनातन... सर्व सम्पदा बिखरा गौधन !

साधना सोलंकी

वरिष्ठ पत्रकार, जयपुर

कृष्ण युग में ही गौप्रेम के अंकुर फूटे, जब बाल कान्हा ने आज के दिन गौचारण का शुभारंभ किया। ब्रजवासियों को इन्द्र के कोप अहंकार का ग्रास बनने से बचाने गोवर्धन पर्वत का रक्षा कवच दिया। कई युगों की यात्रा करते हम आ पहुंचे कलियुग में। अहंकार अब पग पग है। ऐसे में बेजुबानों की आंखों से झरती पीर की बिसात ही क्या...इसे बांचने का जतन ही कहाँ...! पर नहीं...गौचारण में बसे आचरण को वसुधैवकुटुम्ब में समाहित करने की मुहिम भी इस कुपित अहंकार के बरअक्स जारी है। इस मुहिम को खंगालते मुलाकात हुई गौ धन को जतन से सहेजते, समृद्ध बनाते, सनातन परंपरा को जीवन शैली में उतारते, शुद्धता, जैविकता में देश को अग्रिम बनाने का सपना संजोने वाले किसान, व्यापारी, उद्योगपति और सबसे बढ़कर पर्यावरण, गौ प्रेमी डॉ. अतुल गुप्ता से, जिनका दूसरा नाम जैविक गुरु भी है...

जैसा अन्न वैसा मन

बात गौ धन पर है...गौ सम्पदा पर है...और हमारे आचरण पर भी। जाहिर है यह खानपान से भी जुड़ा है। लोक कहावत कि जैसा खाओ अन्न, वैसा होगा मन। इससे इत्तफाक रखते अतुल कहते हैं कि हम और हमारे जीव जानवर जहरीला नकली मिलावटी खाद्य खाने और तमाम बीमारियों को ढोने को मजबूर हैं। स्वस्थ गायों की खूबसूरती तसवीरों में सिमट के रह गई है। यहां पिंजरापोल गौशाला में तीन हजार करीब गौवंश है, जिनकी बेहतरी के लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं।

जैविक गुरु अतुल की डगर
पच्चीस बरस से जारी सफर !

किसानी न्यारी

डॉक्टर अतुल गुप्ता की शख्सियत को किसी एक परिधि में समेटना मुश्किल है। एक अतुल में अनेक अतुल होने की वे रोचक बानगी हैं। जीवन रंगमंच पर विविध किरदार अदा करने में वे माहिर हैं। एक किरदार प्रगतिशील किसान का है। पारंपरिक भारतीय किसान की दयनीय उदासीन छवि पर उन्हें गहरी कोफ्त है। वे कहते हैं, हमारा किसान अमेरिका के किसान जैसा सम्पन्न क्यों नहीं है? हमारा गौधन उपेक्षित क्यों है..? इन यक्ष प्रश्नों का जवाब भी वे अपने तरीके से दे रहे हैं। हर माह वे गौधन की महत्ता बताने और किसानों को प्रगतिशील बनाने गुलाबीनगरी की पिंजरापोल गौशाला स्थित सनराइज जैविक प्रशिक्षण आश्रम में देशभर से पहुंचे किसानों को प्रशिक्षित करते हैं।

चतुर व्यापारी

श्रोता किसान प्रगतिशीलता के पायदानों पर कदम रखते हैं कि अतुल सफल व्यापार का चतुर चेहरा नजर आने लगते हैं। बकौल अतुल...

पैसे को हटादे...
फिर पूछ कौन है तू
जवाब यह मिलेगा
धरती का बोझ है तू !

हास्य में लिपटा कटु सत्य ही है उक्त पंक्तिया ! इनके पीछे झांकते जीवन के झंझावात, संघर्ष, कई बार की असफलता ही वे कारक हैं जो अतुल को सफल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार दिग्गजों की पंक्ति में खड़ा करते हैं।

जुझारू अतुल

2030 तक राजस्थान को पूरी तरह जैविक राज्य बनाने का आत्मविश्वास अतुल के जुझारूपन को इंगित करता है और उनके एक और किरदार जैविक गुरु को भी।

रिकॉर्ड तोड़ गोबर निर्यातक

गौवंश की बिखरी सम्पदा को गौधन प्रेमी शिद्दत से समृद्ध कर रहे हैं। गत एक बरस में तीन सौ करोड़ कीमत के गाय गोबर व उत्पादों का निर्यात देश से अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में हुआ। इस्लामिक देश कुवैत बड़ा खरीदार है। खजूर की खेती में इसका उपयोग वहां है। आगामी बरसों में इसे दस हजार करोड़ ले जाने का लक्ष्य है।

कुदरत में प्रभु का वास
दैवीय खेजड़ी का पेड़

पिंजरापोल गौशाला स्थित जैविक पादप पौधशाला में सैकड़ो औषधीय जैविक पौधों की भरमार है। मसलन काली हल्दी, तुलसी, आंवला, शतावरी, अश्वगंधा, सर्पगंधा, पारिजात आदि। इन्हीं के संग प्रशिक्षण आश्रम के बाहर परिवार के बड़े बुजुर्ग की सी शान बिखेरता खेजड़ी का त्रिदिशा सर्पाकार विशाल खेजड़ी का वृक्ष। इसमें विराजे हैं अभयदान देते प्रभु काल भैरव। यहाँ जो भी आता है, इन औषधीय पेड़ पौधों और बाबा वृक्ष खेजड़ी के दर्शन से उपजी गहरी आध्यात्मिक अनुभूति व नयनाभिराम हरियाली के आनंद रस में डूबे बिना नहीं रहता। दरअसल खेजड़ी मरुस्थल की सजीवनी है।

अन्तर्राष्ट्रीय सरना धर्म महासम्मेलन में मुख्य अतिथि होगे हेमन्त सोरेन

लुगू बूरू चांटा बाड़ी दोयम गाढ़ से मिले मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से आज कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में लुगू बुरु घांटा बाड़ी धोरोम गाढ़ के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। मौके पर मुख्यमंत्री को प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने अवगत कराया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सोहराय कुनामी (कार्तिक पुर्णीमा) के शुभ अवसर पर लुगू बुरु घांटा बाड़ी धोरोम गाढ़, टी०टी०पी०एस० ललपनिया बोकारो में आगामी 03, 04 एवं 05 नवम्बर 2025 को ₹अन्तर्राष्ट्रीय सरना धर्म महासम्मेलन-2025₹ कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। मौके पर प्रतिनिधिमंडल में शामिल सदस्यों ने मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन को इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होने हेतु सादर आमंत्रित किया।

इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल में लुगू बुरु घांटा बाड़ी धोरोम गाढ़ के अध्यक्ष बबुली सोरेन, सचिव लोबिन मुर्मू सहित मिथिलेश किस्कू, बिंदे सोरेन (मांझी बाबा, जमशेदपुर), सुरेन्द्र टुडू, बुधन सोरेन, सुखराम बेसरा, मेघराज मुर्मू, संतोष हेंब्रम एवं अन्य उपस्थित रहे।

अमर वृक्ष की छांव में भक्ति का अमृत सरोवर

राउरकेला में आंवला नवमी पर उमड़ा श्रद्धा का सागर, महिलाओं ने भक्ति-विज्ञान का संगम किया जीवंत

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला: कार्तिक नवमी के पावन अवसर पर राउरकेला व आसपास के क्षेत्रों में आंवला नवमी श्रद्धा, भक्ति और सांस्कृतिक उल्लास के साथ मनाई गई। हरे-भरे आंवला वृक्षों की छांव में महिलाओं ने 'हरि ॐ' का उच्चारण कर वातावरण को आध्यात्मिक रंगों से भर दिया। दीपों की झिलमिल रोशनी और फूलों से सजे वृक्षों के बीच भक्ति का मधुर सरोवर उमड़ पड़ा।

दर्जनों सखियों ने पारंपरिक साड़ियों में सुसज्जित होकर वृक्ष की जड़ों को दूध और जल से सींचा, आंवले के फलों की मालाओं से उसे सजाया। एक वृद्धा श्रद्धालु ने भावुक स्वर में कहा, "यह फल विष्णु का आशीष है, जो हमें अमरता का वरदान देता है।"

पूजा के दौरान महिलाओं ने पुराण की पंक्तियों का गायन कर भगवान विष्णु का गुणगान किया और अक्षयफल की कामना के साथ धर्म की शाश्वत ज्योति प्रज्वलित की। ओडिशा की राधा-पद परंपरा में यह पर्व प्रेम और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

आंवला का वैज्ञानिक महत्त्व भी उतना ही प्रेरणादायक है—यह फल विटामिन सी का भंडार, इम्यूनिटी का कवच और एंटीऑक्सीडेंट का स्रोत है। आयुर्वेद में इसे अमृत कहा गया है, जो शरीर, मन और पर्यावरण—तीनों का संतुलन बनाए रखता है।

पूजनोपरांत महिलाओं ने वृक्षारोपण कर एकता का संदेश दिया और प्रसाद के रूप में आंवले का सेवन किया। समापन पर गूंज उठा — "जय विष्णु, जय अमर वृक्ष" — मानो भक्ति और विज्ञान के संगम से अमर प्रगति का पथ आलोकित हो उठा।

घाटशिला निर्वाचन में नगद समेत अब तक कुल 2 करोड़ 91 लाख 21हजार रोकड़ा व सामान जप्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर, जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी के निर्देशानुसार विधानसभा उप निर्वाचन-2025 को निष्पक्ष एवं पारदर्शी रूप से संपन्न कराने हेतु जिले में सघन निगरानी अभियान चलाया जा रहा है। निगरानी दलों द्वारा अंतरराज्यीय सीमाओं, चेकपोस्टों एवं विभिन्न थाना क्षेत्रों में वाहनों की जांच एवं सतत कार्रवाई के तहत अब तक बड़ी मात्रा में नकदी, शराब, मादक पदार्थ एवं फ्रीबीज जब्त किए गए हैं।

नकद राशि42 रू लाख 71 हजार रू शराब – 12,837 लीटर (बाजार मूल्य ₹10 लाख 11 हजार रू) ड्रग्स/मादक पदार्थ –5 लाख 10 हजार रू,फ्रीबीज/अन्य सामग्री 2 करोड़ 33 लाख 38 हजार रू,कुल जब्ती2 करोड़ 91 लाख 21 हजार रू। बता दें कि जिले में स्थापित फ्लाइंग स्क्वॉड टीम एफ एस टी, स्थैतिक निगरानी दल एस एस टी, आबकारी विभाग, पुलिस विभाग एवं जिला स्तरीय व्यय निगरानी दल द्वारा संयुक्त रूप से सतत कार्रवाई की जा रही है। आम नागरिकों से अपील की है कि वे निर्वाचन प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले किसी भी अवैध गतिविधि, धन या वस्तु वितरण की सूचना तुरंत सी-विजिल एप के माध्यम से दें। प्रशासन ऐसी सूचनाओं पर त्वरित कार्रवाई करेगा।

सिंगल यूज़ प्लास्टिक के उपयोग और गंदगी फैलाने के खिलाफ नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग की कार्रवाई जारी — एस्टेट विभाग के साथ मिलकर दी गई चेतावनी

अमृतसर, 30 अक्टूबर (साहिल बेरी)

नगर निगम अमृतसर के स्वास्थ्य विभाग की ओर से शहर की सफाई व्यवस्था बनाए रखने के लिए संस्थानों, दुकानदारों और रेहड़ी-फड़ी वालों द्वारा गंदगी फैलाने और सिंगल यूज़ प्लास्टिक के इस्तेमाल के खिलाफ कार्रवाई लगातार जारी है। निगम की विभिन्न टीमों ने अपने-अपने जोनों में जाकर दुकानदारों और रेहड़ी वालों को चेतावनी दी तथा कई स्थानों पर चालान नोटिस भी जारी किए।

इस कार्रवाई में एस्टेट विभाग की टीम भी शामिल रही। इसका मुख्य उद्देश्य पहली और दूसरी चेतावनी के बाद दोषियों के खिलाफ संयुक्त विभागीय कार्रवाई करना है। ए.एम.ओ.एच. डॉ. रमा के दिशा-निर्देशानुसार पश्चिमी जोन के छेहरटा रोड पर सेनेटरी इंस्पेक्टर अशोक कुमार और ब्रह्मदास की टीम ने दुकानदारों और रेहड़ी वालों को सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग न करने और अपने कूड़े को डस्टबिन में डालने की सलाह दी। साथ ही चेतावनी दी गई कि ऐसा न करने पर स्वास्थ्य विभाग और एस्टेट विभाग की ओर से कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इसी प्रकार, उत्तरी जोन के कोर्ट रोड क्षेत्र में स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. योगेश अरोड़ा के निर्देशन में सी.एस.ओ. मलकित सिंह, सेनेटरी इंस्पेक्टर हरिंदरपाल सिंह आदि ने एस्टेट विभाग की टीम के साथ मिलकर फल रेहड़ी वालों को डस्टबिन लगाने और सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग न करने की हिदायत दी। स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. किरण के निर्देशन में मुख्य सेनेटरी इंस्पेक्टर विजय गिल और सेनेटरी इंस्पेक्टर संजीव अरोड़ा ने आई.डी.एच. मार्केट में दुकानदारों को पहली चेतावनी दी कि वे अपना कूड़ा डस्टबिन में डालें और सिंगल यूज़ प्लास्टिक का प्रयोग न करें। दो चेतावनियों के बाद निगम की ओर से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

झामुमो ने सरायकेला में चंपाई, बाबूलाल का पूतला फूंक कर घाटशिला चुनाव पर साधा निशाना

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला: घाटशिला उप चुनाव पूर्व समुचा तीनों सिंहभूम जिला राजनीति बुखार से तप रहा है . एक से बढ़कर एक असरदार फार्मूले देखने को मिल रहे हैं . कल जब सरायकेला भाजपा विधायक को चाईबासा लाठीचार्ज पीड़ितों से मिलने पर चाईबासा पुलिस उन्हें रोक दिया तब उन्होंने वही बयान बाजी कर अपना उद्गार व्यक्त किया था .आज उसका जबाब झारखंड मुक्ति मोर्चा ने सरायकेला गैरेज चौक में आकर दिया .

झामुमो ने कहा आदिवासियों को बरगलाने और दोहरी नीति अपनाने के आरोप में गुरुवार को जिला मुख्यालय के गैरेज चौक में झामुमो द्वारा भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी एवं पूर्व मुख्यमंत्री सह स्थानीय विधायक चंपई सोरेन का पुतला दहन किया गया. झामुमो के जिला अध्यक्ष डॉ शुभेंदु महतो के नेतृत्व में हुए पुतला दहन के दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं ने भाजपा व स्थानीय विधायक के विरोध में जमकर नारेबाजी की.

पुतला दहन के पत्रकार सम्मेलन करते हुए झामुमो जिला अध्यक्ष शुभेंदु महतो ने कहा भारतीय जनता पार्टी झारखंड को अस्थिर करने पर लगी हुई है. उन्होंने कहा भाजपा द्वारा बुलाया गया कोल्हान बंद पूरी तरह से बेअसर और असफल रहा. जनता ने भाजपा के चाल, चरित्र और चेहरे को पहचानते हुए बंद को पूरी तरह नकार दिया. यह इस बात का प्रमाण है कि जनता ने भाजपा की राजनीति को सिरे से ठुकरा दिया. उन्होंने कहा कि भाजपा कोल्हान के शांत वातावरण में जहर घोलकर क्षेत्र की शांति को भंग करना चाहती है. भाजपा चाईबासा के विधायक सह मंत्री दीपक बिरुवा को बदनाम करने की साजिश रच रही है. नो-इंट्री को लेकर हुए आंदोलन में भाजपा के कार्यकर्ताओं ने सुनियोजित तरीके से पत्थरबाजी कर हिंसा फैलाने का कार्य किया. उन्होंने कहा कि यदि भाजपा को नो-इंट्री नीति से वाकई तकलीफ थी तो उन्हें तांबो चौक में चल रहे शांतिपूर्ण आंदोलन में शामिल होकर विरोध प्रदर्शन करना चाहिए था लेकिन भाजपा ने पिछले दरवाजे से आंदोलन को उग्र रूप देने का प्रयास किया जिसके कारण यह घटना हुई.

ईचागढ विधायक सविता महतो ने कहा कि जब जिला प्रशासन अत्यंत संयम और जिम्मेदारी के साथ आंदोलनकारियों से वार्ता कर रहा था तभी भाजपा के सफेदपोश नेताओं ने पत्थरों से पुलिस पर हमला कर स्थिति को बिगाड़ दिया. इसके कारण कई निर्दोष लोग प्रभावित हुए जिसका खामियाजा आम जनता को भुगतना पड़ा. उन्होंने कहा कि भाजपा को घाटशिला उपचुनाव में अपनी हार का पूर्वाभास हो गया है इसलिए वह चाईबासा की घटना को चुनाव से जोड़कर राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश कर रही है लेकिन कोल्हान की जनता भाजपा की इस साजिश को भलीभांति समझ चुकी है और अब ऐसे हथकंडों से धोखा नहीं खाएगी. सरायकेला पुर्व प्रत्याशी गणेश महाली ने कहा कि इस पूरे मामले पर झामुमो और राज्य सरकार गंभीरता से नजर बनाए हुए है. घाटशिला उपचुनाव समाप्त होने के बाद मंत्री दीपक बिरुवा और राज्य सरकार इस विषय पर ठोस निर्णय अवश्य लेंगे. मौके पर गणेश चौधरी, भोला मोहंती, शंभु आचार्य, सौरव साहू, वीरेंद्र प्रधान, अमृत महतो, विशु हेंब्रम, सुधीर महतो, कृष्णा राणा व डब्बा सोरेन समेत अन्य उपस्थित थे.

थैलेसीमिया ग्रस्त बच्चे को एचआईवी खून चढ़ाये जाने के बाद ब्लडबैंक का भयावह सच

स्वस्थ मंत्री इरफान अंसारी पहुंचे चाईबासा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। चाईबासा ब्लडबैंक की उच्चस्तरीय जांच के साथ हर नये तथ्य सामने आ रहे हैं ।अवधी समाप्ति के बाद चल रहा इस ब्लडबैंक से 2023–24 से अब तक 253 ब्लड डोनरों की पहचान की गई है। इनमें से अभी 44 लोगों की सैंपल जांच की गई है। इनमें तीन एचआइवी पॉजिटिव पाए गए हैं। यह बातें चाईबासा सदर अस्पताल में थैलेसीमिया रोग से ग्रसित बच्चों में एचआइवी पाए जाने के मामले की जांच करने पहुंचे झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने कहीं।

उन्होंने कहा कि चाईबासा ब्लड बैंक से ही थैलीसीमिया बीमारी से ग्रसित पांच बच्चों की पहचान एचआइवी पॉजिटिव के रूप में हुई है।

इसे लेकर हमने पूरे राज्य के अस्पतालों में जांच के आदेश दिए हैं। इसमें किसी प्रकार के भी कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। 253 ब्लड डोनरों को फोन कर उनका ब्लड लेकर जांच की जा रही है।

कुछ लोग राज्य से बाहर के भी हैं। 44 लोगों के जांच में तीन लोगों के ब्लड एचआइवी पॉजिटिव पाए गए हैं। उनमें से कुछ के तो पूरे पांच लोगों का परिवार एचआइवी पॉजिटिव हैं।

इनकी जांच की जा रही है। एचआइवी पॉजीटिव पाए गए पांच बच्चों के परिवार को सरकार द्वारा दो-दो लाख रुपये सहायता राशि प्रदान की जा रही है।

पीड़ित बच्चों को दो-दो लाख रुपये आर्थिक सहायता देने की घोषणा के साथ फिर एक बार सभी बच्चों की जांच की जाएगी। बेहतर जांच के बाद भी अगर पॉजिटिव पाए जाते हैं तो इन बच्चों को मैं अपने तरफ से दो-दो लाख रुपये आर्थिक सहायता दूंगा। साथ ही सरकार की ओर से बच्चों का इलाज पूरी तरह मुफ्त किया जाएगा।

राज्य में जांच के आदेश दिए गए हैं। सरकार ने तत्काल ही कार्रवाई करते हुए चाईबासा के सिविल सर्जन और संबंधित पदाधिकारी को निलंबित कर दिया है। जबकि ब्लड बैंक में अनुबंध में काम करने वाले गर्मी को भी सेवा से हटा दिया गया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023